



Tazkera-E-Quadeer

Life History of
 Hazrath Khwaja
 Syed Mohammed Badshah Quadri
 Chisty Yamani Quadeer(R.A.)
 Author of Gulzar-E-Quadeer
 Halkatta Shareef

Author

Sahebzada, Jansheen-E-Quadeer,
 Khwaja Syed Ibrahim Shah Quadri
 Chisty Yamani Banda Nawazi
 Saheb Quadeeri

Address

ASTANA-E-QUADEERI
 Halkatta Shareef, Near Wadi Jn.
 Dist. Gulbarga Shareef-585 225
 Phone: 08476 -202031



तज़क़ेरये क़दीर

हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह क़ादरी
 चिश्ती, यमनी, क़दीर (रह.)
 मुसन्नफ़ (गुलज़ारेक़दीर) हलकट्टा शरीफ़ के
 हालाते ज़िन्दगी व ख़िदमाते दीनी



-मुरत्तीब-

साहिबज़ादा जानशीने हज़रते क़दीर
 ख़्वाजा सय्यद इब्नाहीम शाह क़ादरी, चिश्ती, यमनी, बंदानवाज़ी

साहिब क़दीरी

आस्तानये क़दीरी, हलकट्ट शरीफ़, वाडी जंक्शन, जिला गुलबर्गा शरीफ़ (कर्नाटक)

बिस्मिल्ला हिराहमा निरहीम

हुवल कदीर

बज़ाकेश्ये

क़दीर (रह.)

हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद
बादशाह क़ादरी, चिश्ती, यमज़ी,
क़दीर (रह.)

मुसनिफ़ गुलज़ारे क़दीर हलकट्टा शरीफ़
हालाते ज़िन्दगी व
ख़िदमाते दीनी

आस्तानये
क़दीरी

हलकट्टा शरीफ़

निज़्द वाडी जंक्शन
ज़िला गुलबर्गा
शरीफ़

- मुरत्तीब -

साहिबज़ादा जानशीने हज़रते क़दीर (रह.) ख़्वाजा
सय्यद इब्राहीम शाह क़ादरी, चिश्ती, यमज़ी, बंदानवाज़ी

साहिब क़दीरी

आस्तानये क़दीरी, हलकट्टा शरीफ़, वाडी जंक्शन, ज़िला गुलबर्गा शरीफ़ (कर्नाटक)

तज़केरये कदीर (रह.)

(हिंदी एडिशन)

तादाद दो हजार

सने तबाअत माहे मोहर्रम 1426 हि. मुताबिक फरवरी 2005
(मतबुआ)

हदिया --- एक सौ रुपये Rs. 100/-
० मिलने के पते ०

□ आस्तानये कदीरी

हलकट्टा शरीफ निज्द वाड़ी जंक्शन,
ज़िला गुलबर्गा शरीफ.
फोन नं. - (08476) 202031.

□ खानकाये कदीरी

बेरून फतेह दरवाजा कदीरिया 19.2.573/2/A, हैद्राबाद.
फोन नं. (040) 24513880, हैद्राबाद.

□ काशानये बूतुराब

निज्द जामा मस्जिद, जहाँनुमा, हैद्राबाद.
फोन नं. (040) 24464548.

□ गुलज़ार बेकरी

नूरखान बाजार, चौराहा, हैद्राबाद.
फोन नं. (040) 24563498.



ترجمہ عربی

تجزیہ افکار "طفرہ پیغمبر" مرتبہ: حضرت قدیر قادریؒ ۱۹۵۷ء مرسلہ اقطار عالم اسلام 1940



Hazrath Khwaja Syed Mohammed Badshah Quadri, Chisty,
Yamani, Quadeer (R.A.) Halkatta Shareef

नह्यदोह नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम तज़केरये कदीर (रह.) और अक़ीदत के हाथ

गुलज़ारे कदीर के बानी व निगारों पर तर्कित रहेबो शरीयत सरचश्मये बसीरत हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी, कदीर (रह.) हलक़्ज़ा शरीफ़से फ़ैज़ेबाब होनेवाले बसीतर हलक़्ज़ये सिलसिलये कदीरियाके वाबस्तगान. अपने इस्लाम, ईसा और इस्के कदीरमें, माज़ी ता हाल अपनी एक तुमाय़ी पहचान रखते हैं. यक़ीनन् तज़केरये कदीरमें इन जानिसारान सिलसिलेकी याद हकीकतन शादानीये गुलज़ारे कदीर है.

ज़र्ज़र् तोरे ज़ल्मोंको दिख़ा देता है
पता पता तेरे होनेका पता देता है

हासिले ज़ीस्त तेरी याद तेरा ज़िक्र रहा
तेरा दीवाना ज़मानेको झुला देता है

शम्मा क्या चीज़ है परवानाजिगरसे पूछो
आप अपनेकोभी परवाना जला देता है

साहिबे दिव जो रिन्दे मय मयझाना बने
अपनी हर शौंसको पैमाना बना देता है

(साहिब कदीरी)

बसदअल्लाह तज़केरये कदीर ब ज़बान उर्दू पहली बार माहे मोहर्रम 1420 हि. मुताबिक़ एप्रिल 1999 इ. में शाय़ा हुयी. विरादें तर्कित जनाब मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ कादरी हैद्राबादी, जनाब जाविरशाह कादरी हैद्राबादी, साहिबज़ादा ख़्वाजा सय्यद अब्दुलराब शाह कादरी, चिश्ती, यमनी, तुराब, कदीरीने ख़िदमात अन्जाम दीं. अहेले कदरने क़बूल फ़रमाया. उसके बाद बज़बाने मलियालम् सन 2001 इ. उसके बाद बज़बाने कनड़ी सन 2004 इ. में शाय़ा हुयी. जिसको जनाब अब्दुल रहेमान कादरी केरलावाले मुक़ीम बंगलोरने बसद इस्लाम छपवाया. अल्लाह पाक बज़ाये ख़ैरसे नवाज़े ! आमीन !

अवामुन्नासका इसार और सिलसिलये कदीरियाके फैलाव इलाकाबारी चाहतके पेशेनज़र बज़बाने हिंदी तज़केरये कदीर की तबाअतकी ज़रूरत महसूस की गयी. सिलसिलये कदीरियाकी हरदिल अज़ीज़ शम्सियत हुज़र्गे मोहतरम हज़रत महमूद अब्दुल करीम कादरी अल्क़दीरी, पल्भालूकर पाली, महाराष्ट्राके

खिदमात हजरते कदीरकी हयातहीसे काबिले कबुल रहे. सभी अहेले सिलसिला पालीवाले महेमूदभाई के नामसे जानते हैं. पालीके अनमोल सुजर्ग महेमूदभाई कादरीका विसाल 27 जिलहन्जा 1424 हि. को हुवा. खादिमको दीदारका शर्फ हासिल रहा. आपके अहेलिया मोहतरमा और फरजदान रफीक अहेमद कादरी, बशीर अहेमद कादरी और हमशीर गान आजभी अक्रीदत व मोहोब्बते कदीरके मजहर हैं. चंद माह हुये जब खादिमको पाली जानेका मौका मिला. अहेलिया हजरत महेमूदसाहब कादरी (रह.) पालीने नजरे अक्रीदत बराये ईसाल महेमूदसाहब कादरी पेश फर्माये जो एक अमानते अक्रीदत थी. मेरे साहेबजादा ख्वाजा सय्यद अब्दुराब शाह कादरी, चिश्ती, यमनी, तुराब कदीरी साथ थे. साहेबजादेने राय दी, इस नज्जको हिंदी तज्जकेरये कदीरकी तबाअतमें काम लिया जाये, ताके जिक्रे अवलिया, जिक्रे पीर, जिक्रे सलासिल मोखिबे ईसाले सवाब बन जाये! बस यही तज्जकेरये कदीर अक्रीदतके हाथ हासिले कलाम है. हजरते ख्वाजा शीक साहब हैद्राबादी फर्माते हैं.

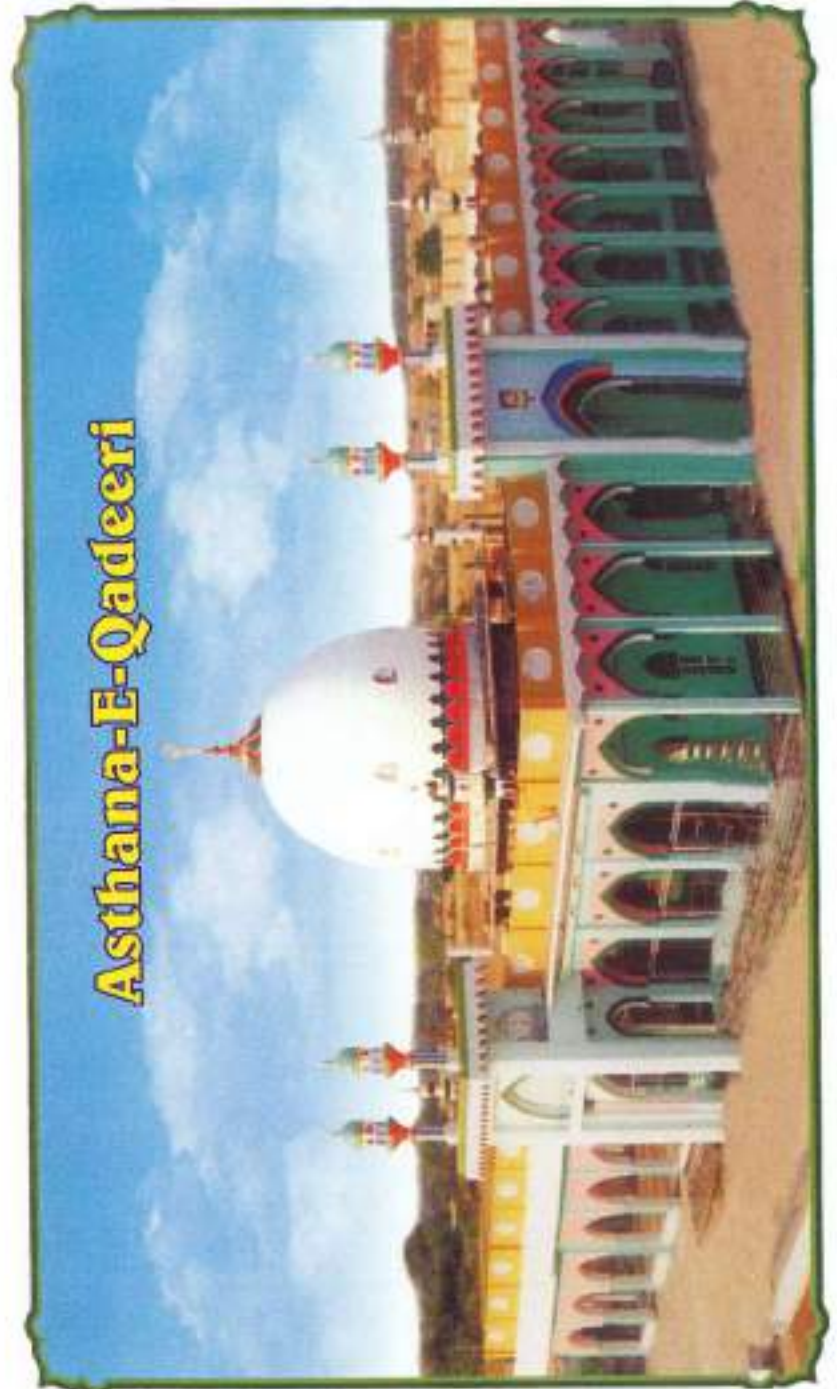
गहेरा है रक़्त रुहसे कितना कदीरका
जारी बफ़स् बफ़स्में है कलमा कदीरका
एहसान ज़िंदगीपे है क्या क्या कदीरका
सब कुछ सूटा ख़याल व सूटा कदीरका
करता है कोशिशोपे बड़ा बाज़ आदमी
करता है काम असलमें मन्शा कदीरका
अंदाज़ मोलते हैं बज़र मोलती हैं शौक
सुपटा कहीं है देखनेवाला कदीरका

अल्लाहपाक निस्बतोंका व वसीलये पीराने सलासिल बेहतर सिला व अजर अता फर्माये! आमीन!

प्रोफ़ेसर जनाब अन्वर कादरी साहब बल्द हजरत साहब कादरी शोलापूर व जनाब मोहम्मद इक़्बाल कादरीने बज़ारिये कम्प्युटर तज्जकेरये कदीरको हिन्दीमें तरतीब दिया, जो ज़ीनते मुताला है. खादिम दुवागो है! ममनून व मशकूर है!

दुवागो खाकपाये कदीर
साहेबजादा ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह कादरी,
चिश्ती, यमनी, बंदानवाज़ी, साहिब कदीरी.
हलकहा शरीफ़.

Asthana-E-Qadeeri



Halkatta shareef, Wadi Jn., Dist. Gulbarga, (K.S.)



बिस्मिल्ला हिराहमा निरहीम
अल् हम्दो लिल्लाहे रब्बिल् आलमीन ○ वल् आकेबतुल्लील्
मुत्तकीन वस्सलातो वस्सलामो अला रसूलेही मोहम्मदीव व
आलेही वअसहाबेही अजमईन ○

फज़ल व शाबे किब्रियाकी बात है
निस्बते खैरुल् वराकी बात है
ग़ौस व ख़ुदाज़के अताकी बात है
दमबदम अहेले वफ़ाकी बात है

पेशे लपज़

या अरयुहल्लजीना आमनुत्तकुल्लाहे व कून
मअस्सादेकीन ○ बफ़ल्ले ताला- हुज़ूर अक़म हज़रत मोहम्मद मुस्ताफ़ा
स्वल्लल्लाहु अलेही वसल्लम वजहे राख़लीके कायनात हैं, हज़रत आदम
अलैहिस् सलामसे लेकर तमाम अंबियाये क़राम सरकारे दोआलम स्वाल्लल्लाहु
अलेहे वसल्लमके रसूले बरहक़ रहमतुल्लिल् आलमीन होनेके गवाह हैं, वादये
मिसाक़ जिसका सबूत है।

ख़ुशाबख़्ती के हम उम्मत मोहम्मदियामें शामिल हैं और हमारे लिये इत्तरार व
तस्दीक़की दलील कलेमये तय्यबा ला इलाहा इल्लल्लाहु
मोहम्मदूरसूलुल्लाहे ○ है जो पैग़ाम हयात व बाइसे नजात है, एक मोमिन
के लिए सरमायये हयात ईमानकी हिफ़ाज़त है, अक्कीदेका अिस्तेहक़ाम है,
शरिअते मुताहराकी पाबन्दी राहे तरीक़की आरास्तागी है, जिससे ज़ल्मये हक़ीक़त
रुनुमा होता है, यही मारेफ़त पर्दा कुशाये वहेदत है, इसीसे तस्कीने विसाल है और
ये निज़ाम- इन्नलजीना युबाये ऊनका इन्नमा युबाये
ऊनल्लाहा यदुल्लाहे फ़ौका अैदीहिम् फ़मन् नक़सा फ़ईन्नमा
यनकोसो अला नफ़सेही वमन अवफ़ा बेमा अहदल्लाहे अलैहे
फ़समुतीहे अजरन अज़ीमा ○ के तहत कायम व दायम है, अंबियाये
मुर्सलीन, ज़हुरे रहमतुल्लिल् आलमीन, असहाबे सादेकीन, तबआ ताबेईन,
अवलियाये कामेलीन, मुर्शिदाने वासेलीन, मक़बूलाने झुमरये आरेफीन, रहेबराने
मुत्तकीनके सिलसिलये अन्वारसे मुशरफ़ होनेवालेही सच्चेोंके साथ हैं और इन्ही

नफूस कुदसियाके जुमरये फैजमें शामिल होनाही मकबूलियतकी दलील है।

सूफीये कामिल, रहेबरे शरीअत, रहेनुमाये तरीकत, दाईये हक्रीकत, नुक्ता शनासे मारेफत, नूर निगाहे करीम वालेदी मुशिदी हजरत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी, कदीर (रह.) का तजकेरा करने और लिखनेका शर्क मुझ फकीरके हिस्सेमें आया, ये खाकसारके लिये सआदते अजीम है। इल्मे मक्तबसे इल्मे सोहबत असर पजीर होता है। तकमील गुलामीही मन्जिले मकसुद है। राजी व रजा रहेनेहीमें कबूलियत है। इल्मे मक्तब नामये शरीअत है, इल्मे सोहबत, रहे तरीकत, अला व नजर की बात है।

ये फैजाने नजर था या के मक्तबकी करागत थी

सिखाये किसने इस्माईलको आवाबे फरखन्दी (इस्बाल)

बात वाजे हो जाती है, दर्स मिलता है, निस्बत व अता असले जीस्त है। बस जोभी बात तहेरीरी या तकरीरी होगी वो फैजाने नजरहीकी होगी। उसीको मशअले राह बनायेंगे और यही निस्बत हमारे लिये वजहे तारूफ व इम्तियाज है। एक मुरीदको अपने पीरकी तौसीफसे बढ़कर क्या चीज बेहतर हो सकती है। नस्बी निस्बत खुश निस्बत लेकिन तकाजये गुलामीये निस्बत कुछ इस तरहा दर्स देती है।

बंदये इश्क धुवी तरके बसब कुब जामी

के तरी राह फलों इब्ने फलों चीजे बीरत (जामी)

एक असंये दर्राज से वाबस्तगाने सिलसिलये कदीरिया अहेले अक्रीदत और फिदायाने हजरते कदीर (रह.) का इसरर रहा के मरकजे सिलसिलये कदीरिया हजरते कदीर (रह.) के हालाते जिन्दगी खिदमाते दीनी तालिमात पर रोशनी डाली जाये ताके अहेले सिलसिला अवामुन्नास कद्रे शनास इस्तेफादा कर सकें, दीरे हाजिरमें सरजमीने दकनही नहीं बल्के हिन्दुस्तानके कई शहरों कस्बोंमें और बेरुने हिंदभी हजरते कदीर (रह.) का ताअरूफ और शोहरत आम है।

ये यकीनन ख तबारक ताला का अहेसाने अजीम है। हुजूरे अकरम (स्व.) की इत्तेबाका तुफेल- मौसुस्सकलैन आले हसनैन कुल्बे रब्बानी महिबूबे सुबहानी हजरत सय्यदना अशशैख अब्दुल कादर जीलानी कुदूस सिरहुलअजीज के सिलसिलये फैजसे जुमराह कादरियामें शामिल होनेकी बरकत और ख्वाजाये ख्वाजगाने चिश्त हजरत ख्वाजा मुइनोद्दीन चिश्ती हसन सन्जरी अजमेरी कुदूस सिरहुलअजीजके सिलसिलये चिश्तियासे वाबस्तगी जो सिलसिला दर सिलसिला व राहे तरबियत हजरते सय्यद शाह नबी मोहियोद्दीन कादरी सिबातुल इलाही,

परिशाही रायचूरी व अताये बुजर्गे नेमत हजरत शेख करीमुल्लाह शाह कादरी चिश्ती मुइनाबादी (चिटगुप्पा शरीफ) के निगाहे फैजका असर है के हजरते कदीर (रह.) को मरकजे निगाह बना कर दर्जये मकबूलियत अता फरमाया। हजरते कदीर (रह.) के अखलाक हमीदाह, सादगी, तबकल और अपने पीराने उज्जामसे नेमत जिफ्र व फिफ्र पाने और पहुँचानेका जज्बये इस्ही वुसअते सिलसिला है। मौजे हलकड़ा हजरते कदीर (रह.) के खिदमातसे हलकड़ा शरीफ कहेलाता है। जिसके तफसीलात पेश किये जायेगे। दीरे साबिकसे लेकर दीरे हाजिर, आमद, कियाम, विसाल और उसें कदीर (रह.) तक एक जायजा पेश करना खादिम केलिये जरूरी अज हद जरूरी मालुम हुवा। चुँ के सिलसिलये कदीरियासे कसीर खुलफा वाबस्तगी रखते हैं। हर एक अपना ताअरूफ हलकड़ा शरीफकी निस्बतसे करवाता है। बसा अवकात सोहबत व कुर्बत व नजरियातके महेदूद होजाने की वजेह हकायक कदीरके वाजेह करनेमें तकल्लुफातभी दर पेश हो जाते हैं।

इसलिये खादिमने महेसूस किया के क्यों न वालेदी मुशिदी हजरते कदीर (रह.) की तस्नीफ गुलजारे कदीरको सामने रखते हुवे और खुद वालिदे गरामी के जबाने फैज रसोंसे सुने हुवे और देखे हुवे हालातको एकबार तजकेरा- ए- कदीरमें जमा करदियें जायें ताके हजरते कदीर (रह.) के हालाते जिन्दगी, खिदमाते दीनी, और तालिमात, तहेक्रीके कलम- ए- तय्यबा, जरूरत बैअत, निजामे सलासिल, मुकामे सुफी, मरातिब मोमिन, फैजान सलासिलके जरिये हमारे कल्बका इत्मिनान बन जाये और हमें राहे यकीन हासिल होजाये। अला बे जिकरिल्लाहे तत्तमइन्नल् कुल्ब ○ अल्लाहके जिक्रके बाँर कल्बको सुफून नहीं दरअसल मकसदे हयात इत्तेबाये नबवी (स्व.)के कलमतुल हकका इकरार व तस्दीक है।

कालन्नबी (स्व.) मनकाला ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदूर रसूलुल्लाहे खालेसन् दरखलल् जन्नता बिला हिसाब ○ फरमाया रसूले मकबूल (स्व.)ने जिसने कहा ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदूर रसूलुल्लाहे खालेसन् ○ (पाक रहा शिर्क जली व खफ्रीसे) वो दाखिल होगा जन्नत में, बाँर हिसाब के।

बात वाजेह हो जाती है के जब मोमिन इस दावतसे मुशरफ होता है, तो दाई बनकर ज़मानेकी रहेनुमाई करता है। तारीख गवाह है के हर दौरमें जहाँ उल्माने अपने अपने खिदमातको पेश किया, वहीं मशायख सुफियाने इस्लाहे बातिनको अपना नसबुलअैन बनाया इसतरहा जाहिर व बातिन दोनों आरस्ता होते गये

अगरचे के शाहाने वक्त अपने दौर इन्कलाबके दामनमें पैवस्त हो गये मगर अवलिया अल्लाह की खान्कायें आजभी सलामत हैं और रहेगी. दर्स व तदरीस के अन्दाज़ गोंके अपनी अपनी नोइयत के सही लेकिन रुहे हिदायत नहीं बदलती बस अक़ीदा सलामत है, तो ईमान सलामत है.

हर ग़िज़ नगीरदाके विलख ज़िन्दा शुद् ब इश्क़

सिबतस्त बर ज़रीदये आलम दवामे मा

मौला ताअला जब कभी अपने बन्दे पर फ़जल फ़रमाते हैं तो महेबूब व मक़बूल बना देते हैं और ऐसी ज़िन्दगी बाख़शते हैं के लिबासे अन्सरी बक्राये दवाम पा जाती है. हज़रते कदीर (रह.) का सादाते हस्नी यमनी घरानेसे ताल्लुक है. ज़िले रायचूर आपका आबाई बतन है. आपके वालिदे बुजर्ग़वार हज़रत सय्यद अब्दुरहिमान कादरी यमनी हैं. ज़दे आला सय्यद शाह मोहम्मद अब्दुराब यमनी कादरी नवरुल्लाह मरकदहू हैं.

बचपनहीसे आप नेक सिफ़त, पाक बातिन, हामिले शरीअत, ज़ौके तरीक़तसे मुशरफ़ रहे. आपकी तरबियत शेखे अब्बलकी सोहबते मुबारका ऐसी मुतबारिक़ (हौके मुराकेबा व मुजाहेदाके लतायफ़ खुलते गये.

इल्म की हवसे परे बन्दये मोमिनके लिखे

लज़ज़ते शौक़भी हैं नेमते दीदार भी हैं (इक़बाल)

बन्दये मोमिन और नेमते दीदारके तकाज़ेने हज़रते कदीर (रह.) को 24 साल की उमरमें पीरे तरीक़त रहेबरे मारिफ़त हज़रत शौख़ करीमुल्लाह शाह कादरी चिश्ती मुइनाबादीके दामने करमसे वाबस्ता कर दिया.

दीदये दिल को मर्यासर हो न जब तक रोशनी

है फ़रोरो इल्मो वाबिश दीरनी ही दीरनी

फिर रहा है कुबकु वयों ऐ असीरे आतही

अपने मन् में डुब कर पाजा सुराणे ज़िन्दगी

यू अजर मेरा नहीं बग़टा न बन अपना तो बन

दिलको जब तक आरजूये इश्क़ तरमाती नहीं

ज़िन्दगी तक़मीलकी सूरत कभी पाटी नहीं

यूँ बा आसानी किसीके हाथ ये आटी नहीं

मन की दौलत हाथ आटी है तो फिर जाती नहीं

तब की दौलत ख़ौं है आटा है ख़न जाता है ख़न (इक़बाल)

जब रसूज़ हाये मारेफ़त फ़जले करीमीसे हज़रते कदीर (रह.) के दिलपर पर्दा

कुरांद हुये तो हज़रत शेख़ करीमुल्लाह शाह कादरी, चिश्तीने 24 ज़मादिल आख़र 1348 हिजरीको ख़िलाफ़तसे सरफ़राज़ फ़रमाया. हुक्मे पीरपर आप मामूर ख़िदमते खल्क रहे. आपका दौर ख़िलाफ़त 51 साल गुज़रा. आपकी तबियतमें तहेक्कीक़ व जिद्दा फ़िक्को यक़ीनके दरिया मौजेज़न थे.

सनय रहूम आयातेना फ़िल् आफ़ाक़े व फ़ी अन्फ़ुसे हिम् हत्ता
यतबरयना लहूम अन्नहुल् हवको अवलम् यवफ़ बेरख़बेका
इन्नह अला कुल्ले बैडन् सहीद ० अला इन्नहूम फ़ी मिर्यति
म्मिल्लेकाए रखेहिम् अला इन्नह बेकुल्ले सौईम्मोहीत ०

(पाा 25 हामिम सबदा आयात 52 वा 54)

की रोशनीमें 1940 ई. में एक तोगरये पचरंगी मुर्तब किया और 1951 ई. में इफ़ानी तालिमात, तशरीहात कलेमये तय्यबाके तहेत एक किताब गुलज़ारे कदीर तहेरीर फ़रमाई. 1956 ई. को दावते फ़िक्के उन्वानसे तोगरा पचरंगीको अक़ताये आलमके 178 मुमालिकमें पेश किया. जिसका मक़सद यही है के अपने आपको जाने ख़ालिकको पहेचाने! अमन व सलामतीकी राह इख़्तियार करें. दिल ज़िक़े इलाहीमें मशगूल हों!

बस इसी ख़िदमतको अन्जाम देते हुये 13 मोहर्रम 1399 हि. मुताबिक़ 14 दिसंबर 1978 ई. बरोज़ जुमेरात ब-वक्त फ़जर आपने दाईये अज़लको लबैक कहा. लेकिन दर्स कदीर- दावते कदीर- फैज़ाने कदीरकी सदाये हक़ यही है-

सुप करभी हमने आपसे पर्दा नहीं किया

सौंसोभे ज़िक़ बनके सदा बोलते हैं हम (साहेब कदीरी)

बहन्दअल्लाह बलुत्के करीमी सिलसिला दर्राज़ रहा. कसीर खुलफ़ाये कार गुज़ार थे और आजभी हैं. दुवा यही है के मौला ताला हमें सही मानामें हिदायत कदीर (रह.)को समझनेवाला बना! हुज़ूरे अकरम (स्व.) की खुशानूदी हासिल करनेवाला बना! अवलियाये करामके नक़्शे कदमपर चलनेवाला बना! शरीअते हक़कापर कायम रहेनेवाला बना! वालिदे बुजर्ग़वार हज़रते कदीर (रह.) उल्माके कदरदौ, मशायख़ व फ़ुकराके दिलनवाज़, मुरीदीनके मुशफ़िक़् बुजर्ग़ानि दीनकी बारागाहोंपर हाज़रीके दिलदादाह ख़ुद हाज़िर होते और अपने मुरीदीनके हमराह हाज़रीका शर्फ़ हासिल करते. जिसके तफ़्सीलात अहेले अक़ादत मुलाहेज़ा फ़रमायेंगे. जिस किसी कोभी हज़रते कदीर (रह.) से फ़ैज़े सोहबत व कुर्बत रही वो बख़ूबी जानता है. हक़ीक़तन ये पीराने सलासिलका फ़ैज़ही है और

हज़रते कदीर (रह.) की अपने कदवाने अक़ीदत वाबस्तागीका सबूतही है के आस्ताने कदीरी हलकट्टा शरीफ़ मरजये ख़लायक है.

21वा उसै कदीर मज़हरे अक़ीदत है. ख़ादिमका तो यकीन है के मशायख़े उज़्जाम, सज्जादगाने ज़ी अहेतेराम, उल्मायेकरामकी शफ़वक़त है, बुर्जगोंका कदम रंज फ़रमाना मौज़िबे बरकात है, जलसये अज़मतो अवलिया मौज़िबे फ़ैज़ान है. अहेतेमामे मुशायरा, नात व मनक़बत सब बाइसे ख़ैर है.

आज भी अहेले दक्कीको मील रही है ताज़गी
ह्वाजये सय्यद मोहम्मद बादशाहे कादरी
एक कदीरी शम्मासे कितनोंने पाटी रोशनी
अहेले बिस्बत आपको भुले न भुलेंगे कभी (साहेब कदीरी)

मोहबते कदीरसे हर दिल मुतासर रहा. सदाये दिल ज़बाने शाहीनसे यूँ निकली—

शाहीन पीरही बही मौज़ाप तै कदीर
में कैसे भूल जाऊँ मोहब्बत कदीरकी
(साबिर तवक्कली शाहीन)

हज़रत ह्वाजा शौक साहबने कदीर शनासीको कुछ इसतरहा पेश किया है—

हर सांस ज़िन्दगीकी बराये कदीर है
जो कुछ है अपने पास उठाये कदीर है
दौलतभी रखके लोम सुकूँ आशना नही
कम्बलमें अपनी नस्त लदाये कदीर है
हायल हों शौक राहमें कितनेही फ़ासले
मन्ज़िल बज़रकी जलवा सराये कदीर है

हज़रत साबिर शाहबादीने फ़रमाया था—

पा बरहबाने झार हटाये हैं रातभर
अहेसौं हैं सुबहे इश्क़पे शामे कदीरका

मौलाना हैरत निज़ामी इमाम व ख़तीब ज़ामे मस्जिद बाड़ी बंक्शन जिनकी इक्तेदामे हज़रते कदीरने कई नमाज़ें अदा कीं, महेफ़िले कदीरमें अक्सर हैरत साहब शिरक़त फ़रमाते. यादे कदीरको मौलाना मोहतरमने इस तरहा निभाया—

इश्क़ व इरफ़ाँका समन्दर अबभी हलकट्टेमें है
क्या हयात अफ़रोज़ मन्ज़र अबभी हलकट्टेमें है
बारहा हैरतका श्रुतबा सुनके जिसने दी दुवा
कदवाने अहेले बिम्बर अबभी हलकट्टेमें है

बहर सूत

अहेले नज़रबे देखी हकीकत कदीरकी
अल्लाहसे मिलाटी है बिस्बत कदीरकी
हैं ग़ज़ेबश्श बन्दानवाज़ो वतनका फ़ैज़
लुटफ़े करीमसे हुई शोहरत कदीरकी (साहेब कदीरी)

तज़केरये कदीरकी इशाअतमें जहाँ अहेले सिलसिलाने अपनी नेक तमन्नाओं व दुवावोंसे नवाज़ा, वहीं दामे दिरमे सुखने भाई अब्दुल रहेमान कादरी केरलावाले मुक़ीम बेंगलोरने कदम कदम पे साथ निभाया.

साहेबज़ादा सय्यद अब्दुराब शाह, कादरी, यमनीने अपने दादा बुर्जक़े खिदमातसे इस्तेफ़ादा किया ! तज़केरये कदीरमें मावेनत की !

बिरादरे तरीक़ मोहतरम मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ कादरी हैदराबादीने मुफ़ीद मशवरोसे नवाज़ा ! तरतीब तज़इन बिम्मेदारी संभाली. ख़ादिम तमाम मोहसेनीनका मशकूर है, दुवागो है. मौला ताला उन्हें अपने फ़ैज़ाने करमसे नवाज़े आमीन !

खाकपाये कदीर

साहेबज़ादा जानशिनै हज़रते कदीर, ह्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह कादरी, चिश्ती, यमनी, बन्दानवाज़ी साहेब कदीरी हलकट्टा शरीफ़.



تذکرہ قدح



حضرت خواجہ شمس الدین محمد بادشاہ قادیانی پشیمانی تھیکہ شریف

1940



1961

حضرت خواجہ سید محمد بادشاہ قادری چشتی عینی قدس سرہ
ملک شریف

बिस्मिल्ला हिराहमा निरहीम तज्जकेरये कदीर (रह.)

गीत कर सुधको जो सारा जहाँ जाबाब करते हैं
हम ऐसे बाख्शुदा अहेले वफाकी याद करते हैं

सर ज़मीने दकनकी तारीख अवलियाये क़रामके अन्वार व फैज़ानसे लम्बरेज है. मोलातालाने अपने फज़लो करमसे अपने महेबूबीन व मकरबीनको अपने मन्शाके तहेत सिलसिला ब सिलसिला जब चाहा, जहाँ चाहा, वबूद अता फ़रमा कर हिदायत दी ! और हिदायत देनेवाला बनाया !

ज़िला रायचूर हैदराबाद दकनके अज़लामें नुमाया मुक़ाम रखता था, जो आज कर्नाटकका हिस्सा है. हज़रत ख़्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी, कदीर (रह.) अल्मार्क़ ब (हलकड़ावाले साहेब) ज़िला रायचूरके मुतवतीन है.

हज़रते कदीर (रह.) माहे ज़िलहज्जा सुबहा सादिक हजे अक़बरेके दिन बरोज़ जुमा 1324 हि. मुताबिक 1903 ई. को सादाते हस्नी, यमनी घरानेमें पैदा हुये. आपके वालिद हज़रत सय्यद अब्दुल रहेमान कादरी यमनी (रह.) और ज़दे आला हज़रत सय्यद शाह मोहम्मद अब्दुलराब कादरी यमनी हैं. वालेदा माजिदा हज़रता आमीना बीबी उर्फ़ ख़्वाजाबी साहेबा हैं. हज़रत मोहम्मद शाह अली साहेब (रह.), हज़रत कदीर (रह.) के नाना होते हैं. हज़रते कदीरके दादी साहेबाने आपकी क़िलादतसे क़ल्ल ख़्वाब देखा था.

अल्लाहके फ़ज़लो करमसे इसी रोशन माहोलमें आपकी पैदाईश हुई और आपके नाना हज़रतने आपका नाम सय्यद मोहम्मद यमनी रखा. नन्हिहाल और दादियाल दोनो ख़ानदान अन्दरोनी क़िलामें आबाद हैं, जो वर्सी मदरसा बड़ा घर के नामसे मौसूम है. हज़रते कदीर (रह.)के पाँच भाई दो बहिने थीं. आपकी तालीम व तरबियत रायचूरहीमें हुई.

बचपनहीसे आप नेक सीरत, बाअख़लाक़, पाबंद शरीअत, ज़ीके तरीक़तके दिलदादा रहे ! मशायख़ घरानेके फैज़ो बरकातसे मुशरफ़ रहे. ख़ुशाबख़्तीके तेरा (13), चौदा (14) सालकी उमरमें आप अपने ताये ताया हज़रत सय्यद शाह नबी मोहियोदीन कादरी, चिश्ती साहेब क़िबलाकी सोहबते आलियामें रहेने लगे. हस्बे तोक़ीक़ ख़िदमत अन्ज़ाम देते. पाबंदी अवकात और हुस्ने अह्लाक़ पर तवज्जा

शेख हुई और आपको पीर मुर्शिद क़िबलाने हलक़ने इरादतमें शामिल कर लिया. पीर तरीक़तकी नज़रे शफ़क़तसे रास्ते खुलते गये. दुवायें शामिले हाल रहीं, और हज़रतहीकी सरपरस्तीमें ज़िला रायचूरहीके मारूफ़ घरानेके बुज़र्ग़ सय्यद इब्राहीम हसन सेगेदार साहबकी दुख़्तर सय्यदा मरीयमबीबी साहेबासे आपका अक़द बरोज़ जुमा तक्मील पाया. व फ़ज़ले ताला दीन व दुनिया आबाद हुई.

हज़रते क़दीरके तायरे भाईयोंका कसीर ख़ानदान आजभी अन्दरूनी क़िला रायचूरमें आबाद है. भाई हज़रत सय्यद शाह इब्राहीम कादरी, यमनी, साहेबे ख़िलाफ़त थे. जो हज़रत सय्यद शाह नबी मोहियोद्दीन कादरी, चिश्ती, क़िबला (रह.) के दामाद थे. जिनके साहबज़ादा हज़रत सय्यद शाह आमीनोद्दीन यमनी अलमारूफ़ व पीर पाशा साहब हैं. आपके वालिद बुज़र्ग़वारके इल्मी ख़िदमातसे सभी रुशनास हैं. आपका शेरो अदबमें ख़ासा मुक़ाम था. यमनी तख़ल्लुस फ़रमाते थे. बहरे सूत मशायख़ घरानेकी तरबियत और निगाहे मुर्शिदीने हज़रत क़दीरके रोज़ शबको पैरवी सुन्नत, ज़ौके तरीक़तसे आरस्ता कर दिया. व फ़ज़ले ताला आपको साहेबज़ादा कुलौ तक्ल्लुद हुये. मज़ी मौला कमसिनीहीमें विसाल फ़रमा गये. इसके बाद दुख़्तर तक्ल्लुद हुयीं, जिनका नाम हज़रत पीर व मुर्शिद क़िबलाने सय्यदा हाफ़ेज़ाबीबी रखा जो नेक सीरत व चालिया गुज़रीं.

मुक़ामे फ़िक्र हैं पैमाईशे ज़मी व मक़ी

मुक़ामे ज़िक्र हैं सुबहाबा रब्बीयुल ज़ाला (इस्बाल)

हज़रते क़दीर अपने मशालकी तक्मीलके साथ हुकूकुलइबादकोभी कमा हक्कहू पूरा करते रहे. दौराने मुलाज़िमत आप रायचूरसे गुलबर्गा शरीफ़ तशरीफ़ लाये. ज़िक्र व फ़िक्र हिदायते पीर कायम व दायम है. हस्बे मामुलात आप नमाज़े इशा बारगाहे हज़रत ख़्वाजा बन्दानवाज़ (रह.)में अदा करते. वहीं मुराक़िब रहते. वाज़ अवक़ात नमाज़े फ़ज़र दगाँ हज़रत रुकनोद्दीन तोला (रह.)में अदा करते. दिगर अवक़ात अपने फ़रायज़े दुनियावीमें बसर करते. आप मुहल्ला हप्त गुम्बद शेख़ इमाम साहब मनियारके मक़ानमें रहा करते थे. मौसूफ़ एक बुज़र्ग़के मुरीद थे. जिनका इस्मे गिरामी हज़रत शेख़ करीमुल्ला शाह कादरी चिश्ती है. लुत्फ़े करीमानाके एक दिन हज़रतसे आपकी मुलाक़ात हुयी. हज़रतने नाम दर्शाफ़्त किया. आपने कहा- सय्यद मोहम्मद यमनी! फ़ौरन हज़रत उठे और अपने बाबू बिठलाया. अहेतेरामे सादात हज़रते क़दीर (रह.)के दिलमें घर कर गया. दूसरे साल हज़रत शेख़ फिर तशरीफ़ लाये. हज़रतने आपको याद फ़रमाया. मुतबन्ना होकर फ़रमाने लगे- इकरारुम बिल्लिसान व तस्दीकुम



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Babe Quadeer, Halkatta Shareef



Urs-E-Quadeer, Halkatta Shareef



The Holy Urs-E-Quadeer
Sandal Carrying by
Special Train
From Hyderabad to Wadi



Sandal Carrying by Special Train From Hyderabad to Wadi



Special Train Sandal

बिल्कुल के मुतालिक क्या खियाल है? फिर कलेमा पढ़नेका मुतालेबा किया. आपने कलमये तय्यबा पड़ा. हजरत शेखने इसपरन् कहा-- जबान कलमये तय्यबाका इकरार करती है. जबतक दिल तस्दीक न करे, मोमिन बरहक नहीं होता ! हदीस शरीफ सुनाई-- **ला इलाहा इल्लल्लाह अल्फा मरतिन् इल्ला बे तहकीके फहुवा काफेरुन्** ○ अगर हजारबारभी बौर तहेक्रीक कलेमा पढ़े तो काफिर है. उसकी तहेक्रीक हमपर लाजमी है.

इसके बाद हजरते शेखने मिस्बाहुल हयात बाब ज़ादुलईमान सफ़ा 172 पेश किया. तहेरीर है बाद हन्दे खुदा नाते मोहम्माद मुस्तफ़ा (स्व.)के ज़ाहीर हुये. कलेमामें (2) दो बात हैं-- एक **ला इलाहा इल्लल्लाह** दूसरा **मोहम्मदूर रसुलुल्लाहे** जो कोई **ला इलाहा इल्लल्लाह** हजारबार पढ़े और **मोहम्मदूर रसुलुल्लाहे** सिद्क दिलसे न पढ़े वो काफिर है. इस वास्ते हर एकर फर्ज है के इन बातोंको दिलमें बरहक जानना जो हकीकतमें सिद्क दिलसे **ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदूर रसुलुल्लाहे** ○ पढ़ता है, वो मोमिन बरहक होता है. जो कोई इन बातोंको बरहक नहीं जानता वो काफिर है, अगरचे कलेमा ज़बानसे पढ़ता है !

झिरवबे कहेभी दिया ला इलाह तो क्या हासिल
दिल व बिगाह मुसलमों वही तो कुछभी नहीं

ये शहादत तहे उल्फतमें कदम रखना है
लोक आसान समझते हैं मुसलमों होना (इकबाल)

पस इसी मानवी दावतको हजरते कदीर (रह.)ने बड़ी आजमाईशोंसे कबुल किया और अपना कासाये तलब बढ़ाकर हजरत शेख करीमुल्लाह शाह कादरी चिश्ती मोईनाबादीके दस्ते हक परस्त पर तस्दीककी दौलत पाई. फिर अताये करीमीने अपनी सोहबते फ़ैजसे ऐसा नवाजाके शशजहातके अससार व निकात परदा कुशा हुये.

असैये कार इसीका है कारकहेर शशजहात
खुब हुयी एकजा इसमें उलाही सिफात
बायबे जाते खुदा क्यों न हो फिर इसकी जात
हाथ है अल्लाहका बंदये मोमीन का हाथ
गालीब व कारआफरी कारकुशा कारसाज (इकबाल)

एक अर्सा हजरतकी खिदमत आलियामें आपने बाअदब गुजारे. तामील हुक्मको फर्ज जाना. आपके अह्लाक व औसाफे हमीदासे बिरादराने सिलसिला व अवामुन्नास सभी मुत्तमईन थे. इल्म व इफानकी दुनिया आबाद थी. अताये शेखकी नजरे इन्तेखाब सय्यद मोहम्मद यमनी कादरी पर जल्वाफ़िगन हुयी. हजरते शेखने आपसे कहा-- मुझे हुक्म हुवा है, आपको खिलाफ़त अता करूँ अगरचे के आपने अपनी तरफ़से अदबन मात्रेतरत्वाही की, लेकिन हुक्मे पीर हुक्मे पीर है.

**वो जो चाहें तो करें ज़र्रेको पल्लमें आफ़ताब
मोज़िबे फ़ैज़ाब हैं देखो करीमी इन्तेज़ाब**

हजरते शेख करीमुल्लाह शाह कादरी, चिश्तीने व मुकाम गुलबार्गा शरीफ़ व तारीख 24 जमादिलआखर 1348 हि. मुताबिक 23 देह 1339 फ़सलीको रुबरू फ़ुकरा व मशायखके खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाइया, चिश्तीयासे सरफ़राज फ़रमाया. अपने मुबारक हाथोंसे खिलाफ़तनामा तहेरीर फ़रमाया. इस्मे तरीक़का ऐलान हुवा--

ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी.

अता और दुवाकाही समरा है के सिलसिला दाउज हुवा. आपका जही नसबनामा 24 वास्तोंसे हजरत सय्यदना अली कर्मल्लाह वजहहू से हुज़ूर अकरम (स्व.) तक पहुँचता है. और सिलसिलये खुलफ़ाइयाके शिबरेये मुबारकासे 34 वास्तोंसे सय्यदुल अवलिया सय्यदना शेख अब्दुलकादर जौलानी (रह.)से हजरत सय्यदना अली कर्मल्लाह वजहहूसे हुज़ूर अकरम (स्व.) तक जा मिलता है.

तवक़ल बख़्शुदा आपने तरीक़तकी ज़िन्दगीका आगाज़ किया. हुक्मे शेखपर मुलाज़ेमत तर्क कर दी. आपने मख़लुके खुदाकी खिदमतको अपना लिया.

हम जो चाहें तो कुछ नहीं होता- आप चाहें तो क्या नहीं होता!

**अजब नहीं के बकल दें उसे बिगाह तेरी
बुला रही है तुझे मुक़ेबात की दुनिया**

(इक़बाल)

नेमते खिलाफ़तसे सरफ़राज़ीके बाद एक साहब मोज़े नालवारसे गुलबार्गा तशरीफ़ लाये. आपकी सोहबतमें दो तीन यौम गुज़ार कर नालवार चलनेकी दावत दी. आप नालवार तशरीफ़ ले गये. व-हम्दोलिल्लाह सबसे पहले अब्दुलकादर साहेब व अहेलिया और अमीर खान साहब पायगों, हसनखान साहब और

अब्दुलकरीम खान साहब आपके दस्ते मुबारकपर बैठ हुये. जब आपने मए मुरीदीनके हजरत बुज़ुर्गे नेमत, मख़ज़ने इफ़ान, पीरोमुर्शिद शेख करीमुल्ला शाह कादरी, चिश्तीकी खिदमतमें हाज़री दी. हजरते शेखने बहुत दुवायें दी. उसके बाद मौज़े हलक़्हाके सादात घरानेकी मारुफ़ शख़्सियत मोहतरम सय्यद मख़दुम हुसैनी साहेब मुक़दम माली हलक़्हाके आपको हलक़्हा क़ियामकी दावत दी. अज़राहे इनायत क़ियाम करवाया.

हजरते कदीर (रह.) और अहेलिया साहेबा और साहेबज़ादी सय्यदा हाफ़ेज़ा बीबी साहेबा हमराह हैं. तर्क मुलाज़ेमतके बाद ज़िन्दगी तवक़ल, अल्लाह कारसाज़ -----! अब ज़बाने हजरते कदीर (रह.) से सुने हुये वाक़ियात काबिले क़द्र है. फ़रमाते थे के पटेल साहेब मोहतरम सय्यद मख़दुम हुसैनीने उस ज़मानेमें आपकी खिदमतमें एक रुपया पेश किया. कहा-- ज़वार ख़रीदलें. सुनते हैं उस ज़मानेमें एक रुपियेमें १६ (सोला) सेर ज़वार मिलती थी. जो मुश्क़तसर ज़िन्दगीके लिये काफ़ी थी. खादिम वालेदी मुर्शिदी हजरत कदीर (रह.) की ज़बाने मुबारकसे बारहा सुना! तन्हाईमें सुना! महेफ़िलोमें सुना के-- तवक़ल ज़िन्दगीका इम्तिनान व शान क्या है!

हजरते कदीर (रह.) फ़रमाते थे--

आजतक उसी एक रुपियाकी सोला सेर ज़वार जो ब राहे तवक़ल हासिल हुई, खाभी रहा हूँ, ख़िलाभी रहा हूँ! अल्लाहका शुक्र है आजभी हलक़्हामें वो कमरा जहाँ पटेल साहब क़िबलाने हजरते कदीर (रह.) को रखा था, मुर्शिद घरके नामसे मौसुम है.

मोहतरम सय्यद मख़दुम हुसैनी साहब आपके बिरादर सय्यद हसन हुसैनी साहब, सय्यद सज्जाद हुसैनी साहब काबिले क़द्र हजरत आपके हमनवा रहे. वही शफ़क़त व मोहब्बत, सरबसर हजरत सय्यद मख़दुम हुसैनी साहब क़िबला के फ़र्जदे अक़बर सय्यद मक़बूल हुसैनी साहब व सय्यद बहाज्ज़दीन हुसैनी साहब अल्मारुफ़ व चौद पाशा साहब मुक़दम माली हलक़्हाकी हजरते कदीर (रह.) के घराने को हासिल है. पटेल साहब क़िबलाके बिरादरज़ादा सय्यद अज़ीज़ पाशा साहेब हुसैनी दिगर बिरादरज़ादा सय्यद युसूफ़ हुसैनी साहब तमाम अहेले खानदान की मोहब्बत बुज़ुर्गीकी यादगार है. सय्यद शहाबुद्दीन हुसैनी साहब अक्सर बुज़ुर्गी की खिदमत करते. महेफ़िलोंके इन्तेज़ाममें रहा करते. सुनते हैं के रात व दिन कई महेफ़िलें मुनाक़िद होतीं. दूर दूरसे लोग इस्तेफ़ादये सोहबतके लिये आया करते.

बिला तफ़रीके, मज़हब व मिल्लत हजरते कदीरने अपनी मोहब्बत और हक़

गोईको पेश किया है और वहीं निजाम हजरते कदीर (रह.) के वाबस्तागानके लिये समायये कदीर है.

वा तसेमु बू हबलिल्लाहे जमीओं बला तफर्रकू ○ (पकड़ लो अल्लाहकी रस्सीको मजबूतीके साथ, मत तफर्रका पैदा करो !)

हजरते पीरो मुर्शिद शेख करीमुल्लाह शाह कादरी, चिश्ती (रह.) अक्सर व बेस्तर हजरते कदीर (रह.) और आपके चाहनेवालोंकी मोहब्बतमें हलकड़ा आया करते. पटेल साहब किवलाकी देवड़ीमें महेफिलोंका इन्एकाद होता.

हजरते शेख करीमुल्लाह शाह कादरी, चिश्ती, खुश इल्लहान, कारी व आरिफे वक्त व इफ्तानी शाहर रहे हैं. अपना तखल्लुस दीवाना फरमाते थे. आपने अपने इब्नेदाई दौरमें मौजे तड़वलाकी मस्जिदमें बारा साल इमामत की. जौके तरिकतने कई मुर्शिदीनकी मोहब्बत इस्तिथार करनेका मौका इनायत फरमाया. आपके पीराने सलासिलमें हजरत सय्यद शाह इनायतुल्लाह कादरी (रह.) और हजरत सय्यद शाह सदरोद्दीन कादरी (रह.) करनोली काबिले जिक्र हैं. आपको शर्फे खिलाफते कादरिया हजरत सय्यद शाह चंदा हुसैनी, चिश्तीयुल् कादरी (रह.) साकिने किन्नीसे हासिल हैं. चिश्ती निस्बत सिलसिला इफ्तोखारियासे है. आपको खिलाफत 1331 हि.में हासिल हुई.

हजरत ख्वाजा शेख करीमुल्लाह शाह कादरी, चिश्ती, मोइनाबादी चिटगुप्पा शरीफके खुलफा हस्बे जेल हैं ----

- | | |
|---|----------------|
| १) मोहम्मद हुसैन शाह कादरी रोजेकारी (सदरोद्दीन शाह) | गुलबार्गा शरीफ |
| २) हजरत इस्माईल शाह कादरी | वलखन्डी |
| ३) हजरत मीर फैयाज अली शाह कादरी | चिटगुप्पा |
| ४) हजरत कुतुबोद्दीन शाह कादरी | राजेसूर |
| ५) हजरत मोहम्मद अजीमोद्दीनशाह कादरी | मंगलगी |
| ६) हजरत नेमतुल्लाह शाह कादरी | चितापूर |
| ७) हजरत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी चिश्ती यमनी | हलकड़ा |

ये अताये करीमी है के हजरत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनीसे वो काम लिया के---

कदीर बनाया

तखल्लुसे कदीर और अताये करीमी

एक शबका वाकिया है- हजरत सय्यद मखदुम हुसैनी साहबके फज्द सय्यद मकबूल हुसैनीने यादोंको महेफुज किया है. हलकड़ामें पटेल साहब किवलाकी देवड़ीमें महेफिल हो रही थी. कलमो कलामका मिलसिला जारी था. हजरत



A view of before 24 years by Special Coal Train for Sandal Urs-E-Qadeer



A view of before 24 years by Special Coal Train for Sandal Urs-E-Qadeer



A view of main Entrance to
Halkatta Village

A family personality of Halkatta
village Hazrath Syed
Magdumi-Hussian Saheb's
House



Hazrath Quadeer's elderly daugh-
ter Hafeeza Bibi Enclave



The birth place of Khawaja
Syed Ebrahim Shah Quadri
Chisti Yamani Banda
Nawazi (Saheb Quadeeri)
1943

ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनीकी ख्वाहिश थी के पीर व मुर्शिद हजरत ख्वाजा शेख करीमुल्लाह शाह कादरी चिश्तीसे अपने जौके शेरो अदब इफ्तानी कलामके लिये कदीर तखल्लुस करनेकी इजाजत तलब करें ! महेफिलमें हजरत शेखकी खिदमतमें मारुजा रखा गया. हजरते शेखने कहे दिया नहीं ! आप कदीर तखल्लुस नहीं कर सकते ! ये सुनकर मुरीद साधिककी आँखे नमनाक हो गयीं, महेफिलमें कुछ वक्फा मिला, तब हजरत सय्यद माखदूम हुसैनी साहबने हजरते शेखकी खिदमतमें अदबन् मारुजा किया के- किबला हमारे साहेब बादशाह कादरी आपकी जबाने फ़ैजसे इजाजत चाहते हैं, कदीर तखल्लुस करनेकी ! आप इजाजत क्यों नहीं देते? अताये करीमी देखिये- हाल और मुस्तकबिलके इन्केशाफ़ात देखिये. हजरते शेखने पटेल साहबसे मुखातिब होकर फ़रमाया- पटेल साहब बादशाह कादरी क्या, कदीर तखल्लुस नहीं करेंगे? ऐसा नहीं है. मैं देखना चाहता हूँ के बादशाह कादरी कदीर (रह.) तखल्लुस करनेपर कितने मुस्तहक़िम और मजबुत हैं ! अगर बादशाह कादरी, तखल्लुस करेंगे तो कदीरही करेंगे वरना दूसरा नहीं करेंगे ! ये सुनतेही पटेल साहब किबलाने आपको खुशख़बरी सुनाई. और मुबारकबाद दी. सारी महेफ़िल फ़र्ते मसरतसे झूम उठी. तबसे आप कदीर कहेलाने लगे. वही अता है ! आज जबाने खास व आम पर हजरते कदीरका नाम बसद अक़ीदत व एहतेराम लिया जाता है.

मौजे हलकट्टाके क्रियामकी वजह आप हलकट्टावाले साहेब मशहूर हुये. 24 सालकी उमरमें आपने ख़िलाफ़तसे सफ़राज़ी पायी. हजरते कदीर (रह.) की जाज़िबे नज़र शख़्सियत पूरनूर, चेहरे मुबारक- उँचा कद, शिरी अंदाज़े बयौं, मोहब्बत आपका सुलूक, विला लिहाज़े मजहब व मिल्लत सभी लोग आपके ग़िरवौदा रहा करते. रौशन ज़मीरीका क्या कहेना ! जो एकबार आपसे मिलता, आपहीका होकर रहे जाता. मुरीदीनके मुशफ़िक़ उल्माँके क़दरवौं, मुतालये आपका वसी तहेरीमें पुख़्तगी व बाक़पन, बेहतरीन तैराक, घोड़ा सवारीके माहिर, एफ़्तारमें तेज़ी, शबबेदारी ऐसीके जिसकी मिसाल मुशक़लसे मिल सके. पीरो मुर्शिदके इफ़्त व मोहब्बत व ताबेदारीमें यफ़ता, तज़क़िया नज़सपर कादिर. ज़वाकी रोटी आपकी मरग़ूब ग़िज़ा, चाय कसरतसे पिया करते थे. मोहब्बते शेख (रह.) हुसूल मारेफ़तके लिये हलकट्टासे चिटगुप्पा कई मुक़ामात जहाँ जहाँ हजरते शेख जाते बादशाह कादरी खिदमतलेवालामें हाज़िर रहेते. सफ़र आपकी ख़ुसूसियत रहा. जो कुछ आपने अपने पीराने तरीक़से पाया, मख़लुके ख़ुदातक पहुँचानेमें अपनी जिन्दगी वक्फ़ की. आपने चालीस (40) साल तक बरहेनापा

गुज़ारा. आपकी ज़िन्दगी मुजाहेदाना ! आपका किरदार मुखलेसाना ! आपकी गुफ्तगु आरिफ़ाना थी ! फरमाते हैं---

दुनियाके चमकने पीर मेरा दीवाना बना कर छोड़ दिया

हर तुलमें शज़रमें कुदस्तका मुझे रंग दिखाकर छोड़ दिया

सादातकी चादर रंग दिया वहीं रंगमें कोई फ़र्क़ नर

रंगरेज़ करीमुल्लाह पीर मेरा रंग देना सिखाकर छोड़ दिया

(कदीर)

पस इसी रंगे करीमानाको लेकर गाँव गाँव, शहर शहर, सुन्नते नबवी (स्व.) की पैरवीमें पीराने सलासिलकी तर्ज़ तबलीगकी रोशनीमें ज़िक्र व फ़िक्रकी दावतको पेश किया. दर्री अस्ना मुशिदि अब्बल हज़रत सय्यद शाह नबी मोहियोद्दीन कादरी, चिश्ती, व तारीख 11 जमादिस्नानीको ज़िला रायचूरमें विसाल फ़रमा गये. जामे मस्जिद अन्दरूनी क़िला मशरिकी जानिब बाबुल दाखेलाके करीब मज़ारे पुरअन्वार मरजये ख़लायक़ है. हर साल एहेतेमाम उसें शरीफ़ हुवा करता है. आपके साहेबज़ादे मोहतरम हैरतुलकादरी साहेब क़िबला (रह.) का सिलसिला जारी है. जिनके फ़ज़्रद हज़रत सय्यदशाह रियाज़ुलरक़फ़ कादरी साहब व दिगर बिरादरान अहेले ख़ानदान मद्रासमें आबाद हैं.

मस्जिदे अन्दरूनी क़िला रायचूरमें हज़रत कदीर (रह.) के ज़देआला हज़रत सय्यद शाह मोहम्मद अबुतुराब कादरी, चिश्ती, यमनी (रह.) और सय्यद शाह अमीनोद्दीन कादरी, चिश्ती, यमनी और तायरे भाई हज़रत सय्यद शाह इब्राहीम कादरी, यमनी (रह.) के मज़ारात मौजूद हैं. हज़रते कदीर (रह.) के ख़ुसर मोहतरम हज़रत सय्यद इब्राहीम हसन साहब (रह.) मस्जिदे सराफ़ा बाज़ारके अहातेमें आराम फ़र्मा हैं. आपके वालिद बुज़र्ग़वार हज़रत सय्यद अब्दुल रहेमान कादरी, यमनीका तारीखे विसाल 14, शाबान 1364 हि. है. आप एहातये दर्गा हज़रत सय्यद शाह शम्स आलम हुसैनी (रह.) में मदफ़न हैं. क़ब्रस्तानके हिसारमें दिगर अफ़राद ख़ानदानके मज़ारात हैं. हज़रते कदीर (रह.) के बिरादर निस्वती हज़रत सय्यद शमसुद्दीन कादरी, शम्सी सेगेदार तहेसील रायचूर, एक गिरौ क़द्र शक्रियत रही, जिनकी हमनवाई यादगार है.

बक्शे तस्मुव्वुरात के दिलमें समागये

क्या थाद आये आप, के सब थाद आगये (साहेब कदीरी)

मौजे हलक़ड़ामें हज़रते कदीर (रह.) गुज़बसर फ़रमाने लगे. मुल्ला हज़रत लाड़ले साहब कादरी, मुल्ला मोहम्मद मशायख़ साहब कादरी, अब्दुल करीम

साहब कादरी और हज़रत साहब कादरी, मोहम्मद हनीफ़ कादरी, मौजे बलवाइगी, इबादुल्ला खानसाहब कादरी, मोहम्मद अज़ीमोद्दीन साहेब कादरीने हज़रते कदीर (रह.) की हर मुमकिन मुआवेनत फ़रमाई. मौजूदा खेत मोहतरम इबादुल्लाह खान साहब कादरीहीका दिलवाया हुवा है. जिसमें आज ज़िरात हुवा करती है.

हमारे दादाजान क़िबला हज़रत सय्यद अब्दुल रहेमान कादरी, यमनी व दादीसाहेबा हलक़ड़ा तशरीफ़ लाया करते थे. हज़रते कदीर (रह.) की साहेबज़ादी सय्यदा हाफ़ेज़ा बीबी यमनीके बाद, हज़रते कदीर (रह.) की दो साहेबज़ादियाँ हलक़ड़ाहीमें तबल्लूद हुई. जो सय्यद ख़तीजा बीबी यमनी और सय्यदा करीमा बीबी यमनी हैं.

सय्यदा हाफ़ेज़ा बीबी यमनी हज़रते शेख़े तरीक़तसे बेअत थीं. तसुर्क़ात निगाहे मुशिदीसे फ़ैजेयाब रहीं. आप पाक बातिन अच्छे अवसाफ़ रखती थीं. अपने वालिद बुज़र्ग़वारको बंदये ख़ुदा पुकारा करती थीं.

हज़रते शेख़ करीमुल्ला शाह कादरी, चिश्तीकी नज़रे इल्तेफ़ातसे सिलसिला रोज़ अफ़ज़ू दराज़ होता गया.

चिटगुप्पामें हज़रते शेख़ क़याम पज़ीर थे. आपका क़ान मौजे सनअत है. जहाँ आपका आबाई मकान आजभी मौजूद है.

चिटगुप्पाके मशहूर हकीम मोहम्मद मस्तान साहब, मोहम्मद हनीफ़ साहब, शेख़ चितासाहब सौदागर चितापूर, सय्यद बहादूर साहब सेगेदार चितापूर, एक ग़्यारवी शरीफ़की तक़रीबमें हज़रते शेख़के मुरीद हुये. सोहबते शेख़में अहेले यक़ीनको इफ़ाना तालिमात नसीब हुयीं. जिनसे हलक़ा बग़ोशाने कदीर (रह.) अहेले इल्म ख़ूब शनासी रखते हैं.

सिरे सग़द मुस्तफ़ा जो लाये हैं

आशिक़ों सीना व सीना पाये हैं

(मीर हयात)

जब इफ़क़ सिखाता है आवाये ख़ुद आग़ाही

ख़ुलते हैं गुलामों पर असरारे शहेनशाही

इफ़क़की तववीममें असर खोंकि सिवा

और जमावेभी हैं जिनका नहीं कोई बाग़

इफ़क़ क़मे जिबईल इफ़क़ क़मे मुरतफ़ा

इफ़क़ ख़ुदाका रसूल इफ़क़ ख़ुदाका क़लाम

इष्क ऊकिहे हरम इष्क अमीर सुबूद

इष्क हें इब्नुस्सबील इसके हजारों हें नाम (इब्नाल)

पीर और मुरीदके रिश्ते दायमी और वारप्रतगीये शोखके बेगुमार वाकैयातसे दौरे कदीर एक अमली पैका बनकर आजभी मशअले राह है। हज़रते शोख अक्सर फ़रमाया करते- बादशाह कादरी जहाँ तुम रहोगे, चालीस कदम पर मेरी रुह आपकी निगारों रहेगी।

वाकिआते विसाल हज़रत ख़्वाजा शोख़ करीमुल्लाशाह कादरी, चिरती कुहूस् सिरहुलअजीज़-

रफ़्ता रफ़्ता हज़रते शोख़की तबियतमें नक्काहत बढ़ती गयीं। आपने अपनी हयातहीमें बमुक़ाम चिटगुप्पा, मैदान गाज़ी शहीद हज़रत सालार मुखदूम (रह.) के करीब एक बसा बुज़र्ग़ हज़रत सय्यद शाह हुसैन लौटनशाह (रह.) के मजार शरीफ़ के बाजू अपनी आख़री आरामगाहका इन्तेखाब कर रखा था। क़ब्र बनवाई गयी थी। आप एक आलिमे बा अमल थे। ये भी फ़र्माते थे के नमाज़में जो सूरेतें याद आये तिलावत कर लेना चाहिये। जहाँ जगह मिले दफ़न होना चाहिये। इससे जाहिर है ख़्वाहिशे नफ़्ससे बरी होकर आप रज़ाये इलाही चाहते थे। अहेले मोहब्बत व अक़ीदतने हज़रते शोख़को व गरजे इलाज़ चिटगुप्पासे गुलबर्गा शरीफ़ ले जानेकी इजाज़त दी। हज़रते कदीर और हकीम मस्तान साहब कादरी, हज़रते शोख़के हमराह थे। सभीने वादा लियाके किसी हाल हज़रते शोख़को चिटगुप्पा लाना होगा। आप जब गुलबर्गा शरीफ़ पहुँचे, आपके कई अहेबाब मशायख़से मुलाक़ात रही। कहा- ऐसी हालतमें क्यूँ आप तशरीफ़ लाये? हज़रते शोख़ने फ़र्माया- हज़रते ख़्वाजा बन्दानवाज़ (रह.)ने मुझ बरेहनाको कपड़े देनेका वादा फ़र्माया है। पहनने आया हूँ। अल्लाह अल्लाह क्या रोशन ज़मीरी है।

आप अपने ख़लीफ़ा मोहम्मद हुसैनशाह कादरी रोज़ाकारीके घर पहुँचे। 19 रब्बीउस्सानीकी शब सब मुरीदाने सादेक़ीन जमा हुये। हज़रते कदीर (रह.) के पीरभाई शोख़ हुसैन साहेब बारूदगर, शोख़ इमाम साहब मनीयार, मोहम्मद इस्माईल साहब बादी, गुलाम रसूलसाहब ख़ैय्यात, दिगर काफ़ी हज़ारात मौजूद थे। रात देर गये तक बड़ी राज़ोनियाज़की तालीम फ़रमाते रहे। नमाज़े फ़जर अदा की। बाद नमाज़े ज़ोहर चन्द हज़रात दाख़िले सिलसिला हुये। हज़रते शोख़की तबियतमें ताअ्युर था। सभी जानिसारान महेवेफ़िक़ थे। हुक्म शोख़पर शब ग्यारवीं शरीफ़का अहेतेमामभी था। इसी फ़िक़्र व मसरूफ़ियतमें हज़रते कदीरको हज़रते शोख़ने हुक्म फ़रमाया- नमाज़े मग़रीब अदा करके जल्द आना। ज़ूही हज़रत कदीर ख़िदमत

शोख़में आये, नज़रें मिलीं। दाईये ज़िक़्रे दम अपने दमे आख़रीको ज़िक़्र कलेमये तय्यबासे सिपुर्दे हक़ कर दिया।

बिल आख़र 1272 हि. में दुनियाये आबो ग़िलमें तशरीफ़ लाये थे। 21 साला दौरे ख़िलाफ़त गुज़ारकर 80 सालकी उमरमें 20 रब्बीउस्सानी 1352 हि. बाद नमाज़े मग़रीब विसाल फ़रमा गये। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन ○

इष्कके शुर्शदसे शम्मे अज़ल शर्मिदा हें

इष्क सोने ज़िन्दगी हें ता अबद पाईदा हें

इष्क कुछ महेबुबके मरनेसे मर जाता नहीं

रुहमें राम बनके रहेता हें मरत जाता नहीं (इब्नाल)

हज़रते शोख़की जुदाई तमाम आशिक़ाने करीमके लिये नाक़ाबिले तलाफ़ी सानेह था। हज़रते कदीर (रह.) सब व ज़ब्तका दामन थाम कर तक्मीलकी तरफ़ तवज्जा की। हज़रते शोख़को गुलबर्गा शरीफ़से चिटगुप्पा ले जानेका वादा, उस वक्तका तक्कल जिन सब सबआज़मा हालातसे, दो चार होकर आपने अपना हक़ गुलामी निभाया, वो वाकैयात जब वालेदी मुर्शिदीके ज़बाने मुबारकसे सुन्ते तो आँखें नमनाक हो जातीं। आज और कलमें बड़े फ़ासले हैं। कल इम्तेहान था, आज इनाम है। तौफीक़के बग़ैर हक़ायक़को समझना बहुत मुश्किल है। कामियाब वही है, जो अपने माज़ीको अपनी यादोंमें समेट रखा है। देखिये अफ़क़ारे कदीर क्या दर्स दे रहे हैं---

मैंभी अदबा साक़िया तेरे तलबनारोंमें हूँ

चौध्वीका चौप दू हें मैं तेरे तारोंमें हूँ

मेरे हिस्सेकी मुझे दे साक़िया बाकी जो हें

मैं तेरे मयझारोंके पाओश बरदारोंमें हूँ

हज़रते कदीर फ़र्माते थे- गुलबर्गा शरीफ़ मार्केट मस्जिदके इमाम हज़रत मोहम्मद अब्दुल करीमशाह कादरीने हज़रते शोख़की नमाज़े जनाज़ा अदा की।

अदा करीमकी देखो बमाज़ होती हें

इमाम ऊर्जे कफ़ाया बने हें शाहे करीम (साहेब कदीरी)

बमुक़ाम चिटगुप्पा 21 रब्बीउस्सानी बाद नमाज़े असर, सिपुर्दे लहद किया गया। 23 रब्बीउस्सानी 1352 हि. बरोज़ पंजशम्बा बाद ज़ियात हस्तुल हुक्मे हज़रते शोख़ हज़रते कदीरने हज़रते ख़्वाजा शोख़ करीमुल्लाह शाह कादरी चिरतीके फ़ज्रद हज़रत शोख़ अमानुल्लाह साहेबको ख़िलाफ़ते कादरीया, आलिया,

खुलफाईया से सरफराज किया। इसमें तरीकतका एलान हुआ। शेख अमानुल्लाह शाह कादरी और हकीम मोहम्मद मस्तानशाह कादरी चिटगुप्पाभी 23 रब्बिउस्सानी 1352 हि. को खिलाफते कादरीया, आलिया, खुलफाईयासे मुशरीफ हुये, कादर मोहियोदीनशाह कादरी नालवारभी अब्बलीन खुलफाकी सफ्रमें हैं। जौभी आसासा था, वो हजरते शेखके साहेबजादाके हवाले करदिया गया। तमाम हाजरीन मोतकदीनने हजरते शेख (रह.) की कमली, हजरते कदीर (रह.) के सपर रखी। इसी अजमत व शर्फ की व दौलत, हजरते शेख (रह.) के विसाल ता उसं करीमीके खिदमत और तामीर आस्तानये करीमी चिटगुप्पा 1393 हि. मुताबिक 1973 ई. यकीनन हजरते कदीर (रह.) की निश्चत व खिदमतके खुले नजारे हैं।

हस्मे रिवायाते कदीर गुजिश्ता साल 1419 हि. मुताबिक 1998 ई. (67 वीं) उम्रें करीम (रह.) मनाया गया। बारगाहे करीमी तमाम अहेले सिलसिलये कदीरिया व करीमियाके लिये मरकजे फ़ैजान है। यहींसे सिलसिलये आलियाके खुलफाको रुबक फुकरा मशायख सनद खिलाफत दी जाती है। हजरते कदीर (रह.) के कसीर खुलफा इसी सरजमीने मुबारकसे फ़ैजेयाब होते रहे।

सर गुरु हजरत महेबुबशाह कादरी हमेशा अपने फुकरा मन्डलके साथ मरासिमे उर्स व लकारीब खिलाफतमें शामिल रहेते हैं।

काफिले इष्कके क्या खूब रवीं होते हैं

सरखें सौदा लिये उश्शाक यहाँ होते हैं

चलबेवाले तो चला करते हैं मन्जिलकी तरफ

फासले इष्ककी राहोंमें कहीं होते हैं (साहेब कदीरी)

बर सबील तजकेरा, ये वाक्याभी इष्के पीरका मजहर है। जब हजरते कदीर (रह.) ने पहेला सन्दल हलकट्टेसे चिटगुप्पा बारगाहे हजरते शेख (रह.) में लेजाने का कज्द किया, एक मुह्रतेसर काफेला तय्यार किया। जो हजरते कदीर (रह.) के हमराह पैदलपा हलकट्टासे 125 किलोमीटरका फासला तै करके गुलबर्गा शरीफ होता हुआ चिटगुप्पा पहुँचा। उसी मुबारक काफेलेके साथियोंमें आशिके कदीर (रह.) मुल्ला मोहम्मद मशायख कादरी अबभी हयात हैं।

हजरते शेख करीमुल्लाह शाह कादरीके हिदायात, हजरते कदीर (रह.) के साथ साथ रहे। हजरते शेखने फ़रमाया था-- बादशाह कादरी सरजमीने गुलबर्गा शरीफमें जब आप बमुकाम फ़िरोजाबाद बारगाहे हजरते खलीफतुरहिमान (रह.) में हाजरी दोगे, तो गुम्बदे मुबारककी साख्तको देखकर गुम हो जावोगे! हजरते



Hazrath Khawja Syed Mohammed Basha has constructed Aastan-E- Kareemi with his followers in 1973 Chittagutta Shareef K.S.



Hazrath Shaik Kareemullah
Shah Quadri (Saani) G/son of
Harazth Kareemi



(Aastan-E-Kareem)

A view of Present Darga Shareef Hazrath Shaik Kareemulla Shah Quadri Chishty (RA), Chittaguppa Shareef K.S.

शेखके मानवी इशारे बारगाहे खलीफतुरहिमान (रह.) के मुशाहिदेसे न सिर्फ आप मुतासीर हुये, बल्के हजारो अहेले अकीदतको वाबस्तये तहेकौक करदिया, आज हजारो अकीदतमन्दाने कदीर अहेले सिलसिला पैरवीये कदीरमें बड़े अहेतराम व अदबसे बारगाहे आलियापर हाजरी देकर कैजेयाब होते है. हजारते कदीरका मुरतीब करदा तुगारये पंचरंगी हजरतहीके फैजानका सरचश्मा है. जिसके तफसीलात आगे मुलाहेजा फरमावेंगे. हजारते कदीर (रह.) फरमाते हैं--

मल अरफ नरसहु पहेचान तुम्बद अयों है खलिफतुरहिमाव तुम्बद
अजीब शशजहतसे है इजाद तदथा है बतकावे अजली मुसलमान तुम्बद
बितावार हाफिज, अठिजा, करीमा कदीर सबके सब हम हैं मेहमाव तुम्बद

हैदराबाद में हजारते कदीर की आमद

रवों आहिस्ता आहिस्ता जहॉमें है कदम अघना

यकी मशरीकसे मगरीब जायेगा साबित कदम अघना

शाने करीमी है के सिलसिलये कदीरियाका फैलाव होने लगा. एक काबिले कद शम्सियत तालिमाते इफ्नीके दिलदादा अतहर साहेब दाखिले सिलसिला हुये. जिनके ज़रिये मोहम्मद उस्मान साहेब मुसव्विर सिंकदराबादी, मुखलिम (यकीन) हजारते कदीर (रह.) के दस्ते मुबारक पर बैअत की. बज़रीये मोहम्मद उस्मान कादी मुसव्विर सिंकदराबादी सादात घरानेके बुजर्ग सय्यद हनीफ साहेब हैदराबादीने सबसे पहले हजारत कदीर (रह.) को हैदराबाद बुलवाया और तालिब हुये. इस तरहा हैदराबादमें सिलसिलेका आगाज हुवा.

काम ऐसा दकनमें कर जाना

दाग कलमेका दिलपे धर जाना

दरपे मुर्शिक्के बस चुकाकर सर

कदवों के कदीर (रह.) धर जाना

तशरीहाते कलेमये तय्यबाके अन्वार व तबल्लियातकी रोशनीमें हजारते कदीरकी फिक्र तहकीककी वसअतोसे हम किनार होती गई. ज़र्रे ज़र्रेमें, पत्ते पत्तेमें रंग व नूरके जल्वे कलबको मुतमईन करने लगे.

बर्ने दरख्तावे सब्ज दर बजर होशियार

हर वर्के वषटरीस्त मारिफते किर्वीनार

हजारते कदीर (रह.) ने 1940 ई. में एक पंचरंगी तोगरा मुरतीब किया. जिस की मुसव्विरीके खिदमात मोहम्मद उस्मानशाह कादी, यकीन, सिंकदराबादीने

अन्जाम दीं, जो हजरते कदीरके सातवें खलीफा हैं। यही तोमारे पचरंगी सिलसिले कदीरियाकी शनासत है। बाह्यदअल्लाह हजरते कदीर (रह.) के आफ़काउतसे बे शुमार तालिबाने हकने इस्तेफ़ादा किया और कर रहे हैं।

विसाले हजरता सय्यदा हाफ़ेज़ाबीबी यमनी रहेमतुल्लाह अलैहा दुश्तर हजरते कदीर हाफ़ेज़ाबीबी हजरते शेख़से बैअत थीं। तक़रीबन 13 सालकी उमरमें 18 ज़िकादाह 1360 हि. को हलक़्ज़ामें विसाल फ़रमा गयीं।

19, ज़िकादाह तदफ़्तीन अमलमें आयी। फ़ैजाने करीमीके क़ब्र बनवानेके सिलसिलेमें 39 वें दिन जब मिट्टी हटाई गयी, जसदको महेफूज़ व मोअत्तर पाया गया। सब शाने करीमी है। 19 ज़िकादाहीको हरसाल हजरताका उर्स मनाया जाता है। हाफ़ेज़ाबीबीकी रहलत न सिर्फ़ वालिदेन, बल्के तमाम अहेले सिलसिलाके लिये सद्मये अज़ीम था।

**मदावा राजका मुश्किल है मगर ये उसकी मर्ज़ी है
करम होता है वो टस्क़ीबकी सूरत निकलती है**

विलादत साहेबज़ादा हजरते कदीर (रह.) सय्यद इब्राहीम हसन यमनी व तारीख 10, रब्बीउल अव्वल 1362 हि. मुताबिक 1943 बसुफ़ाम हलक़्ज़ा खादिम तवल्लुद हुवा। वालेदी मुर्शिदी हजरते कदीर फ़रमाते थे-- मेरे दादा जानने मेरा नाम नाना हजरत किबलाके नामपर सय्यद इब्राहीम हसन यमनी रखा।

**मेरा मुँहमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा
तेरा तुझको सौंप देबे क्या जाता है मेरा**

हजरते कदीर फ़रमाते हैं के-- अपनेही खेतमें एक बावली खुदवाई गई। जो आजभी हाफ़ेज़ा बावलीके नामसे मौसूम है। सुना गया है के जिस वज़त बावलीमें पानीका झिरा बरामद हुवा, उसी वज़त खादिम तवल्लुद हुवा।

मेरी टक़लीक़से उनके हुबसकी याद आती है

उसी आईनेसे आईबागर की याद आती है (हजरते कामिल (रह.))

माज़ीके वाकियात मुस्तक़बिलके रहेनुमा होते हैं। हजरत सय्यद हनीफ़ कादरी साहब हैदराबादीके बड़े साहेबज़ादे हजरत हकीम सय्यद मुईनोद्दीनशाह कादरी हजरते कदीर (रह.)के अज्वलीन ख़ुलफ़ामें हैं। जिनके फ़ज़ीद अलहाज सय्यद हनीफ़ कादरी और उनकी विरादरी आजभी हैदराबादमें आबाद है। ख़ुर्ज ख़ानदान हकीम सय्यद हनीफ़ कादरीके दूसरे साहेबज़ादे सय्यद जाफ़र कादरी, तिसरे साहेबज़ादे सय्यद ताहेर कादरी, चौथे साहेबज़ादे सय्यद साबिर वलीशाह कादरी, हजरते कदीर (रह.)के खलीफ़ा व दामाद होते हैं। जिनसे हजरते कदीर



Hazrath Quadeer (R.A.)



Syed Sabir Vali Shah
Quadri Hyderabad



Mohammed Abdul Kareem
Shah Quadri, Damad,
Hazrat-E-Quadeer



Saheb Quadeeri



Saheb Quadeeri, Abdul Kareem Shah Quadri, Syed Ameer Shah Quadri (Peer Sab)



Chittaguppa Shareef



Hazrath Shaik Kareemulla Shah Quadri Saani, Chittaguppa Shareef



Saheb Quadeeri, Peer Syed Ameer Shah Quadri, Dr. Nazar Mahboob Shah Quadri

(रह.) की दूसरी साहेबजादी सय्यदा खतीबाबीबी यमनी मन्सुब हैं। पाँचवें फज्रद सय्यद जाबिर कादरी थे।

दिन ब दिन हैदराबाद के सिलसिलेमें वुसअत होती गयी। तबर्ककनु, चंद नाम ज़ब्तो कलम हैं। मोहम्मद यासीनशाह कादरी, मोहम्मद ताहेर कादरी, जिनके फज्रद मोहम्मद हसन कादरी उर्फ चांदभाई अफ़ज़ल गंज थे। मोहम्मद जाफ़रशाह कादरी जो हज़रते कदीर (रह.) के खलीफ़ा थे। जिनको हज़रते कदीरने एक बुर्ज़ा हज़रत खाकीशाह बाबाकी ख़िदमतके लिये मामूर कर दिया था। जो आज बमुक़ाम बंदलगुड़ा गुम्बदे खाकीशाह बाबा (रह.) ही के पहेलूमें आराम फ़र्मा है। अब्दुल गनीशाह कादरी, अब्दुल सलामशाह कादरी हैदराबाद, मोहम्मद इस्माईलशाह कादरी मदरेवाले, मुन्शी शेख इस्माईलसाहब कादरी, शेख़ महेबुबसाहब कादरी कुरेशी, मोहम्मद उस्मानसाहब कादरी कुरेशी, मोहम्मद ग़ौससाहब कादरी कुरेशी, चंदासाहब कादरी मालिक क़मर होटल, मोहम्मद श्वाजासाहब कादरी अफ़ज़लगंज, ज़हुरोद्दीनशाह कादरी, मोहम्मद मुनव्वरसाहब कादरी, फ़ज्रदाने मोहम्मद शाहाबोद्दीन कादरी, मोहम्मद हाशम कादरी, मोहम्मद पाशा कादरी, मुन्शी मोहम्मद इस्माईलसाहब कादरी, जो बेहतर आलिम व फ़ाज़िल थे। जिनके बड़े साहेबजादा श्वाजा हसन शरीफ़ शौक हैदराबादी, काबिले त्रिक हैं। मुन्शी इस्माईलसाहब मोहकमे रेल्वे, अब्दुल जलीलसाहब कादरी जमादार, फ़ज्रद अज़ीमोद्दीन कादरी, श्वाजासाहब कादरी पलटण, रज्जबअलीसाहब कादरी, मोहम्मद यासीनसाहब कादरी बग़दादी, सय्यद महेबूबशाह कादरी उर्फ़ जानीमियाँ कारचुपवाले, फ़ज्रद सय्यद मुईनोद्दीन कादरी व सय्यद फ़ाज़िल कादरी, अमीनोद्दीन कादरी, कासिमसाहब कादरी, अहमद खानसाब बमंवाले (जहाँनुमा), जिनके घर तीन माहसे ज़ियादा हज़रते कदीर (रह.) क़याम पज़ीर रहे। मुहाक़ीलका इन्फ़काद होता रहा। सुना गया है के तीन माह तक हज़रते कदीर (रह.) मुसलसल शयबेदार रहे। बेरुन फ़तेह दरवाज़ामें शेख़ बुड़न कादरीसाहब, सय्यद यासीनसाहब कादरी, ग़ौर क़मरोद्दीन कादरी हाशमी, महेबुबअली ख़ान कादरी, सुंगुर पाशासाहब कादरी, अरब आजम अलीख़ान कादरी लंगर हाऊस, सय्यद बुन्हानोद्दीन कादरी फ़र्स्ट लान्सर, मोहम्मद महामुद्शाह कादरी चिश्तीचमन, सईद बिन मोहम्मद कादरी उर्फ़ मौलानासाहब, मेजर मोहम्मद याक़ुबसाहब कादरी, डॉक्टर नज़र महेबुब कादरीसाहब व बिरादर व वालिदे गिरामी मआ खानदान हज़रते कदीर (रह.)के हलकाये इरादतमें रहे। बेहतर ख़िदमात अन्जाम दीं। मोहम्मद ज़कारियासाहब कादरी, जाकिर (रह.) सिकंदराबादी, मशहूर शायर गुज़े

हैं, जिनके कलाम तफ़हीम तालिमाते इफ़ानी की जान रहे। हज़रते कदीर (रह.) की महेफ़िलोके रुहेरवीं थे। वो समाकी कैफ़ियातही कुछ और थी।

इसके बादके दौरमें अब्दुलहादी कादरी मुतख़ल्लिस हारिस हैदराबादीने बरजस्ता कलामसे सिलसिले आलियाकी बड़ी ख़िदमत अन्जाम दी। जिनके कलाम तालिमाते कदीर (रह.) की अक्कासी करते हैं। इसी दौरमें सय्यद अमीर कादरीसाहब पीर काबिले ज़िक्र हैं, जिनके इफ़ानी कलामका शोहरा है।

हज़रते कदीरकी मुतवक्किल ज़िन्दगी सन्नों राजा सादगीसे अहेले नज़र मुतासिर होते गये। आप हैदराबादसे ज़िला वरंगल तशरीफ़ ले गये। मस्जिद रंगशाही पेठ ज़िला वरंगलके पेशइमाम हज़रत सय्यद अली साहब दाखिले सिलसिला हुये। मास्टर मोहम्मद उस्मानसाहब आक्रमजाही मिल। मौलवी अज़ीज़ुल्लाहसाहब, मोहम्मद अफज़ल साहब, मोहम्मद माशुकसाहब शम्मुन पेठ, समीअल्लाह बेगसाहेब और वालिद मोहतरम और अब्दुल रहीमसाहेब, महेबुब बेगसाहेब, नबीखानसाहेब वगैरा हज़रते कदीर (रह.) से शर्फ़ बैअत हासिल की।

हज़रत हुवाजा सय्यद अलीशाह कादरी, अलचिश्तीकी हज़रते कदीर (रह.) ने 6, रब्बीउस्सानी 1368 हि. को ख़िलाफ़ते कादरीया, चिश्तीयासे सरफ़राज फ़रमाया। आप हज़रत कदीर (रह.) के ८ वें खलीफ़ा थे। आपको सिलसिलेकी बुजुर्गी हासिल थी। आपने एक तवील दौर हज़रते कदीर (रह.) की ख़िदमतमें गुज़ारा। आपके फ़ज्रदान व अहेले ख़ानदान वरंगलमें आबाद हैं। मोहम्मद माशुकसाहब कादरी, फ़ज्रद मोहम्मद इब्राहीम कादरी वरंगलमें आजभी ख़िदमत गुज़ाराने सिलसिला हैं।

मोहम्मद उस्मानशाह कादरी व मोहम्मद अज़ीज़ुल्लाहशाह कादरी, मौलवीभी हज़रते कदीर (रह.) से ख़िलाफ़त पाई। ज़िला वरंगलसे करीब एक मुक़ाम जमीकुन्टा है, जिससे दूरे कदीरकी यादें वाबस्ता हैं। जानिसारे हज़रते कदीर अब्दुल हामिद खानसाहब हलक़्ता आकर बैअतसे मुशरफ़ हुये। हज़रते क़िबलाको जमीकुन्टा बुलवा लेगये। कसीर खानदान मुशरफ़ व सिलसिला हुवा। आपके दामाद जनाब युसूफ़ बेग कादरी अपने बुजुर्गीकी यादगार हैं। हज़रत पेशइमाम साहब जमीकुन्टा, उस्मानसाहब कादरी, अंकूससाहब कादरी, फ़ज़लमोहम्मद खानसाहब कादरी व बिरादरान व अहेले ख़ानदान सभी वाबस्तगाने सिलसिले कदीर (रह.) हैं। मोहम्मद जाफ़रशाह कादरी, मोहम्मद पाशासाहब कादरी, मोहम्मद महेमूद कादरी, इब्राहीमखानसाहब कादरी, दिगर बिरादराने सिलसिला सब काबिले ज़िक्र हैं। बिला लेहाज़ मज़हब व मिल्लत

हज़रते कदीर (रह.) की मोहब्बत फैज़रसै थी। जनाब शंकरियासाहब बुकैया साहू, डॉक्टर नरसिम्मा राजसाहब जमीकुन्टा सब आपसे बेहद अक़ीदत रखते थे।

जनाब अक़लको समझा हुवा है मशअले राह

किसे सबरके जुबूँभी है साहेबे उदाक (इम्बाल)

हज़रते कदीर (रह.) अपनी धुनमें सरग़दां फ्यामें करीमीको मुक़ाम दर मुक़ाम पहुँचानेमें मसरूफ़ कार रहे। बंगालसे एक बासनद आलिम दीन, वायेज़ व क़ारी हलक़्ता आये। हज़रते कदीर (रह.) की सोहबतमें रहे, तालिब होकर हज़रते कदीरसे ख़िलाफ़त हासिल की, जिनका बुजुर्ग़ ख़ुलफ़ा में शुमार है।

आपका कसीर सिलसिला है। हज़रते कदीरहीने ज़िला रायचूरमें आपका रिश्ता करवाया। आपकी साहबजादी हज़रत सय्यदशाह पीरपाशा हुसेनीसाहब गुलबर्गा शरीफ़की अहेलिया हैं।

हज़रत शाह नुसरतुल्लाशाह कादरी (रह.) गुलबर्गा शरीफ़में शहीद हुये। गुलबर्गा शरीफ़हीमें आप आराम फ़रमा हैं।

फ़ाजिल ज़फ़ाक़शाहे मोहब्बतकी मौत क्या

जब थक गये तो सो गये आरामके लिये

हज़रत अब्दुल रहेमान कादरी गुलबर्गी, इमाम अलहाज मोहम्मद ज़हीरोदीन कादरी आलंद शरीफ़, मोहम्मद इस्हाक़ कादरीसाहब नरसापूर, सय्यद सुफ़ी बुख़ारी कादरी शोरापूर, अब्दुल कादर कादरी शिकलगर पुरदेदूर, सब आपहीके मुरीदीन हैं। आप पैकरे शरीयत आलिम बा अमल थे।

उसी दौरमें मास्टर मोहम्मद अब्दुलनबीसाहब कादरी, साकिन आधोनी गुलबर्गा शरीफ़में तार मास्टर थे। आपने हज़रते कदीरकी बड़ी ख़िदमत अन्जाम दी। आपहीके बड़े फ़ज्रद मोहम्मद अब्दुलक़रीम शाह कादरी, हज़रते कदीरके छोटे दामाद हैं। करीमाबीबी, मोहम्मद अब्दुलक़रीम शाह कादरीकी अहेलिया हैं। मौज़े कपनूग़ामें सुल्तान पटेलसाहब कादरी, रसूल पटेलसाहब कादरी, मौज़े मोटनहल्लीमें मोहम्मद अब्बासअली कादरी, मोहम्मद कासमअली कादरी, पटेल धुलप्पासाहब, हज़रतसाहब कोटरगी, गाजरकोटमें मोहम्मद सरदारअली कादरी मौज़े कोइलामें शेख़ महेबुब कादरी टेलर, कादरख़ान साहब कादरी, यादगीरमें सय्यद अब्दुल रहेमानसाहब कादरी, मीर सय्यद गुलाम दस्तगीर कादरी (बाबुमियाँ), अब्दुलहफ़्फ़ासाहब कादरी, ताज़िर मोहम्मद शरीफ़ कादरी, अब्दुल अज़ीज़ कादरी काबिले ज़िक्र हैं। सभी जानिसाराने कदीरने बखूबी अपना अपना हक़े निखत निभाया।

गुलज़ारे कदीरमे तहेरीर करदा बयान- नमाज़ और ज़िक्रकी अहेमियत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ीअल्लाह तामाला अनहा हुज़ूरेअकरम स्वल्लल्लाहोअलैहे वसल्लमका इशदिगिामी नकल करते हैं के इस्लामकी बुनियाद पाँच सुतनोंपर है, सबसे अब्बल ला इलाहा इल्लल्लाहू मोहम्मदूरसूलुल्लाहे ○ की गवाही देनाके अल्लाहके सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाहके रसूल हैं, इसके बाद नमाज़का कायम करना, ज़कात अदा करना, हज़ करना और रमज़ानुल मुबारकके रोज़े रखना, (मुतफ़ाक़ अलै)

मुल्लाअली क़ारी रहेमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं के इस हदीसमें उल्माये करामके इस क़ौलकी दलील है के- इमानके बाद सबसे मुक़द्दम नमाज़ है,

हज़रत अबुज्जर रज़िअल्लाहो अनहु, फ़रमाते हैं के एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सदीक़ मौसममें बाहर तशरीफ़ लाये और पत्ते दरख़्तों से गिर रहे थे, आपने एक दरख़्तकी टडेनी हाथमें ली, इसके पत्ते औरभी गिरने लगे, आप (स्व.)ने फ़रमाया- ऐ अबुज्जर (रज़ि.) मुसलमान बन्दा जब इख़लाससे अल्लाहकेलिए नमाज़ अदा करता है तो उससे उसके गुनाह ऐसेही गिरते हैं जैसे ये पत्ते दरख़्तसे गिर रहे हैं,

इख़लाससे नमाज़ अदा कीजाये तो नमाज़ीके तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं और इख़लासकी दौलत अल्लाहके ज़िक्रके बग़ैर मुमकिन नहीं, दिलोंकी सफ़ाई और हुस्ने निय्यत ज़िक्रकी अवल्लीन खुसूसियत है, यही वजह है के ज़िक्रके फ़जायलमें उल्माने लिखा है के तमाम आमाल अल्लाहके ज़िक्रहीके बास्ते मुक़रर किये गये हैं, तमाम आमालमें वही अमल अफ़ज़ल है जिसमें ज़िक्रकी कसरत हो, रोज़ोंमें वही रोज़ा अफ़ज़ल है जिसमें ज़िक्रकी कसरत हो, हज़में वही हज़ अफ़ज़ल है जिसमें ज़िक्रकी कसरत हो, जिहादमें वही जिहाद अफ़ज़ल है जिसमें ज़िक्रकी कसरत हो, ग़र्ज़के ज़िक्रके बग़ैर कोई अमल अफ़ज़ल नहीं,

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) हुज़ूर अकरम स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमसे नक़ल करते हैं के आपने एक मर्तबा इशदि फ़रमाया - बतावो अगर किसी शरूस्के दरवाज़ेपर एक नहेर ज़ारी हो, जिसमें वो पाँच मर्तबा रोज़ाना गुस्ल करता हो, क्या

इसके बदनपर कुछ मैल बाक़ी रहेगा? सहाबा (रज़ि.)ने अज़ किया- कुछभी बाक़ी नहीं रहेगा, हुज़ूरने फ़रमायाके- यही हाल पाँचों नमाज़ोंका है के अल्लाह तआला उनकी वज़ाहसे गुनाहोंको माफ़ फ़र्मा देते हैं, (बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, निसाई, इब्ने माजा),

नमाज़ जो ज़िक्रके लिये है इसकी ये फ़ज़िलत है के नमाज़ीके तमाम गुनाह ज़ायल हो जाते हैं, और जो हर लम्हा अल्लाहके ज़िक्रमें मशग़ूल हैं, उनपर जोभी अल्ताफ़े शाहाना हों, वो मोहताजे बर्याँ नहीं !

हज़रत अबु मुस्लिम तग़ालबी (रज़ि.) फ़रमाते हैं के मैं हज़रत अबु उमामा (रज़ि.)की ख़िदमतमें हाज़िर हुवा, वो मस्जिदमें तशरीफ़ फ़र्मा थे, मैंने अज़ किया के एक साहबने आपकी तरफ़से ये हदीस नक़ल की है के आपने हुज़ूर अकरम स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमसे इशदि सुना है के जो शरूस् अच्छी तरह वजू करे और फिर फ़र्ज नमाज़ अदा करे तो हक़ सुबहानहू, उस दिन वो गुनाह जो चलनेसे हुये हों और वो गुनाह जो उसके हाथोंने किया हो और वो गुनाह जो उसके कानोंसे सादिर हुये हों और वो गुनाह जिनको इसने आँखोंसे किया हो और वो गुनाह जो इसके दिलमें पैदा हुये हों सबको माफ़ फ़र्मा देते हैं, हज़रत अबु उमामा (रज़ि.)ने फ़रमायाके मैंने ये मज़मून हुज़ूर अकरम स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमसे कई मर्तबा सुना है, (इमाम अहेमद (रह.))

अल्लाहो अक़बर नमाज़में ये ज़िक्रही की बरक़त है के तमाम आज़ाके गुनाह दूर हो जाते हैं, बड़े ख़ुरानसीब हैं वो लोग, जो नमाज़ पंजागानाके अलावाभी ज़िक्रसे ग़ाफ़िल नहीं रहेते और अपनी एक एक सौसमें हक़ सुबहानहूका ज़िक्र अदा करते रहेते हैं, किसी शायरने क्या अच्छी बात कही है-

ग़ाफ़िल ज़े ऐहतियाते बज़स यक़ बज़स मबाश
शायद हमी बज़स बज़से वापसी बूतद

ऐ ग़ाफ़िल अपनी सौसकी आमद व शुदसे एक सौसके लियेभी ग़ाफ़िल न रहे, हो सक्ता है के यही सौस तेरी ज़िंदगीकी आख़री सौस हो !
अफ़ज़लुल फ़बायद हिस्सा अब्बल 69 में तहेरीर है के-

हज़रत निज़ामोदीन अवलियाने फ़र्मायाके- बाबा फ़रीद रहेमतुल्लाह अलैह रावी हैं के, हज़रत कुतबोदीन बख़्तियार काकी अशी रहेमतुल्लाह अलैह फ़र्माते थे के- जो शरूस् बग़ैर क़दमोंके राहेहक़ पर चला वो मन्ज़िले मक़सूद पर पहुँच गया

और जिसने बौर ज़बान उसका झिज़ किया उसे नेमते विसाल हासिल हो गईं। जिसने बेऔख़ दोस्ताका ज़माल देखा वो हमेशाके लिये बीना हो गया। जिसने मुँहके बौर इसकी मोहब्बत की, शराब पी, वो मर्दे कामिल हो गया !

ख़्वाजा निज़ामोद्दीन (रह.) जब इस बात पर पहुँचे तो ज़ारज़ार रोये और फ़र्मावाके- मर्दे कामिल ख़्वाह खिलवतमें हो या जलवतमें कोई दम ऐसा नहीं गुज़ताकि वो अर्षके सुतूनको नहीं हिलाता और इसका शौर आलमे मलकूतमें बर्पा नहीं होता !

इस पर हज़रत अमीर खुसरो (रह.) हुज़ूरकी इजाज़तपर ख़्वाजा निज़ामी (रह.)के दो शेर अर्ज किये-

घूँमस्ते सिल्सलतश् ग़श्ती फ़लक रा क़ीमा बर्हम ज़न
सुतूने अर्ष दर जिम्माँ तनाबे आसमाँ दरकश
तरीक़श बे क़दम मीरी हदीशश बेज़बाँ मीनो
हिजाबश बेबसर मीबी शराबश बे वहाँ दरकश



Janasheer-E-Quadeer Saheb
Quadeeri Halkatta Shareef

(G/Son) Nabeerah Kareemi Amanullah
Quadri, Chittagutta Shareef

(G/Son) Nabeerah Quadeer Abu
Turab Quadeeri Halkatta Shareef



مفت محمد رفیع الرحمن صاحب
 مولانا محمد رفیع الرحمن صاحب
 مولانا محمد رفیع الرحمن صاحب

मय्यसर जिसको अज़मे बेकरी है
 वो मुन्सों राकब आसपे ज़मी है
 हवे कौबोंमकों जिसपर तिरौ है

यही असल नकों व लामकों है

मकों क्या छे हैं अन्दाज़े बयौ हैं

(इल्बाल)

हदीस शरीफ : अना मदीनतुल उल्मा अलीयुम बाबोहा हुज़ुरे अकरम
 स्वल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमका इश्राद है- मैं राहेर हूँ इल्मका, अली (रजि.)
 इसका दरवाज़ा हैं. कौले अली (रजि.) मन अरफ़ा नपसह फ़कद अरफ़ा
 रब्बहू ○ जिसने जाना अपने आपको उसने जाना अपने रबको !

यही तालिमात सुफ़ियाके लिये हुसुले मारिफ़त हैं. मौजिब इश्राद हैं पीराने
 सलासलकी नेमतोंसे मुशरफ़ होनेके बाद हज़रते कदीरने इतेबाये नबवी (स्व.) में
 अपनी जिन्दगीको सिपूर्दे खिदमते ख़ल्क कर दिया. आपने अपनी आपबीती खुद
 अपने कलमसे तहेरीर फर्माई, जिसमें एक मुफ़त्सल जावेज़ाभी है. तालिमाते
 इफ़्तानीभी है. तशरीहाते रमुज़ कलम-ए-तप्यबाभी है. हज़रते कदीर (रह.) की
 तस्नीफ़ व तालीफ़ **गुलज़ारे कदीर** 27 मोहरमुल हरम 1371 हि. मुताबिक 29
 ऑक्टोबर 1951 ई. बरोज़ दोशम्बा शाया होकर मन्ज़रे आमपर आयी. मकबुले
 खास व आम रही. 1956 ई.में जिसका दूसरा एडिशन हज़रते कदीरने शाया
 किया, तीसरे एडिशनका काम जारी था, उसी अस्नामें विसाल हुवा. इसके बाद
 खादिम हके खिदमत व निस्वतके तहेत अहेले सिलसिलाकी माविनतसे कामको
 जारी रखा. बहमदोलिल्लाह तीसरा एडिशन 1979 ई., चौथा 1984 ई., पाँचवा
 व- ज़बाने हिंदी 1986 ई., छठवाँ 1989 ई., सातवाँ 1991 ई. आठवाँ 1996
 ई., नववाँ 1997 ई. में शाया किया गया. गुलज़ारे कदीर कई मोतेबर कुतूबके
 हवालेसे आरास्ता है. मिसबाहुल हयात, बरहानुल हकायक, मख़ज़नुल अन्वार
 गंजे असरार, शम्सुलआरेफ़ीन, बोस्तानुल आरेफ़ीन, सही बुखारी शरीफ़, सही
 मुस्लिम, तज्जेकरतुल अवलिया, मकासेदुल इस्लाम, जैसी मोतेबर कुतूबसे
 इस्तेफ़ादा किया गया है.

गुलज़ारे कदीर बार दुक्कम नैशनल फ़ाईन प्रिंटिंग प्रेस, चार कमान हैदराबादमें
 शाया हुई. (कातिब रसीद नवाब साहब) गुलज़ारे कदीर चारें सुक्कम ता नहुम
 एजाज़ प्रिंटिंग प्रेस, छता बाज़ार, हैदराबादमें शाया हुई. (कातिब वलीउद्दीन
 साहब) मोहतरम सय्यद नूर मोहम्मद कादरी साहब व बिरादर एजाज़ प्रिंटिंग प्रेस
 का एहसान है के हर वक़्त हर कदम पर साथ दिया. मौला ताला ज़जाये ख़ैर अता

फर्माये ! आमीन !

तजकेरये कदीरके तसलमुलको कायम रखते हुये बारगाहे फैज हजरता अशरफजहाँ मौ साहेबा रहेमुतल्लाह अलैहा कुर्सी शरीफ (इलाका कर्नाटक) में 4 रज्जब 1374 हि.को हजरते कदीरकी हाजरी बेहद अहेमियतकी हामिल है. जिनके तफसिली वाकियात आप गुलबारे कदीरमें मुलाहेजा फरमायेंगे.

हजरते कदीर (रह.)ने बसद अकीदत बारगाहे हजरता अशरफजहाँ मौ साहेबा कुर्सीशरीफमें ये अर्जी रखी. दुवा माँगी थी के- तोगरये पंचरंगीको आलममें पेश करें ! बहमदअल्लाह दुवा मकबूल हुई !

1956 ई.में हजरते कदीरने दुनियाके 178 मुमालिकमें तोगरये पंचरंगीको खाना किया. हजरता अशरफजहाँ मौ साहेबा (रह.) के पीरो मुर्शिद हजरत शेख सिराजोद्दीन जुनेदी (रह.) (गुलबर्गा शरीफ) हैं. हजरते कदीर (रह.) इन बारगाहों पर खुद हाजरी देते और अपने मुरीदको लेजाते, सिलसिलये तरीकतकी वुसअतें इन्ही बुजूर्गाने दीनके फैजानका मजहर हैं. क़रामत दरअसल इस्तेक़ामत है. जब किसीकी निगाहे फैज पड़ती है, तो दुनियाबदल जाती है ! हजरते कदीर (रह.) की जबाने मुबारकसे सुना हुवा एक वाक़ेबा बेशक क़रामते ख़्वाजये ख़्वाजगान है. निस्वत कादरी व चिश्ती का फैज बहमदअल्लाह कारफ़र्मा है. हजरते कदीर अपने मुरीदीनके हमराह ख़िलाफ़तसे सरफ़राज होनेके बाद बारगाहे हजरत ख़्वाजा मुइनोद्दीन चिश्ती (रह.) अजमेर शरीफ़ बमौक़ये उर्से मुबारक हाजरी दी. 7 दीन क्रियाम रहा. एक तड़प थी के दीदारे गरीबनवाज़ होजाये ! जब हजरते कदीर अजमेर शरीफ़से वापस अपने मक़ाम हलक़ड़ा आये, करीबही का मौज़े बलवाड़ी में अपने एक मुरीदके घर ख़्वाब देखते हैं- के हजरत गरीबनवाज़ तशरीफ़ लाये और पुछ रहे हैं आप अजमेर शरीफ़ आये. हमारे दीदारके लिये आपने क्या देखा ? हजरते कदीरने बसद इज़्जो अदब फ़रमाया- हुज़ूर आपके आशिकोंका मेला या ख़्वाजाके इस्करमें मग्न नज़र आ रहा था, जा रहा था. हजरतने फ़रमाया- देखा मन्ज़र वो सब हमही हैं ! जब आप तन्हा हो, तो अब आना ज़रूरी है ! कहेकर अपने दस्ते मुबारकसे चंद खानेके लुक्मे हजरते कदीरके हाथमें रखे. कहा- खालो हजरते कदीरने वो नेमत नोश फ़रमाई. अल्लाह अल्लाह क्या शाने ख़्वाजगी है. क्या नवाज़िश है ! क्या अता है !

अता ठेरा लुटफ़े करिश्मासाज़ करे

वो जिसको चाहे वो आलममें सरफ़राज करे

हजरते कदीर फर्माते थे के तीन माह तक हाथमें इस नेमतकी ख़ुराबू रही. ये

यक़ीनन् निस्वतोंका फैज है. हजरते कदीर तरीक़तकी दुनियामें क़दम रखनेके बाद कई आजमाईशोंसे दोचार रहे. साबित क़दमीहीसे मन्ज़िल मज़सुद मिलती है. सरज़मीने गुलबर्गा शरीफ़ ख़्वाजा बन्दानवाज़ गेमुदराज (रह.)के फैजानका मर्कज़ है. हजरते कदीर हजरते ख़्वाजये दकनके हर उर्से मुबारकमें हाजरी देते. अपने मुरीदीनके साथ शिरक़तकी सआदत हासिल करते. बादशाह कादरीको हर ख़ास व आम जानते थे. जब दुख़तर हजरते कदीर हाफ़ेज़ा बीबी यमनी विसाल कर चुकी थीं. ---

खादिम तवल्लुद हुये, चंद यौम हुये थे. 1943 ई. की बात है. हजरते कदीर अक्सर बुजूर्ग सन्जादानशीन बारगाहे बन्दानवाज़ हजरत सय्यद शाह हुसेन मोहम्मद अकबर मोहम्मद मोहम्मदुल हुसेनी साहब क़िबला मदज़िल्लू खैर बन्दानवाज़ी साहबकी खिदमतेवालामें हाजरी देते. दुवाओंसे मुशरफ़ होते. एक दिन हजरत खैरसाहब क़िबलासे मौज़े हलक़ड़ा चलनेकी दरख़्वास्त की हुज़ूरेवालाने बन्दानवाज़ी फ़र्माई. मारुजा क़बूल फ़र्माया सुनते हैं. हजरते कदीरने सन्जादानशीन साहब क़िबलाको बड़े अहेतराम व अहेतमामसे जुलूसके ज़रिये गुलबर्गा शरीफ़ ता वाड़ी स्टेशनसे हलक़ड़ा ले गये. हजारों मोतेक़दीनका जुलूस था. तीन दिन हजरत क़िबलाका क्रियाम हलक़ड़ामें रहा. महेफ़िले समा नियाज़मंदोंकी हाजरी एक अजब मंज़र था. हजरत क़िबला हजरते कदीरपर क़रम नवाज़ थे. इस वक़्त हजरते कदीरने खादिमको हजरते खैरसाहब क़िबलाके क़दमों पर झाला और दुवाओंके तलबगार रहे. इसी दिनकी क़बुलियत है के शर्फ़े गुलामी नसीब हुयी ! 1375 हि.में खादिमको ख़िलाफ़तसे सरफ़राजी हुई. तफ़रीलात आगे मुतालामें रहेगे. यही सिलसिलये क़रम बन्दानवाज़ी है के सबसर अता दर अता होती रही ! जानशीने हजरत खैर क़िबला गाहीं तकहुस मआब हजरत सय्यद शाह मोहम्मद मोहम्मदुल हुसेनी साहब क़िबला सन्जादानशीन रोज़ये बुजूर्ग गुलबर्गा शरीफ़, जानशीने सन्जादानशीन सय्यद शाह खुसरू हुसेनी साहब क़िबला, फ़ज़ीलत मआब अबुलफ़ज़ल हजरत सय्यद शाह क़बुलुल्लाह, मोहम्मद मोहम्मदुल हुसेनी साहब क़िबला सन्जादानशीन रोज़ये मुनव्वरा ख़ुर्द गुलबर्गा शरीफ़ उर्से कदीरके मौक़ेपर दुवाओंसे सरफ़राज करने क़दम रंजा फ़रमाते हैं.

बुजूर्गाने मिल्लतकी दुवा और नज़रे करीमीसे निज़ाम कदीरी सरसब्ज़ व शादाब होता गया. हजरते कदीर हर साल 21 रब्बिउस्सानी अपने पीरो मुर्शिद हजरत ख़्वाजा शेख़ करीमुल्लाह शाह कादरी, अल्चिश्ती (रह.) चिटगुप्पाका

उसमें मुबारक मनाया करते, जो सिलसिला आज तक जारी है। और 19 जिक्रदा अपनी साहेबजादी सय्यदा हाफेजा बीबी का उस हलकडामें मनाया करते। इन दो मराकिजपर तमाम खुलफा, मुरीदीन व मोतकदीन हाजरी देते। इन्हीं मुकामात पर इजराये खिलाफतका एहेतेमाम हुवा करता। फुकरा और मशायख मौजूद रहेते।

हलकडा और करीब कब्रों जवारके देहातसे हजरते कदीरका शहर हैदराबाद, बरंगल, पुनाका सिलसिलये आमदो एह जारी रहा। जिन जिनके नसीबमें दीलते मन अरफ़ लिखी है वो अपना अपना हिस्सा पाते। बकौल ख्वाजा शौक साहब के-

करमकी औँख नहीं देखती लिबासोंको
खुलूसे बिच्यते साइल तलाश करती हैं

अताको उनके भला कौन रोक सकता है
वो जिसको चाहे वो आलममें सरफराज करे

वालेदी मुर्शिदी हजरत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, विशी, यमनी, कदीने बमौकये उसमें करीम, चिटगुप्पा ब-तारीख 22 रब्बिउस्सानी 1375 हि. मुताबिक 1955 ई. बरोज पंचशम्बा खादिमको रुबरू फुकरा व मशायख हुज्जारे मजलिसके, खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाइयासे सरफराज फरमाया। इसमें तरीकका एलान हुवा-

सय्यद इब्राहीम शाह कादरी, यमनी

साथही मेरे छोटे बहिनोई साहबको खिलाफते कादरिया, आलिया खुलफाइयासे हजरते कदीने नवाजा ! एलान हुवा-

मोहम्मद अब्दुल करीम शाह कादरी

22, रब्बिउस्सानी 1375 हि. मुताबिक 1955 ई. ही को हजरते कदीने सय्यद अमीर कादरी साहब हैदराबादीको खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाइयासे सरफराज किया। एलान हुवा-

सय्यद अमीर शाह कादरी (पीर)

हजरत पीर साहबने हजरते कदीर (रह.) की खिदमतमें क्या अच्छा शुकराना पेश किया है.



Hazrath Quadeer



Hazrath Quadeer and Hazrath Saheb Quadeer



CHITTAGUPPA SHARIEF
TQ. Hamnabad Dist. - Bihar, K.S.

जोभी तेरे कदीर होते हैं
वे तो कामिले फकीर होते हैं
उबकी इक सांस इक जमाना है
वे अमीरो कबीर होते हैं
सभी तेरा करम कदीर अल्लाह
वरना क्या कोई पीर होते हैं ?

(पीर हैदराबादी)

सरफराजी आपकी अदनाको आला कर दिया
क्या जलाई शम्मा के घर घर उजाला कर दिया
देन उबकी देन हैं साहिब अताकी बात हैं
इक बज़रमें आपने अल्लाहवाला कर दिया

(साहिब कदीरी)

तज्जेरये कदीरका मकसुद दीरे कदीरकी यादोंको ताज़ा करते हुये फ़ैजेयाबे सोहबत होनेवाले बुजर्गोंकी ख़िदमतमें ख़िराजे अक़ीदत पेश करते हुये अहेले सिलसिलाको रुशनास करवाना मकसुद है के जोभी आज है वो कलकी बदौलत है. अगर हम कलको फ़रामोश कर दें, तो आज कहाँ बाक़ी रहेनेवाला है. उसके बाद फिर एक कल है.

जो था बही है जो है न होना यही है एक हुर्क मेहरमाना
करीब ठर है बमूद जिसकी उसीका मुश्ताक है जमाना

(अल्लामा इक़्बाल)

हज़रते कदीरके मकसदेकारको सोहबत आशनाये कदीर बख़ुबी जानते हैं. राहे तरीक़ अपने उसूल व नवाबिदसे पायेदार होती है. बुजर्ग हकीम मस्तान शाह कादरीके फ़ज्रद हकीम मोहम्मद हनीफ़ शाह कादरी, अल्विशती चिटगुप्पाका रब्बे तरीक़ 1370 हि.से रहा. तस्दीक़ ख़िलाफ़त बमुक़ाम चिटगुप्पा 22, रब्बिउस्सानी 1389 हि. मुताबिक़ 8, जुलाई 1969 ई. है. आप हज़रते कदीरके कदीम साथी निज़ाम उर्से करीमीके ख़िदमतगुज़ार थे. मशहूर व मारुफ़ रहे. चिटगुप्पाहीमें आराम फरमा हैं. दीरे कदीममें ख़िलाफ़तसे सरफ़राज होनेवाले महिबुब शाह कादरी नुसरती मौजे कासालभी है. ख़लिफ़ा हज़रते कदीर मोहम्मद मख़दूम शाह कादरी, चिशती साकिन सीरूर, ज़िला गुलबर्गा शरीफ़ 22, जमादिलउव्वल 1372 हि.में ख़िलाफ़तसे मुशरफ़ हुये. तान्हीमें काफ़ी अरसा गुज़ारा. अलंद शरीफ़मेंभी हज़रतका सिलसिला रहा. हलक़ाटके मुल्ला

घरानेमें भी अजीजदारी थी। बाबंद सोम व सलात अण्ठे खुबीयोके हामिल थे। बहमदअल्लाह सिलसिला दराज रहा। खादिमसे चिश्ती निस्बत रखते थे। हजके लिये मक्का मुकर्रमा तशरीफ ले गये। 7, जिलहज्जा 1416 हि. में मक्का मुकर्रमामें विसाल फरमा गये। जन्नतुलमालामें आराम फरमा हैं। खलिफा हजरते कदीर, हजरत शेख मोहम्मद बादशाह कादरी अल्चिश्ती उर्फ मौलाना साहब मुगदनगर हैद्राबादमें रहा करते थे। 28, रब्बिउस्सानी 1372 हि. को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाईयासे नवाजे गये। हजरत का निजामाबाद व कई इलाक़ोंमें कसीर सिलसिला है। बेहद खलिक फकीराना जिन्दगी सब्रो तबक्कलके खुश आपके हिंदू व मुस्लिम सभी मोतेकद थे। आपको भी खादिमसे चिश्ती निस्बत रही।

22, रब्बिउस्सानी 1404 हि. मुताबिक 26, जनवरी 1984, बमुक़ाम चिटगुप्पा चिश्ती खिलाफतसे मुशर्रफ रहे। मज़िये मौला अजहमाउला-

बतारीख 5 मोहर्मुल हराम 1420 हि. मुताबिक 22, एप्रिल 1999, बरोज जुमेरात विसाल फरमा गये। 6, मोहर्मुल मुताबिक 23, एप्रिल बाद नमाजे जुमा बमुक़ाम कन्नरकाशाना हयातमें सिपूर्दे लहद हुये। बतारीख 22, रब्बिउस्सानी 1376 हि. बमुक़ाम चिटगुप्पा, बमौक़ये उर्से करीम हजरते कदीरने मोहम्मद अब्दुलहमीद शाह चिश्ती मंगलगीको खिलाफते चिश्तीयासे नवाजा। मौजे मंगलगीमें विसाल फरमा गये। वहीं आराम फरमा हैं।

तइप मन्जिल उसीकी राहपर लाटी है राहीको

सरे मन्जिल कशिश मन्जिलको पहुँचाटी है राहीको

लजब कुछ मन्जिले बौ की भी तइपाटी है राहीको

कभी छोड़ी हुई मन्जिलभी याद आटी है राहीको

अटक सी है जो सीबेमें गमे मन्जिल व बन जाये

(इक्बाल)

दौरे कदीरका मुकम्मिल एहाता करना दुश्वार जरूर है। लेकिन बरसहा बरस का मुशाहेदा और हजरते कदीरसे मालूम किये हुये हालातको सिपूर्दे कलम करनाभी तक्मिले गुलामी है। महेफिले कदीर पुना, दौरे कदीमसे लेकर आज तक अपने खिदमातको जिस अंदाज़से बरूयेकार लाई है, वो यकीनन नक्शे जाविद है।

खलिफये हजरते कदीर- हजरत मोहम्मद सलीम शाह कादरी साकिन पुना।

बमुक़ाम चिटगुप्पा 21, रब्बिउस्सानी 1376 हि. मुताबिक 25, नवम्बर 1956 ई. को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाईयासे नवाजे गये। बड़ी

खिदमतें अन्जाम दीं, जिनके सिलसिलेसे बाबस्ता अहेले निस्बत आजभी महेफिले कदीर पुनाका विकार हैं।

26, रमजानुलमुबारक शबे कदर, मुताबिक 16, दिसंबर बरोज जुमेरात विसाल फरमा गये। एहाता कन्नरस्तान रोशन मस्जिद पुनामें आराम फरमा हैं। इसी तरह 21, रब्बिउस्सानी 1376 हि. मुताबिक 25, नवम्बर 1956 ई. हीको हजरत शेख मदार शाह कदरी साकिन पुनाने हजरते कदीरसे नेमते खिलाफते कादरिया पायी।

इन हजरातके घर हजरते कदीर पुनामें क्रियाम फरमाया करते। हजरत शेख मदार शाह कादरी साहबही की निस्बतसे सिलसिला केरलाके इलाक़ोंमें भी पहुँचा। आपने हजरते कदीर और अहेल व अयाले कदीर (रह.) की बड़ी चाहत व कदरदानी फरमाई।

19, शब्वाल 1396 हि. मुताबिक 14, अक्टूबर 1976 ई. बरोज जुमेरात विसाल फरमा गये। रोशन मस्जिद पुनाके एहातामें आराम फरमा हैं।

झिरदमें रोशनी आती है तेरे दरके सज्दोंसे

उसी मन्जिलमें आकर अकल ठोकर खा बही सवती

अजलकी बात इक बकले सुकामीके सिवा क्या है

जो तुमपर मर जित्त फिर मौत उसको आ बही सवती (इक्बाल)

सज्जमीने पुनाकी बात चली है तो हजरत शेख मोहम्मद शाह कादरी (रह.) भोपालवालोंको याद करना तजकेर कदीरके तकाज़ेको पूरा करना होगा। हजरत शेख मोहम्मद शाह कादरी भोपाली, हजरते कदीरके 39 वें खलीफा हैं। आलिमाना शख्सियत हैं। जिनके घरका बच्चा बच्चा हाफ़िजे कुरआन है। बड़े फ़ज्रद जनाब हाफ़िज अशफ़ाक मोहम्मद शाह कादरी मुशहदी सरजमीन भोपाल की सरगमें अमल शख्सियत है। आप अपने वालिद बुजर्गवारसे पहले हजरते कदीरके खलीफा मुतखब हुये। खादिमसे चंद साल पहले अंदाज़न् 1374 हि. में खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाईयासे पुनामें मुशर्रफ हुये। अहेले इल्मका बसी तब्का भोपाल व दिगर इलाक़ोंमें आपके हलक़ये फैज़में शामिल रहा। आप 11 सालकी उमरमें हाफ़िजे कुरआन हुये। बेहतरीन कारी, भोपालकी कई तन्जिमाँसे बाबस्ता रहे। अख़बार अयाज़के एडिटर हैं। आपहीके अहेबाबमें मोहतरम आरिफ़बेग कादरी भोपालीभी हैं, जो अपने दौरेके मिनिस्टर रहे। सय्यद अहेमदअली कादरी भोपाली, सिलसिलये आलियाके मुख़लिस खिदमतगुज़ार गुज़रे हैं। इन हजरातने हजरते कदीरके अफ़कारातको अहेले कदरके दिलोंतक

पहुँचानेकी हर मुमकिन सजी की. मोहतरम सय्यद शाह रफअतुल हुसेनी कादरी साहब सादात घरानेके बुजुर्ग भोपालके नामवर शोअरामें शुमार किये जाते हैं. आप हजरते कदीरसे शर्क खिलाफत रखते हैं. जिनके कलाम तजकेरये कदीरमें पेश हैं.

जनाब हाफिज अश्फाक मोहम्मद शाह कादरी और आपके वालिद बुजुर्गवार हजरत शेख मोहम्मद शाह कादरीकी काविशोंसे हजरते कदीर कई मर्तबा भोपाल तशरीफ ले गये. इकरातुम् बिल्लिसान, तस्टीकुम् बिलकल्ब की दावत को अपने आरिफाना अंदाजमें पेश किया. शशजहेतके निकातसे कुलूबको तस्कीन बख्शी.

तेरे दमसे हैं रौबके शश जहात

बयोंसेभी बाहर हैं तेरी सिफात

अगर तू सुनेतो कई एक बात

बता मुझको असारे मर्गों हयात (इज्वाल)

के तेरी जिताहों में हैं कायबात

रब तबारक तालाकी मर्जी है, मौला जिससे चाहा काम लेता है. बसारात व बसीरातसे नवाजता है. हजरत शेख मोहम्मद शाह कादरी साहबका काफ़ी अर्सा हजरते कदीरकी सोहबत व खिदमतमें गुजर. सिलसिलये कदीरियाका हर फ़र्द आपको भोपालवाले साहबके नामसे जानता है. जिला महिबुनगरके इलाक़ोंमें भी आपका कसीर सिलसिला रहा. आप 17, रब्बिउलअव्वल बरोज जुमा 30, सितम्बर 1991 ई. जिला महिबुनगरमें विसाल फ़रमाये. आपको यहाँसे भोपाल पहुँचाया गया. भोपालहीमें आख़री आरामगाह है.

भोपालवाले साहबके छोटे फ़ज्रद हाफिज इस्हाक मोहम्मद कादरी कमाल अच्छे शायर, बेहतरीन आलिम, काबिल अदीब हैं. बात पुनासे चली तो भोपाल तक पहुँची. फिर खियाल पुनाकी फ़िजामें लीट आया. सिलसिल-ए-कदीरके कदीम मोहसिन रसूल पटेलसाहब कपनूरावाले मुकाम खंडालागें इमामत फ़र्माते थे. रसूल पटेलसाहब कादरी आलिम थे. हजरते कदीरके अव्वलीन मुरीदोंमें आपका शुमार है. मुकाम पाली महाराष्ट्राकी एक हरदिल अजीज शख्सियत महेमूद अब्दुलकरीम साहब पालीवाले, रसूल पटेलसाहबका खिताब सुनने खंडाला आया करते थे. साहेबेनिस्बत बुजुर्गनि रहेनुमाई फ़र्माई, और हजरत महेमूद अब्दुलकरीम कादरी साहेब, रसूल पटेलसाहब कादरीके हमराह पुना

आकर हजरते कदीरके दस्ते मुबारकपर बैअत की, और अपने वालिदैनको मुरीद करवानेके लिये हजरते कदीरको पाली ले गये. उस वक़्त हजरत शेख मदारशाह कादरी साहब हमराह थे. हजरत महेमूद कादरी साहबकी खिदमत व मोहब्बतसे एक वसी हलका सिलसिलये कदीरियासे वाबस्ता हुवा. सभी बिरादराने सिलसिला आपको पालीवाले महेमूदभाईके नामसे जानते हैं. आपही वो मुरीद सादिक हैं, जिनको हजरते कदीरने अपना आख़री ख़त तहेरीर फ़र्माया था.

तुजरे हुये ज़मावेकी यादें हैं सेंकड़ों

दमबबमें अपने सब लिखे बैठ गये हैं

(साहेब कदीरी)

इसी दौरमें हजरते कदीरसे फ़ैजेयाब होनेवाले एक जानिसार कदीर दर्दमंद सिलसिला शेख मोहम्मद अहेमद साहब हैं. जो मौज़े (बिजना पल्ली) जिला महिबुनगरके मुतवतिन हैं. कई सलासिलसे नियाज़मंदी रखते थे. अपने इलाक़ोंमें बहुत मक़बूल थे. आप हजरते कदीर (रह.)से रुजू होकर तालिब हुये, और 23 रब्बिउस्सानी 1388 हि. मुताबिक 20 जुलाई 1968 ई. को बमुकाम चिटगुप्पा खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईया व चिश्तीयासे सरफ़राज हुये. एलान हुवा ख़्वाजा शेख मोहम्मद अहेमद शाह कादरी अलचिश्ती (बिजना पल्ली) बहमदअल्लाह आपके सिलसिलये कदीरियासे वाबस्ता होनेके बाद काफ़ी सिलसिला हजरते कदीरका इन इलाक़ोंमें रहा. बुजुर्ग हजरत मोहम्मद कासम साहब कादरी गीरारम, अहेमद साहब कादरी बिजनापल्ली, सुल्तान साहब कादरी बिजनापल्ली, मौलाना यूसुफ़ कादरी, बिरादर हबीबअली कादरी बिजनापल्ली, अमीर अहेमद कादरी, इस्हाक कादरी, नागर फ़रनुल्में रामन्ना गौड़ साहब और आपके अफ़रादे खानदान कदादी रहे.

वनपरतीमें सुबहान कादरी साहब, इस्माईल कादरी साहब, सय्यद साहब कादरी, मोहम्मद साहब कादरी, उमरु साहब कादरी, मौलवी ग़फ़ूरसाहब कादरी, अलीयान कादरी, हसन कादरी, ख़्वाजा मुइनोद्दीन कादरी, मोहम्मद ग़ौस शाह कादरी, जो अहेमदशाह कादरीसाहबके ख़लिफ़ा थे. कुत्ताकोटामें अजीज खानसाहब कादरी, अब्दुल ग़फ़ूरसाहब कादरी, फ़ज्रद कदीरपाशा कादरी और सुल्तान ख़ानसाहब कादरी व बिरादर. मीर याक़ुबअली कादरी खम्माम, महेबुब नगरमें हाफिज हलीमोद्दीन कादरी कैसर, मोहम्मद जहाँगीर कादरी, बुजुर्ग ग़फ़ार साहब कादरी, शाहअली कादरी पहेलवान, ख़्वाजा मुइनोद्दीनसाहब कादरी घनपूरा, अहेले सिलसिला मानाजी पेठ सोलीपूर, शेकारिया साहब व फ़ज्रदान

परसाद साहब व बिरादर मदनपुर, सोलीपूरमें जाफरसाहब कादरी, मिरयाल गुदा सईद कादरी, लछमय्यासाहब हैदराबादी श्री सेलम हसनोद्दीन साहब कादरी, मोहम्मद तौस साहब कादरी, अजीमोद्दीन कादरी, जव्वाद कादरी साहब, मोहम्मद जाविर कादरी. इसतरहा एक वसी हलका शामिले सिलसिला रहा. इस्हाकउल्लाह हुसैनी नलगुंदा, सईद कादरी अच्छम पेठ.

हजरत शेख मोहम्मद अहेमदशाह कादरी, अलचिश्ती बड़ी खुबियोंके शामिल थे. आपकी तबियतमें हरदिल अजीजी थी. हिंदू व मुस्लिम भाई सभी आपसे अक़ीदत व मोहब्बत रखते थे. आपका विसाल 10, शव्वाल 1416 हि. मुताबिक यक़म मार्च 1996 को हुवा. अपने पीर व मुशिब हजरते कदीरकी कुर्बत नसीब हुई. ओहातये आस्तान-ए-कदीरी हलकहा शरीफमें आराम फ़र्मा हैं.

**बसमें बही है अपने कोई फ़ैसला करें
वो चाहेंगे तो हमको बुला लेंगे इस तरह**

(साहेब कदीरी)

तज्जेकरये कदीर माजीसे हालको रुशनास करता है और बताता है के फ़ैजानके चश्मदीद नजारे कैसै हैं !

हजरते कदीरके कदीम मोहसिन हजरत डॉक्टर मोहम्मद नज़र महेबूबशाह कादरी साहबको हजरते कदीरने बमौक़ये उर्स हाफ़िज़ा बीबी (रह.) बमुक़ाम हलकहा 20 ज़िकादा 1379 हि. मुताबिक 17, मे 1960 बरोज़ मंगल ख़िलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईयासे सरफ़राज़ फ़रमाया.

एलान हुवा- मोहम्मद नज़र महेबूबशाह कादरी. आप हजरते कदीरके कदीम ख़िदमत गुज़ारोंमें हैं. जिनका ज़िक्र आप पहेले पढ़ चुके हैं. हारिस साहब कादरी हैदराबादीने आपकी ख़िलाफ़तपर यादगार तहेनियत पेश की थी. मेजर मोहम्मद याक़ुब साहब कादरी और डॉक्टर मोहम्मद नज़र महेबूबशाह कादरी साहब व बिरादरने 1956 ई.में हजरते कदीरकी बड़ी मावनत फ़रमाई. जबके हजरते कदीरने दावते फ़िक्रके उन्वानसे आलममें अपने अफ़कारातको पेश किया था. डॉक्टर नज़र महेबूबशाह कादरी (रह.)का विसाल 28, सफ़र 1404 को हुवा. आप हैदराबादमें बमुक़ाम (फ़ैज़ुलनज़र) भोरमपेठमें आराम फ़रमा हैं.

**वक्तकी बात है जाने है मुक़दर कितने
करवटें वक्तकी तकदीर बकल देती है**

(साहेब कदीरी)

सज़मीने हलकहाकी निस्बतने एक ऐसी शख्सियतको उजागर किया, जो इल्मी फन, शैरी अदबमें परवाज़ शाहीन रखते थे. जिनका नाम नामी इस्मे गिरामी सय्यद मोहियोद्दीन साबिर तवक्कली शाहीन है. आप ज़िला करीमनगरके वाशिदे थे. हजरत हाफ़िद खान साहब कादरी, जर्मीदार जमिकुंठाके ज़रिये हजरते कदीरसे मुलाक़ात की. एक दिनका वाक़ेया है- हामिद खानसाहबके घर महेफ़िले समा मुनक्किद थी. एक मुख़लिस क़व्वाल सय्यद कलीमुल्लाह कादरी साहब हजरते कदीरके रुबल साबिर तवक्कलीका कलाम सुना रहे थे-

**हर लम्हा मये वहेदतकी क़सम मैज़ाने सजा कर पीते हैं
नज़रमें बसा कर पीते हैं पलकों मुपा कर पीते हैं
पी लेते हैं चप्पे साकीसे मिल जाती है जो कुछ महेफ़िलमें
ये शेख़ो ब्रह्मज क्या जाने क्या औंस मिलकर पीते हैं
तुस्तास बिवाहीका साकी महेफ़िलमें कोई इल्ज़ाम व दे
परवाबा सिफ़त मदहोश तेरे कब होशमें आकर पीते हैं
वो साग़रो मीठा क्या जाने जो तेरी परस्तिश करते हैं
पीते हैं तो हर ज़रमें तेरी तस्वीर बनाकर पीते हैं
मैज़वार वही सरशार वही सरसस्त मये अरशार वही
जो तेरी नज़रके सदकेमें हर दर्द बिभाकर पीते हैं
ऐ वैरो हरमके मतवालों ये बादाह परस्ति शेख़ बही
ये ज़ाम उन्हीको मिलता है जो सुदको मिलाकर पीते हैं
ओ जाते हैं साबिर कुछ ऐसे फिर आपकोभी वो पाते बही
जो अपने वजूदे मस्तिफ़को सुद सामने पाकर पीते हैं**

जब हजरते कदीरने साबिर साहबका मज़ता सुना, बेहद मुतासिर हुये. हामिद खान साहबसे फ़रमाया- करीमनगर जाइये और साबिर तवक्कली शाहीन साहबको बुलवा लाइये.

**याद ऐसी की कदीरउल्लाहने
भूल सकताही नहीं कोई उन्हे**

बिलआख़र शाहीन साहब ख़िदमते कदीरमें आ पहुँचे. ऐसे आयेके कदीरहीके होकर रहे गये. उस ज़मानेमें हजरत शेख़ मोहम्मद शाह कादरी साहब भोपालीभी हजरते कदीरके हमराह थे. तीन दिनतक खूब इल्मी व इफ़्तानी गुफ़्तगू

रही. जमीकुंटा में साबिर तवक्कली शाहीन साहब हजरते कदीरके दस्ते मुबारकपर तालिब हुये.

हजरते कदीरने ब मौकये उर्स हाफेजा बीबी ब मकाम हलकड़ा 20 जिकादा 1379 हि. मुताबिक 17, मई 1960 इ. साबिर साहबको खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाईयासे सरफराज फरमाया.

एलान हुवा-

सय्यद मोहिउद्दीन शाह कादरी (साबिर तवक्कली शाहीन)

सिलसिल-ए- कदीरियाका हर फर्द आपके खिदमात कारनामोसे बखुबी वाफिक है. आपके वालिद बुजुर्गवार हजरत सय्यद अब्दुलमन्नान शाह कादरी चिस्ती, रफाई साहब किवला एक जय्यद आलिम बुजुर्ग मशायख गुजरे हैं, जो हजरते कदीरके बेहद कदरदी थे. शाहीन साहबने हजरते कदीरकी बड़ी खिदमत अन्नाम दी. आपके इल्मी खिदमात अजहर मिनश्राम्स हैं. आप बेहद हरदिल अजीज थे. आपका सिलसिला करीमनगरके अलावा कई मुकामातपर जारी था. निजामे सिलसिलये कदीरियाके खुलफामें शाहीन साहब हजरते कदीरके वो खलीफा हैं, जो सबसे पहले सफे खुलफामें खिलाफत इजरा करनेका सिलसिला कायम किया. आपके खलीफा नसीरोद्दीन शाह कादरी करीमनगरी, अजीजुर रहेमान शाह कादरी इमाम रोशन मस्जिद पुना हैं. यूँ कहिये के खादिम की इल्मी तरबियत बफैज हजरते कदीर शाहीन साहब और शेख मोहम्मद शाह कादरी साहबकी तरबियत व सोहबतका समराह है. तजकेरये कदीरमें शाहीन साहबके कलाम जब आप मुलाहेजा फरमायेगे, शाहीनकी परवाज, नजरमें होगी. शाहीन साहब जिन्दगीके तलख तवक्कात माहोल व जमानेके हालातसे दोचार रहे. पेचोखम आपके कलामोंका मजमुआ है, जो शायी होकर मन्जरे आमपर रहा. जिसके कलमी नुस्खे आजभी बुजुर्ग सिलसिला सय्यद फखरोद्दीन कादरी अलकदीरी साहब अल्मारफ बापेशाकार साहब सैदापूरके हाँ महेफूज हैं.

पेशकार साहब हजरते कदीरके मुरीद सादिक हैं. सिलसिलये कदीरिया बुजुर्ग हैं. हजरते कदीरके विसाल पर बुजुर्ग सिलसिला हजरत ह्वाजा सय्यद अली शाह कादरी, चिस्ती, वरंगल और साबिर तवक्कली शाहीन साहबने अपनी जिमेदारी निभाई. खादिमकी जानशीनीका एलानभी उन्ही बुजुर्गोंकी पेशकश रहा.

हजरत साबिर तवक्कली शाहीन साहब बतारीख 19, मोहर्रम 1403 हि. मुताबिक 17 नवम्बर 1981 ई. को कसर शाहीन फतेहपूर करीमनगरमें विसाल फर्मा गये. आस्तानये हजरत सय्यद करीमुल्लाह शाह कादरी (रह.) करीमनगर के

पहेलूमें आराम फर्मा हैं. आपकी मजारे शरीफपर ये कत्बा लिखा है-

इसके शिवा कुछ और तारुफ नही मेरा

आईनये कदीरका अबसे जमील हूँ (शाहीन)

बरसबीले तजकेरा हजरत शेख मेहताब साहब कादरी, बीदरी जो हजरत कदीरके कदीम साथियोंमें हैं. 20, जिकादा 1379 हि. मुताबिक 17 मई 1960 को बमुकाम हलकड़ा (बमौकये उर्स सय्यदा हाफेजा बीबी (रह.)) हजरते कदीरसे मुरारिफ बखिलाफत कादरिया, आलिया, खुलफाईया हुये.

एलान हुवा- शेख मेहताब शाह कादरी (बीदरी) आपका मिजाज निहायतही सादा, नर्म गुफ्तार, अच्छे औसाफके हामिल थे. आपका कसीर सिलसिला है. कई खुलफा हैं.

टोफीककी बेगमसे सठेरभी खुलिस्टों है

टोफीक न हो हासिल सब देखिये वीरों है

आकर वो जरा देखे किस शानसे लेते हैं

कुर्बत है जिसे हासिल वो जाने बहारों है (साहेब कदीरी)

हजरते कदीरकी मोहब्बत थीके अपने रफिकको रफिके बीसाल बना लिया. हजरत शेख मेहताब शाह कादरी 8, सफर 1400 हि. मुताबिक 28, दिसंबर 1979 इ. बरोज जुमा पुनामें विसाल फरमा गये. अहेले अक्रीदत व साहबजादाने हजरतको आस्तानये कदीरीतक पहुँचाया. हजरतकी मजार आस्ताना कदीरीके अहातेमें है.

हजरते कदीर (रह.)के 42 वें खलीफा मोहम्मद नजीरोद्दीन शाह कादरी दुबलगुंडीवाले हैं, जिनको हजरते कदीरसे 25 जमादिलअव्वल 1379 हि. मुताबिक 27 नवम्बर 1959 ई.को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाईया हासिल हुई. आपका शमारभी सिलसिलये कदीरियाके कदीम खुलफामें होता है. मुरतलिफ मुकामातपर आपका सिलसिला जारी है. आपके खुलफाभी हैं. हजरते कदीरके सिलसिलेकी उसअत मकबूलियत जिले कड़पाके मुकाम परदोटूरतक पहुँची. खुद वालिदे गिरामी हजरते कदीर फरमाते थे- जाकिर सिकंदराबादीके भाई उमर साहब सिकंदराबादी, हजरते कदीरको पहेली मर्ताबा परदोटूर बुलवा ले गये. जबके हजरते कदीरका तारुफ अब्दुलकादर कादरी साहब शिकलगर मुरीद हजरत नुसरतुल्लाह शाह कादरी साहबके जरिये था. वहाँके कदरदी अहेबाबने

गुलजारे कदीर पढ़ी थीं। मर्जीये हक है अल्लाहने पीराने उज्जामके वसीले वहाँ काम ले लिया। हजरते कदीर परदोटूर पहुँचतेही सबसे पहले दर्गा हजरत सय्यद शाह हुसैन (रह.) पर हाजरी दी। आप परदोटूरकी बर्गजिदा हस्ती हैं। बहमदअल्लाह- आज कसीर सिलसिला परदोटूर कड़पाके कई इलाकोंमें आबाद है। ख्वाजा मियाँसाहब कादरी, मीलादख्वाँ अव्वलीन मुरीदोंमें हैं। जिनकी अवज्र आजभी हजरते कदीरके दुवावोंका सिला है- खूब सुनाते हैं ! काजी सय्यद मीर साहब कादरी, सईद साहब कादरी, दस्तगीर साहब कादरी, गौस साहब कादरी, इब्राहीम साहब कादरी मोड़मपल्ली, इबादुल्लाह साहब कादरी, हावी जरगर ख्वाजा हुसैन कादरी, महेबूब हुसैन कादरी, सय्यद जाफ़र कादरी साहब-जिल्लल्ला, उस ज़मानेके कदीम अहेले सिलसिला हैं।

इसी दौरान सादात घरानेसे बाबस्ता सय्यद सुल्तान साहब कादरी हजरते कदीरके हलक़ये इरादतमें शामिल हुये। हजरते कदीर बमुकाम चिटगुप्पा 22 रब्बिउलमासी 1383 हि. मुताबिक 11 सितम्बर 1963 ई.को खिलाफ़ते कादरीया, आलिया, खुलफ़ाइयासे नवाज़े गये। चिश्ती निस्वतभी हासिल रही।

एलान हुवा-

ख्वाजा सय्यद सुल्तान शाह कादरी, चिश्ती

आपका कसीर सिलसिला व खुलफ़ा हैं। बमुकाम बाग़ सुल्तान निज्द गुन्तकल क़याम पज़ीर हैं।

वरसे तेरे मिळ गई सब बेमते

जिसकोभी दाग़न मिळा सुल्तान है (साहेब कदीरी)

इलाका परदोटूरकी की वजेहसे हजरते कदीरके सिलसिलेका फैलाव होता गया। इस इलाकेके सिलसिलेवार खिदमात हैं। कड़पामें सय्यद जीलानी पाशा, सय्यद इमामोद्दीन कादरी, सय्यद तुराबोद्दीन कादरी, सय्यद कमरोद्दीन कादरी, नायब ख्वाजा मियाँ साहब कादरी, खान शाह वली कादरी, अब्दुल ग़फ़ूर कादरी, सय्यद मुनव्वर बाशा कादरी, अब्दुल कादर कादरी, अब्दुल हमीद कादरी, महेबूब दीला कादरी।

परदोटूरके कदीम अहेले सिलसिला सिमित सतारसाहब कादरी, चाँदपाशा साहब कादरी, मोहम्मद साहब कादरी, दौरे हाज़िरमें मस्तान साहब कादरी, कमाल साहब कादरी, रसूल साहब कादरी, जाफ़र हुसैन कादरी, शुकूरसाहब कादरी, मोहम्मद गौस कादरी, मीलाअली कादरी, कदीरपाशा कादरी, हसन कादरी, ख्वाजा पीर कादरी। परदोटूर एन्जेलूभाई, गोपालभाई, आनंदभाई, इमाम

साहब कादरी। चिंताकुंटा सय्यद महेबूब साहब कादरी, काजी पेट, प्रेसिडेंट महेबूब साहब कादरी, बुजुर्ग हुसैन पीरों कादरी, सय्यद जाफ़र साहब कादरी, पीर साहब कादरी, ख्वाजा कादरी, कासम हुसैनी कादरी, शरीफ़ कादरी, कदीर पाशा कादरी, कासम पीरों कादरी कुंडापेट।

महेबूबवली कादरी टीचर चन्नूर, गौस अहेमद कादरी, दाऊद कादरी वल्द पीरों साहब कादरी कमलापूर, पुरामेला। हुसैन साहब कादरी, सय्यद पीर कादरी, डॉक्टर कादावली कादरी, अब्दुल सतार कादरी, पेशइमाम, हुसैन अहेमद कादरी, नज़ीर कादरी, सतार कादरी, कदीर कादरी, नरसापूर। डॉक्टर शहेनशाह कादरी, मोहम्मद साहब कादरी, बदवेल बशीर खान कादरी, चिंताकुंटा। बिस्मिल्ला कादरी, फ़ज्द हजरत कासमशाह कादरी, कमरुल डॉक्टर गौस अहेमद कादरी वल्द मोहियोद्दीन साहब कादरी, जब्बार कादरी, अब्दुल कादर कादरी, एक लव्हील फ़ेहरिस्त है। जौ निसाराने कदीरकी जिन्होंने हजरत क़िबलाके हयात ताविसाल खिदमत गुजारी की। मेदकूर बाशा कादरी, सुबहान कादरी, चागलमारीमें ख्वाजा हुसैन साहब कादरी, वली कादरी, रहेमुतल्ला कादरी, नन्हे कादरी, बशीर अहेमद कादरी, गोड़ीपाड़ कमाल साहब कादरी, फ़कीर अहेमद कादरी, अमीर कादरी, जम्मलमुद्दुग़ हुसैन पीरों कादरी, ख्वाजा पीर कादरी, नज़ीर कादरी, गौस कादरी, ताड़पत्री जब्बार कादरी, व विरादर जमी अहेले सिलसिला। गुत्ती: वली कादरी अहेले सिलसिला, गुंतकल नबी साहब कादरी, महेबूब बादशाह कादरी, हिंदलवली अमीर कादरी व अहेले सिलसिला।

उरुकुंटा : हुसैन अहेमद कादरी व अहेले सिलसिला, बलहारी सय्यद जाफ़र हुसैन कादरी, खलील कादरी, कुहुस कादरी, सतार कादरी, महेबूब कादरी, रहीमभाई कादरी साहब अशरफ़ी, राजमपेट सादिक कादरी, यरगुंटा हनीफ़ कादरी।

अहेमदाबाद : गुलामशाह कादरी, अमरुल्लाहशाह कादरी, अक़तरशाह कादरी, हनीफ़शाह कादरी, यासीन कादरी, शमसोद्दीन कादरी, अल्लाबक्ष कादरी, सभी वास्तगान सिलसिला अहेमदाबाद गुजरात।

आबाद इस तरहसे है सुलशन कदीरका

हर सौंस बनगई है बख़्शेन कदीरका (साहेब कदीरी)

इसी दौरमें सय्यद मजहर हुसैन शाह कादरी करनुली, हजरते कदीरके बिरादरे निस्वतभी मुशर्रफ़ बा खिलाफ़त रहे।

हजरत सय्यद कुतुबोद्दीनशाह कादरी (ताटपोश) परभणी बतारीख 9, शाबान 1383 हि. मुताबिक 1963 ई. बमुकाम हैदराबाद फतेह दरवाजामें हजरते कदीरसे मुशर्रिफ बखिलाफते कादरीया, आलिया हुये. आप जिला परभणीमें विसाल फरमाये. वही आराम फरमा हैं.

आपकाभी काफ़ी सिलसिला है. अब्दुल हनीदशाह कादरी परभणी हजरतहीसे वाबस्ता हैं. शहर पुनाकी मुल्लिस शख्सियत हजरत सय्यद अब्दुला शाह कादरी पुनवी, हजरते कदीरसे बतारीख 22, रब्बिउस्सानी 1392 हि. मुताबिक 5, जून 1973 ई. बमुकाम चिटगुप्पा मुशर्रिफ बखिलाफते कादरीया, आलिया, खुलफाइया हुये. खिदमत अन्जाम देते हुये 10 मोहर्रम 1404 हि. मुताबिक 17 अक्टूबर 1983 ई. दोशंबाको विसाल फरमा गये. रोशन मस्जिद पुनाके एहातामें मजार शरीफ है. और हजरत हसन शाह कादरी पुनवीभी 22 रब्बिउस्सानी 1394 हि. 1973 ई. ही को चिटगुप्पामें हजरते कदीरसे मुशर्रिफ बखिलाफते कादरीया हुये. बहम्मदअल्लाह महेफिले कदीरिया पुनाकी आब व ताब हैं.

तालुका सिंधनूर, हजरत मोहम्मद कासम शाह कादरीको हजरते कदीरने 20 जिकाद, 1392 हि. मुताबिक 27 दिसम्बर 1972 ई. को खिलाफते कादरीया, आलिया, खुलफाइयासे नवाजा. सिलसिला जारी है. आपकी दर्दमंदाना खिदमतें अरसये दराजसे वाबस्ता हैं. सुसूफ साहब कादरी, शम्सोद्दीन कादरी, सय्यद फखरोद्दीन साहब कादरी, काफ़ी हलकये कदीर आपकी तरबियतसे रोशन है.

हजरते कदीरसे हजरत पीर अहमद शाह कादरी अतिक्र शोलापूरीने बमुकाम चिटगुप्पा बमोक़ये उर्स करीमी, 22 रब्बिउस्सानी 1393 हि. मुताबिक 26 मई 1973 ई.को खिलाफते कादरीया, आलिया, खुलफाइयामें सरफ़राज पाई. आप अच्छे शायर शोलापूरकी हरदिल अजीज शख्सियत थे. आपका बसी सिलसिला है. काफ़ी खुलफा हैं. आप 23, रज्जब 1412 हि. मुताबिक 1991 ई. को विसाल फरमा गये. शोलापूर बमुकाम बहेरूल फ़ैज आपका मजार शरीफ है.

गुलज़ारे कदीरीका हर फूल दरख्शों है

साबित हैं कदम जिसके वो साहेबे ईर्मा हैं (साहेब कदीरी)

निजामे कदीर किस कदर कदामत लिये अपनी मशक्कतोंके साथ रवीं दवाई है. इसका जायजा हर अहेले सिलसिलाको लेना जरूरी है. तबही हजरते कदीरकी कदर व अहेमियत समझमें आ सकेगी. हर सौदा इस कदर सस्ता नहीं

होता, जितना समझा जा रहा है! अमानत बहर कीमत अमानत है!

हजरत मोहम्मद हुसैन शाह कादरी आदिल बिजापूरी, जिन्हें कादरी खिलाफत खुलफाइया हजरत शेख महेताब शाह कादरीसे 20, जिकाद 1389 हि. मुताबिक 29, जनवरी 1968 ई.को बमुकाम हलकड़ा हासिल हुई. सिलसिला जारी हुवा, फ़ैजाने नेमत है, जिसके नसीबमें है जरूर पहुँचती है. बुनियादी अक्कीदेहीसे इमारत कायम रहेती है.

वालेदी मुशर्रिदी हजरते कदीरकी हमें सोहबतें हासिल हुई. खुलफा वो मुरीदोंके मामेलातभी सामने आते रहे. हर हालमें हर सूरतमें अहेले निस्बतका अपने मर्कज़की तरफ़ लीटनाही है. अरसा बाद मोहम्मद हुसैन शाह कादरी साहब हलकड़ा तशरीफ़ लाये. जबके महेताब शाह कादरी साहब पुनामें फ़ालिजके मर्जसे मुतासर थे. सिलसिलाको वसअत देना मक़सदेकार था. चाहते थे के बानिये सिलसिला हजरते कदीरसे रास्त रखाभी रहे. इसी माहोलमें खादिमके मारूजेको वालेदी मुशर्रिदीने क़बूल कर लिया और बतारीख 21 ज़िलहज्जा 1392 हि. मुताबिक 13 दिसम्बर 1976 ई. बमुकाम विक्रोली, बम्बई हजरते कदीरने मोहम्मद हुसैन शाह कादरीको खिलाफते चिश्तियासे सरफ़राज किया. एलान हुवा-

ख्याजा मोहम्मद हुसैन शाह कादरी, चिश्ती

बड़े अहेतेमागसे जलसा किया गया. इसी मौक़ये पर आदिल साहबने अपने खुलफाकोभी सरफ़राज किया. इसके बाद विसाल हजरते कदीरपर इन्हारे अक्कीदत की. बाद जोभी हुवा और हो रहा है, वो सिलसिलये कदीरियाके मुशाहेदेमें है.

अल्लाह अज़र तौफ़ीक़ न दे इन्सानके बसका काम नहीं

फ़ैजाने मोहब्बत आम सही डरफ़ाने मोहब्बत आम नहीं (इक़बाल)

25 रब्बिअव्वल 1411 हि. मुताबिक 1990 ई. सुपूर्द लहद किये गये. जिला बिजापूरमें आराम फरमा हैं. निजामे सिलसिलये कदीरियाका एक जायेजा सामने है.

हजरत डॉक्टर नज़र महेबुबशाह कादरीके फ़ज्रव मोहम्मद मन्सूर अहेमद शाह कादरीको हजरते कदीरने 22, जिकाद 1396 हि. मुताबिक 15 नवम्बर 1976 ई.को बमोक़ये उर्स सय्यदा हाफ़ेज़ा बीबी यमनी, हलकड़ा खिलाफते कादरीया, आलिया, खुलफाइयासे सरफ़राज किया. मोहम्मद मन्सूर अहेमद शाह कादरीके दो बड़ेपाई साहेबान व दिग़रभी हजरते कदीरसे मुशर्रिफ़ बा खिलाफते कादरीया

हैं। जिला शोलापूर महाराष्ट्र की एक काबिले कदर शख्सियत हाफिज इबादुल्ला शाह कादरी हैं। आप हजरते कदीरसे 21 शाबान 1396 हि. मुताबिक 8 अगस्त 1976 ई. मुगारिऊ वा खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफा इया हुये।

वफा कदीरकी देखो ये रंग लाई है

उसी करीमकी बेमत करीमतब पहुँची (साहेब कदीरी)

हजरते कदीरने बतारीख 22, रब्बिउस्सानी 1396 हि. मुताबिक 13, एप्रिल 1976 ई. बमौकये उर्रे करीमी चिटगुप्पा, शेख करीमुल्लाह शाह कादरी सानी (नबीरये करीमी) को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफा इयासे सरफराज फरमाया।

हजरत करीमुल्ला शाह सानी अपने दादाजानकी निशानी थे। क्या हिंदू क्या मुसलमान सभी आपसे मोहब्बत रखते हैं। जबाने कनडीमें बड़ी महारत थी। इरफानी गुफ्तगू जब करते, तो बुजर्गोंकी याद आ जाती। आपके साहेबजादे शेख अमानुल्ला सानी हैं। साहेबजादी साहेराबीबी किसी हाल गुजार रही थी। कुदरतके फैसलेमें किसीकी क्या मजाल के लब कुशाई कर सके! इस्तेफाकनू हैदराबादमें एक हांदेसेमें आप 25, रमजानुल मुबारक 1403 हि. मुताबिक 7, जुलै 1983 बरोज जुमेरात दाईये अजलको ललैक कहा। 26 रमजान जुमअतुल विदा बाद नमाज, आस्तानये करीमी चिटगुप्पाहीमें तदफ़ीन अमलमें आई।

वो बजर आते हैं और दिलजें समा जाते हैं

बकथे दिलजीर हैं याद आते हैं याद आते हैं

जुमाकी साजते और माहे सुबारक रेहलत

बहटावर इसी बाहोलजें घर आते हैं (साहेब कदीरी)

अब्द साहेबजादा ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह कादरी, चिश्ती, यमनी, साहेब कदीरी.

खादिमका रिश्ता वालिदे गिरामी हजरते कदीरने अपने खालाजाद बिरादार हजरत सय्यद अब्दुल रहीम कादरी साहब (इन्स्पेक्टर पुलिस अम्बरपेठ) की तीसरी साहेबजादी सय्यदा जहूलजिसासे तय फरमाया। पीर व मुशिंद सय्यदी व मुशिंदी हजरत सय्यद शाह हुसैन मोहम्मद अकबर मोहम्मद मोहम्मदुल हुसैनी साहेब किब्ला, खैर सन्जादानशीन रोजये बुजर्ग गुलबर्गा शरीफने अजराये बंदानवाजी खादिमको 25 जिलहन्ना 1375 बरोज जुमा हैदराबादमें खिलाफते

चिश्तिया, बंदानवाजियासे सरफराज फरमाया था। हुजूर पीर व मुशिंद किब्लाहीकी सरपस्तीमें 17 रज्जब 1384 हि. मुताबिक 22 नवम्बर 1964 ई. को खादिमका अब्दे मसउद बमुकाम बाजारेपांसी हैदराबाद बमुकाम हजरत खैरुल मुबीन अन्सारी साहब तक्मील पाया।

वालिदेगिरामी हजरते कदीरकी मोहब्बत व चाहतमें हजारां वाबस्तगान कदीर व मौतकदीनने शिरकत फरमाई।

खुल्वये निकाह मौलाना हजरत काजी सय्यद शाह आजम अली सूफी साहबने पदा।

तवककल खिन्दगी इस तरहसे अंजाम पाती है

मेरे ख्वाजाकी बिस्बत देखिये क्या काम आती है (साहेब कदीरी)

सरजामीने दक्कन हैदराबादमें हजरते कदीरकी आमदके कई दौर हैं। कई यादें हैं। खादिमकी शादी तवककल बखुदा वालिदे बुजर्गवारने तय कर दी। सिलसिलेकी वसअतके पेशेनजर सिलसिलेकी याद कर लेना जरूरी था। हुवा ये के हजरते कदीर (रह.) के तमाम वाबस्तगानने इन्तेजाम खुलूस फरमाया और सिलसिलेके इन्तेमाई निजामका निहायत सादगीसे मुजाहेरा किया। मौलाताला अजरे अजीमसे नवाजे! आमीन!

मोहतरम सय्यद नूर मोहम्मद कादरी चांदभाई साहब, मोहम्मद अब्दुल अजीम कादरी साहब, अब्दुल मजीद कादरी साहब बौंदीबिल्लर, शमसोद्दीन कादरी नारायण गुडा, सय्यद हुसैन कादरी साहेब अल्मारूफ बखलीफा नारायण गुडा, शेख अहेमद कादरी साहब, मोहम्मद याकूब कादरी साहब, फरीदभाई कादरी, मोहम्मद इब्राहीम कादरी साहब, हाजी साहब कादरी, शेख बुइन साहब कादरी, मालिके मकान और सय्यद महेबुब शाह कादरी साहब, सय्यद इस्माईल कादरी, सय्यद उमर कादरी ख्वाजाभाई, सय्यद ख्वाजा मइनोद्दीन, सय्यद फाजिल कादरी, सभी वाबस्तगान कदीरने खिदमात अंजाम दीं। लालागुडामें मोहम्मद उस्मान कादरी साहब, सय्यद महेबुबअली साहब कादरी, मियांभाई कादरी, इब्राहीम खानसाहब कादरी, युसूफसाहब कादरी, अमीरअली कादरी साहब, जानूभाई कादरी, वली कादरी, इस्माईलसाहब कादरी, अब्दुल रब कादरी खालिदभाई, अब्दुल कावर कादरी रेल्वे, मोहम्मद अली कादरी, जदीद, कदीम दौरसे हजरते कदीरके खिदमात अंजाम देते रहे। खादिमकी शादीके कुछ दिन बाद मोहतरम मोहम्मद अब्दुल अजीम कादरीसाहब (अजीमभाई) हजरते कदीरके

सिलसिलेमें दाखिल हुये. बहमदअल्लाह उस दिनसे आजतक जो खिदमात आपने अंजाम दीं, वो बादगार हैं और रहेंगी ! चुनौचे तज़करये कदीरके ये सफ़हातभी अजीजभाईके हकमें दुवागो हैं !

एक दो क्या है हजारोंमें सदा

सब पुकारेंगे अज़ीज़े सिलसिला (साहेब कदीरी)

आपके बिरादरे बुजुर्ग बादशाहभाई साहेब क़िबला और मोहतरम मोहम्मद अमीर साहब कादरी, हाजी इस्माईल कादरी साहेब (हाजीभाई) सिलसिलये आलियाके खामोश खिदमत गुज़ार हैं. अल्लाहपाक जज़ाये ख़ैरसे नवाज़े ! आमीन ! दौरे हाज़िर मोहम्मद फ़ायक़ कादरी अल्कदीरी सारे सिलसिलेके लिये एक नेमत हैं ! ऐसी खिदमात आपने अंजाम दीं. कलम शायद शुक्रियाका पुरा हक़ अदा न कर सके !

इश्कमें पीरके इसतरफ़ा सदा खो जाओ

वक़फ़ होबा होतो फ़ायक़की तरफ़ा हो जाओ (साहेब कदीरी)

इस मौक़ये पर सय्यद हुसैन कादरी अल्कदीरी अलमारूफ़ बख़लीफ़ाको हम कैसे फ़रामोश करसकते हैं ? जिनके कायम करदा निज़ामसे बच्चे कदीर दरख़्शा व तामिदा है !

सय्यद बज़रसे दूर हैं लेकिन करीब हैं

कदमोंमें अपने पीरके हैं खुशबसीब हैं (साहेब कदीरी)

मोहतरम ख़लीफ़ाके जानिसारान : इब्राहीम साहब कादरी, मोहम्मद अब्दुल वाहेद कादरी (पाशाभाई), मोहम्मद अब्दुल रहेमान कादरी, मोहम्मद ख़्वाजा कादरी, मोहम्मद सरवर कादरी, मोहम्मद सादिक कादरी, सय्यद पीर मोहम्मद कादरी, मोहम्मद आरिफ़ कादरी, मोहम्मद सरवरखान कादरी, ख़्वाजा फ़सियोद्दीन हाजीभाई कादरी, मोहम्मद ज़लील कादरी, मोहम्मद जहाँगीर कादरी, मोहम्मद मुईन कादरी, मोहम्मद ज़ब्बार कादरी, अब्दुल ग़फ़्फ़ार कादरी, मोहम्मद अब्दुल ज़ब्बार कादरी इंजिनियर, मोहम्मद कमर कादरी, मोहम्मद अल्ताफ़ कादरी, मोहम्मद जिलानी कादरी, अब्दुल रज़्ज़ाक कादरी, मोहम्मद सलीम कादरी, मोहम्मद जहाँगीर कादरी, मोहम्मद ख़लील कादरी, सादात अली कादरी, मोहम्मद अशरफ़ कादरी, मोहम्मद जहाँगीरअलीशाह कादरी, मोहम्मद शब्बीर कादरी फ़र्जदाने निज़ामोद्दीन कादरी, अज़हर कादरी, मोहम्मद ज़हीर



Hazrath Syed Shah Mohammed Mohammedul Hussaini Saheb,
Sajjada Nashin Bargah-E-Bandanawaz, Gulbarga Shareef,
Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef



Hazrath Quadeer

कादरी, अन्सारी कादरी, ख्वाजा मुइनोद्दीन दादू, शाहसाहेब कादरी, मोहम्मद इब्नाल कादरी, सय्यद आरिफ कादरी, सय्यद गौस कादरी (गौसभाई) भी मुस्तहक़े दाव व दुआ हैं।

हलक़ाये फ़ायक़ कादरीसे वाबस्ता: सय्यद जीलानी कादरी, अय्युब कादरी, इब्नाल कादरी, चौंदपाशा कादरी, वाहेद कादरी, सय्यद अफ़जल कादरी, सय्यद सरवर कादरी, मोहम्मद अफ़जल कादरी, मोहम्मद बलील कादरी, मोहम्मद जाहेद कादरी, मोहम्मद हुसैन कादरी, मोहम्मद मसऊद कादरी किंगकोर्ट, मोहम्मद बासित कादरी इन्स्पेक्टर, ख्वाजा पाशा, सय्यद मुइनोद्दीन कादरी व बिरादार फ़र्स्ट लांसर, मज़हर हुसैनी कादरी, याक़ुबपुरा हलक़ये फ़तेह दरवाज़ामें शेख़ इमाम कादरी, शेख़ मोहम्मद कदीर कादरी, शेख़ बशीर कादरी, शेख़ मुनीर कादरी, सय्यद आरिफ़ कादरी, मोहम्मद जाफ़र कादरी, मोहम्मद रहीम कादरी, सय्यद मुज़फ़्फ़र कादरी, मयेबिरादर सय्यद जब्बार कादरी (बाबर पाशा) सभी अफ़राद अपने बुजुर्गोंकी यादगार हैं। मौलाका फ़ज्जले करम है के वालिदे बुजुर्गवार हज़रते कदीरके अवलादोंमें बड़ी हमशीरा खतीजा बीबी साहेबा यमनी, छोटी हमशीरा करीमा बीबी यमनी और औलादे नरीनामे खादिम ख्वाजा सय्यद इब्राहीमशाह कादरी, चिश्ती, यमनी हैं।

बड़ी हमशीरा खतीजा बीबी यमनी, जौजये सय्यद साबिरवली शाह कादरीके फ़ज्रद सय्यद मोहम्मद कादरी, साहेबज़ादियोंमें आमेनाबी (सबीहा) रज़ियाबी, अक़बरी, अस्करी, छोटी हमशीरा करीमा बी यमनी, जौजये मोहम्मद अब्दुल करीम शाह कादरीके फ़ज्रद अक़बर मोहम्मद नज़मोद्दीन शाह कादरी (सादिक पाशा), दुसरे फ़ज्रद मोहम्मद मुनव्वर पाशा कादरी, लड़कियोंमें हाफ़ेज़ाबी और कौसरबीबी हैं।

खादिम यानी साहेबज़ादा ख्वाजा सय्यद इब्राहीम शाह कादरी, चिश्ती, यमनीके कुल सात लड़कियाँ और एक साहेबज़ादा हैं। जिनके नाम हस्बे ज़ेल हैं- बड़ी साहेबज़ादी सय्यदा बदरुन्निसा यमनी उर्फ़ नफीस, सय्यदा कमरुन्निसा यमनी, सय्यदा कदीरुन्निसा यमनी, सय्यदा रज़ीक़ुन्निसा यमनी, सय्यदा हाफ़ेज़ा बीबी यमनी। इसके बाद साहेबज़ादा सय्यद अबतुराब यमनी और सय्यदा ख्वाजाबी यमनी, सय्यदा अशरफ़ुन्निसा यमनी।

**साहेबजादा अबुतुराब शाह कादरी यमनी की तारीखे पैदाइश
7 जमादिलअव्वल 1396 हि. मुताबिक 7 मई 1976 ई.
रोजे जुमा, बमुकाम फतेह दरवाजा हैदराबाद.**

बड़ी साहेबजादी सय्यदा बहक़ुनिसा नफीस, हमशीराजादा मोहम्मद नजमोदीनशाह कादरी वल्द मोहम्मद अब्दुल करीम शाह कादरीसे मन्सुब है. तारीखे अक्व 17 जिल्काद 1401 हि. मुताबिक 17 सितम्बर 1981 ई. (बमुकाम हलकड़ा) दूसरी साहेबजादी सय्यदा कमरुनिसा यमनी हमशीराजादा सय्यद मोहम्मद कादरी वल्द सय्यद सादिरवली शाह कादरीसे मन्सुब है. तारीखे अक्वे 15, रज्जब 1405 हि. मुताबिक 7 एप्रिल 1985 ई. (बमुकाम हैदराबाद), तीसरी साहेबजादी सय्यदा क़दीरुनिसा यमनी अज़ीज़म् मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ कादरी वल्द मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ कादरीसे मन्सुब है. तारीखे अक्व 17, रब्बिउत्तसानी 1408 हि. मुताबिक 10 दिसम्बर 1987 ई. (बमुकाम हैदराबाद). चौथी साहेबजादी सय्यदा रफ़ीक़ुनिसा यमनी अज़ीज़म् मोहम्मद शम्सोद्दीन कादरी (उर्फ़ इब्बालपाशा) वल्द मोहम्मद शहाबोद्दीन शाह कादरीसे मन्सुब है. तारीखे अक्व 10, रज्जब 1409 हि. मुताबिक 17 फरवरी 1989 ई. (बमुकाम हैदराबाद). पाँचवी साहेबजादी सय्यदा हाफ़ेजाबी यमनी अज़ीज़म् मोहम्मद आजम कादरी वल्द मोहम्मद हाशम कादरीसे मन्सुब है. तारीखे अक्व 15 रज्जब 1412 हि. मुताबिक 21 जनवरी 1992 ई. (बमुकाम हलकड़ा). छठवीं साहेबजादी सय्यदा श्वाजाबी यमनी अज़ीज़म् शेख अमानुल्लाह शाह कादरी वल्द शेख करीमुल्लाह शाह कादरी सानी चिटगुप्तासे मन्सुब है. तारीखे अक्व 14, शव्वाल 1415 हि. मुताबिक 16, मार्च 1995 (बमुकाम हलकड़ा). साहेबजादा सय्यद अबुतुराब शाह कादरीका अक्वे मसऊद अज़ीज़ी सय्यदा अर्शिया फ़ातेमा वल्द सय्यद अतहर कादरी उर्फ़ ग़ौसपाशा साहेब हैदराबादीसे बफ़ल्लेताला हुवा. तारीखे अक्व 6, जिल्हज्जा 1417 हि. मुताबिक 14 एप्रिल बरोज़ दोशम्बा बमुकाम हैदराबाद हुवा. खुत्बये निकाह तक्रुसमआब हज़रत सय्यद शाह मोहम्मद मोहम्मदुल हुसैनी साहब किब्ला सज्जादानशीन बाराहे बंदानवाजने पढ़ा.

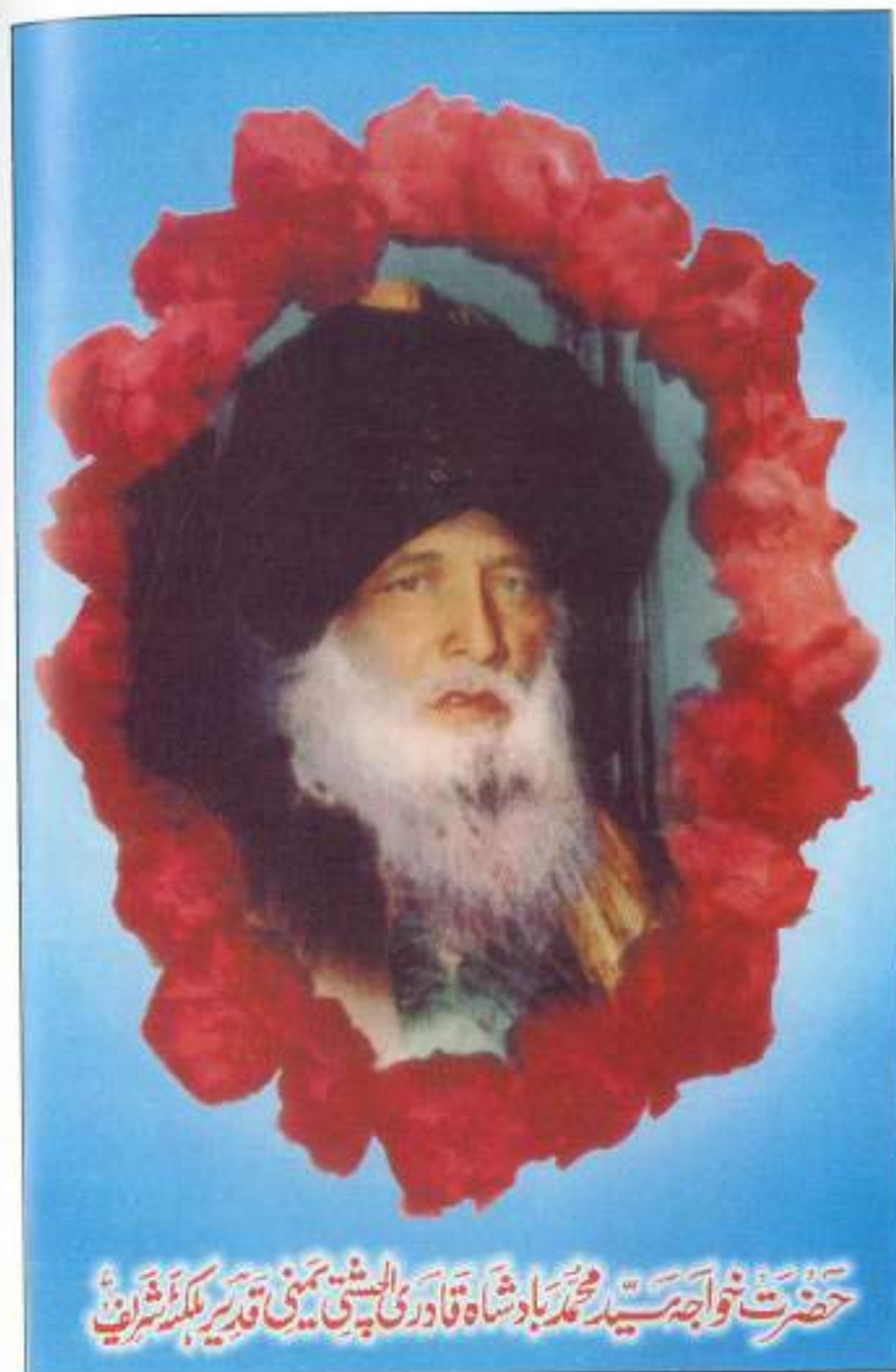
**दुई खुले मक़यूतसे मामूर आँखन हो गया
है अटा सरकारकी आबाद खुल्शन हो गया (साहेब कदीर)**

14th April 1997 - Wedding occasion of Syed Abu Turab Shah Quadri
Chisthy Yamani, Halkatta Shareef



Syed Abu Turab Shah Quadri, Khurba -E- Nikkal Hazrath Syed Shah
Mohmed Mohmedul Husaini Saheb, Sajjadda Nasheen
Bargha -E- Bandanawaz, Gulbarga Shareef







Hazrath Khwaja Syed Mohammed Badsha Quadri Chishti
Yamani Qudceer (R.A)



Saheb Quadeeri

Abu Turab Quadeeri

बफ़जलेताला बतारीख 11, शव्वाल 1418 हि. मुताबिक 9 फ़रवरी 1998 बरोज़ पीर साहेबजादा सय्यद अबूतुराब शाह कादरीको लड़का तवल्लुद हुवा. नाम रखा गया- सय्यद अहेमद मोहियोद्दीन यमनी, दूसरे साल मौलाने कीर एक लड़का इनायत फ़रमाया, जो बतारीख 2, शव्वाल 1419 हि. मुताबिक 12, जनवरी 1999 ई. बरोज़ जुमेरात तवल्लुद हुये. नाम रखा गया- सय्यद हामीद मोहियोद्दीन यमनी. उसके बाद तीसरे फ़ज्रद सय्यद शाहिद मोहियोद्दीन यमनी तवल्लुद हुये.

जहाँमें अहेले ईमॉं सूखे सुशीव जीते हैं

इधर डूबे उधर बिकले उधर डूबे इधर बिकले (इज़्बाल)

तज़केरये विसाल

हज़रत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी,

कदीर कुदसिरहुल अजीज, हलकट्टा शरीफ़

13 मोहर्मुल्हम 1399 हि. मुताबिक 14, दिसम्बर 1978 बरोज़ जुमेरात वक्त फ़जर आपने दायीये अज़लको लबैक कहा. इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन ○ आपने अपनी सारी ज़िन्दगी ख़िदमते ख़ल्कके लिये वक्त की. दावते कलेमा ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदूर रसूलुल्लाहे ○ के इफ़रार व तस्दीकको अपना नस्युल अैन बनाया. तवक्कलकी राह इख़्तियार की. सब किनाअतका दर्स दिया. आपकी तस्नीफ़ व तालीफ़ गुलज़ारे कदीर का हर वर्क हक़ायककी शहादत देता है. मौलातालाने आपकी तबियतमें कबूलियत अता फ़रमाई. आप अहेले इल्मके क़दरदौ अवकातके पाबंद रहे. 14 मोहर्म बाद नमाज़े जुमा हलकट्टा शरीफ़में तदफ़ीन अमलमें आई. हमने अक्सर देखा- आप ज़ामिया निज़ामीयाके रास्तेसे गुज़रते पैदल हों, या सवारीपर, फ़ौज़ हज़रत मोहम्मद अन्वरुल्लाह फ़ारूकीसाहब (रह.) बानिये ज़ामिया निज़ामियाके रोज़ये अन्वारकी तरफ़ सलाम करते हुये आगे बढ़ते. हज़रत किब्लाकी अकीदतका हासिल हमें आज उसै कदीरके मनाज़िरमें नज़र आ रहा है. सज़ादग़ाने जीविकार उल्माये क़िबारकी हलकट्टा शरीफ़ तशरीफ़ आवरी हमारी नहीं, बल्के हज़रते कदीरकी कशिशका सबब है. मौलाताला हमें सॉलेहीनकी सोहबतमें रखे ! आमीन !

हज़रत किब्लाकी रेहलत ख़ादिमके लिये कितना अज़ीम सद्मा जुदाई था.

21 सालकी तड़प यादे कदीरमें पोशीदा रहेकर खिराजे अक़ीदत पेश कर रही है। हज़रत कामिल अलेहे रहेमानने क्या खूब कहा है-

लुट कयी कामिल जहाँ सारी मटाये ज़िन्दगी
क्या तमाशा है वहींसे ज़िन्दगी पाता हूँ मैं

ऐसी ज़िन्दगी आपने हमें बख़्शी, जो इतिमाने कलबका बाइस है। हज़रत क्रिस्ताको तमाम अहेले सिलसिला बावा कहेकर मुखातिब फ़रमाते थे, अंदाज़ा कीजिये इस लफ़्ज़े बावामें कितना बड़ा सहारा पोशीदा है ! हज़रते कदीरके विसालपर कितने दिल मग़मूम हुये ! कितनी आँखे अश्रुवार हुयीं ! हर एक अपने अपने तामसुराते कलबीको नज़रे कदीर किया। बरजस्ता साबिर तवक्कली शाहीनने कहा-

कौन ये जाने तमन्ना जावेजौं खामोश है
शिद्वते रग़से जर्मी चुप आसमौं खामोश है
किसके कदमोंसे लिपटकर रो दिया सारा घमम
ये वो मन्ज़िल है जहाँ खुद वास्ताँ खामोश है
अब्जिनद् जिसने सजा रखे थे तुलज़ारे कदीर
आज रंग व बूरका वो दर्जुमा खामोश है
सब यही कहते हैं के शाहीन कुल तूभी सुना
क्या सुनाऊँ जबके मेरा कदरदौं खामोश है

हज़रत नसीम मन्नान कादरी शोलापुरीने खिराजे अक़ीदत पेश की-

दीने नबी (स्व.) के चारे वफ़ादार अल्विदा
हम बेकसोंके मोजिसो रग़रुवार अल्विदा
राहे वफ़ाये चलके चलाया है आपने
लासों दिलोंके काफ़िला सालार अल्विदा
मुदत से ये नसीम टलबग़ारे फ़ैज़ है
औं बादशाह औं साहिबे तुलज़ार अल्विदा

हज़रते कदीरके विसालसे एक साल कबल हज़रते कदीरने हज़रत मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़शाह कादरी साकिने यादगीरको बतारीख 20, ज़िकादा 1389 हि. मुताबिक 29, जनवरी 1970 ई. बरोज़ नुमेरात ख़िलाफ़ते कादरीया, आलिया, खुलफ़ाइयासे सरफ़राज़ फ़रमाया।

विसाले हज़रते कदीरके बाद फ़ातेहा बेहलूममें तमाम इलाकोसे अहेले सिलसिला खुलफ़ाने शिरकत की। बइतेफ़ाके राय 13, मोहर्रमको उसै कदीर मनाने और मर्कज़को इस्तेहकाम देने तमाम आशिकाने कदीरने तय करलिया। आज 21 वौं उसै शरीफ़। हज़रत इब्बाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, अल्विश्ती, कदीर, कुदसिरहुल अज़ीज़ हलक़ड़ा शरीफ़के मुबारक मौक़येपर जो मन्ज़र अहेले अक़ीदतके रुबक़ है, वो आशिकाने कदीरके इश्क़ व वारफ़्तगी जानिसारीका मज़हर है। पहले उसै कदीर हलक़ड़ा शरीफ़हीसे हस्वे दस्तूर निज़ामे कदीरी रुबा अमल लाया गया।

जानशीने हज़रते कदीर साहेबज़ादा इब्बाजा सय्यद इब्राहीम शाह
कादरी, चिश्ती, यमनी, बंदानवाजी, साहेब कदीरी.

के खुलफ़ा

जानशीने हज़रते कदीर साहेब कदीरीने काज़ी सय्यद मीर शाह कादरी, अल्विश्ती साकिने कइपाको बतारीख 14, मोहर्रम 1400 हि. मुताबिक 5 दिसम्बर 1979 ई.को ख़िलाफ़ते कादरीया, आलियासे सरफ़राज़ फ़रमाया. (रुबक़ फ़ुकरा व मशायख़ बमुक़ाम आस्तानये कदीरी हलक़ड़ा शरीफ़).

एक अर्सा आपने ख़िदमात अंजाम दीं. 9 रज्जब 1415 हि. मुताबिक 13, दिसम्बर 1994 ई. को विसाल फ़रमा गये. आस्तानये मीर कदीरी कइपामें आराम फ़रमा हैं.

जानशीने कदीर साहेब कदीरीने रकीम अब्दुल्लाह शाह कादरीको 14 मोहर्रम 1400 हि. ही को ख़िलाफ़ते कादरीया, आलिया, खुलफ़ाइयासे सरफ़राज़ा. आप साकिन डंडोती हैं.

जानशीने कदीर साहेब कदीरीने सय्यद महेबूब अलीशाह कादरी साकिने लालागुड़ा सिकंदराबादको 22, रब्बिउस्सानी 1401 हि. मुताबिक 28 फ़रवरी बरोज़ शम्बा 49 वा उसै करीम (रह.), बमुक़ाम चिटगुप्पा शरीफ़के मौक़येपर ख़िलाफ़ते कादरीया, आलिया, खुलफ़ाइयासे नवाज़ा.

जानशीने कदीर साहेब कदीरीने सय्यद मीर शाह कादरी हैद्राबादी हसन नगर, को 22 रब्बिउस्सानी 1401 हि. को बमुक़ाम चिटगुप्पा शरीफ़ ख़िलाफ़ते कादरीया, खुलफ़ाइयासे सरफ़राज़ किया.

जानशीने कदीर साहेब कदीरीने मोहम्मद शहाबोद्दीन शाह कादरी हैद्राबाद को 14 मोहर्रम 1401 हि. मुताबिक 23 नवम्बर 1980 ई. बमुक़ाम आस्तानये

कदीर हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज फरमाया. एक असां खिदमत अंजाम दी. आप खूश इल्हान करी थे. 5 रमजानुलमुबारक 1411 हि. मुताबिक 22 मार्च 1991 ई. बरोज जुमा विसाल फरमा गये. तद्फ्रीन अेहातए आस्तानये कदीरीमें अमलमें आई.

जानशिने कदीर साहेब कदीरीने मोहम्मद जहांगीरअली शाह कादरी साकिन वारिसगुड़ा, सिन्दराबादको बतारीख 14 मोहरम 1401 हि. मुताबिक 23 नवम्बर 1980 ई. बमौकये उसै कदीर हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलियासे सरफराज किया. आपकी खिदमत दौरे कदीरहीसे बादगार रही है. अच्छे शायर थे. तासीर तखल्लुस फरमाते थे. आपका विसाल 5 जमादिल आखर 1418 हि.को हुवा. अक़ब ईदगाह चिलकलगुड़ामें मज़ार शरीफ है.

मोहम्मद अन्वर शाह कादरी साकिने (जगदेवी) खलीफा मोहम्मद हाशम शाह कादरी बवास्ता जानशिने कदीर साहेब कदीरी 22, रब्बिउस्सानी 1402 हि. मुताबिक 17 फरवरी 1982 ई. बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ बारगाहे करीमीमें खिलाफते कादरिया खुलाफाईयासे सरफराज हुये. आप सिलसिलये कदीरियाके मुख्लिस खिदमत गुज़ार हैं. तामिलनाडु, कर्नाटक की कई इलाक़ोंमें आपका सिलसिला है. जानशिने कदीर साहेब कदीरीने सय्यद इब्बाज मोहियोद्दीन शाह कादरी उर्फ़ पीरान करनोली वल्द हज़रत सय्यद शाह सदोद्दीन कादरी (रह.) को 14 मोहरम 1402 हि. मुताबिक 12 नवम्बर 1981 ई. बरोज जुमेरात हलकड़ा शरीफमें खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयाकी अमानत पहुँचाई. आप वली सफ़त बुजुर्ग थे. 14 ज़िकादा 1414 हि. विसाल फरमा गये. हस्त गुम्बद गुल्बर्गा शरीफ निज्द मस्जिद मोहम्मदी आपका मज़ार शरीफ है.

शेख दादा हयात कलंदर शाह कादरी दावनगिरा खलीफा सुल्तानशाह कादरी 14 मोहरम 1402 हि. मुताबिक 12 नवम्बर बरोज जुमेरात हलकड़ा शरीफमें कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे मुशरफ़ हुये.

◦ शेख महेमूद शाह कादरी शोलापुरी, फ़ज्द अतीक शोलापुरी खलीफा साहेब कदीरी 14 मोहरम 1402 हि. हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज हुये.

◦ सय्यद अब्दुल रहेमान शाह कादरी (मक़बुल शाह) ख़ादिम दरगाह हज़रत कमरअली दुर्वेश शिवापूर, पुना, खलीफा साहेब कदीरी, 14 मोहरम 1402 हि. बरोज जुमेरात हलकड़ा शरीफमें खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज रहे.

◦ शेख हबीब अहेमद शाह कादरी साकिन महेबूबनगर, खलीफा हज़रत मोहमद अहेमद शाह कादरी विजनापल्ली, 18 जिल्काद 1400 हि. मुताबिक 28, सितम्बर बरोज यक़शंबा बमौकये उसै हाफ़ेज़ा बीबी बमुकाम हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज किये गये.

◦ हज़रत अब्दुल्ला शाह कादरी साकिन वेंगार्ड केरलाको जानशिने कदीर साहेब कदीरीने 22, रब्बिउस्सानी 1404 हि. बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ दरबारे करीमीमें खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज किया. आपका कसीर सिलसिला केरला और अहेमदाबादमें है. आप हज़रत शेख मदारशाह कादरी पुनवासे शर्फ़ बैत रखते हैं. आप और आपके मुरीदीने आस्ताने कदीरकी बेहतर खिदमत अन्जाम दीं. केरलामें आपकी ख़ानकाह कादरिया कदीरिया है.

◦ सय्यद अब्दुल वहाब शाह कादरी साकिन पुना खलीफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी, 22 रब्बिउस्सानी 1404 हि. मुताबिक 26, जनवरी 1984 ई. बरोज पंजशंबा बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे सरफराज हुये. आप महेफ़िले कदीर पुनाकी हरदिल अज़ीज़ शख़्सियत हैं. हज़रते कदीरके दौरे कदीमसे आशना हैं. हज़रत क़िब्लाहीके दस्ते मुबारक पर बैअत हासिल की. आस्ताने कदीरीका रंग, जो महेफ़िले कदीरिया पुनाकी जानिबसे हर साल किया जाता है. इस खिदमतको आप बड़ी हुस्नो खूबीसे निभाते हैं. आपका सिलसिला जारी है.

◦ मोहम्मद अफ़ज़ल शाह कादरी साकिन बरंगल खलीफा जानशिने साहेब कदीरी 14 मोहरम 1404 हि. मुताबिक 21, अक्टूबर 1983 ई. बरोज जुमा बमौकये उसै कदीर हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे मुशरफ़ हुये. आप हज़रत कदीरके कदीम मुरीदीनमें हैं.

◦ हाफ़िज़ हलिमोद्दीन शाह कादरी, अल्विश्ती, कैसर साकिन जिला महेबूबनगर खलीफा मोहम्मद अहेमद शाह कादरी बवास्ता साहेब कदीरी 15, मोहरम 1405 हि. मुताबिक 11 अक्टूबर 1984 ई. बरोज जुमेरात बमौकये उसै कदीर हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाईयासे मुशरफ़ हुये. जानशिने कदीर साहेब कदीरीने 22, रब्बिउस्सानी 1411 हि. मुताबिक 11, नवम्बर 1990 ई. बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते चिश्तिया बन्दानवाज़ीयासे सरफराज किया. आपका वसी सिलसिला है. कैसर तखल्लुस फरमाते हैं. मरकज़ आस्ताने कदीरीसे तमाम वाबस्तागाने सिलसिला

आलियाको वाबस्ता रखनेमें सआदत जानते हैं। आपको हजरत कदीरके दस्ते मुबारक पर बैअतकी सआदत हासिल है।

- शेख मोहम्मद जाबिरशाह कादरी, चिश्ती, मदनी, साकिन हैदराबाद खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 15 मोहर्रम 1405 हि. मुताबिक 19 अक्टूबर 1984 इ. बमोकये उर्से कदीर हलकहा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे सरफराज हुये. चिश्ती निस्बतसेभी मुशर्रफ हैं. आपके वालिद बुजूर्गवार हजरत शेख मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, अलमारुफ व मौला (रह.) हैदराबादीका हलका निजामाबाद और दिगर मुकामात पर वसी सिलसिला है. हजरत कदीरके दीरे कदीमके खुलकामें शुमार रहा. अभी हालहीमें विसाल हुवा. निजामाबाद (कंजर) काशाना हयातमें आराम फर्मा हैं. शेख मोहम्मद जाबिरशाह कादरी, चिश्ती, राशिद कदीरी आपके जानशिन हैं. तज्जकरये कदीरमें आपने खिदमात अन्जाम दीं.
- आपके विरादर और शेख मोहम्मद आबिद शाह कादरीभी साहेब कदीरीसे शर्फे खिलाफते कादरिया रखते हैं.
- मोहम्मद अब्दुल्ला शाह कादरी यादगरी 15, मोहर्रम 1405 हि. मुताबिक 11, अक्टूबर 1984 इ. बमोकये उर्से कदीर हलकहा शरीफ जानशिने कदीर साहेब कदीरसे खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे नवाजे गये. आप चिश्ती निस्बतसेभी मुशर्रफ हुये.
- मोहम्मद इस्हाक शाह कादरी नुसरती साकिन नरसापुर जिला मेदक खलिफा जानशिन साहेब कदीरी 22, रब्बिउस्सानी 1405 हि. मुताबिक 15, जनवरी 1985 इ. बरोज चारशुंवा बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे सरफराज हुये. आप हजरत शाह नसरतुल्ला शाह कादरी (रह.) (बंगाली बाबा) के मुरीद हैं. हजरत कदीरके कदीम वाबस्तगानमें शुमार है. आपका सिलसिला जारी है. मोहतरम सय्यद हिसामोदीनशाह कादरी अलमारुफ व अरजूमंद बाबा साकिन वारागाहे युसूफीन (रह.) हैदराबाद खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 14, मोहर्रम 1406 हि. मुताबिक 30 सितम्बर 1985 बरोज दोशंवा बमोकये उर्से कदीर हलकहा शरीफ खिलाफते, कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. इस मुबारक मोके पर आपके मामूजान हजरत मोहम्मद मुजाहिद अलीशाह चिश्ती निजामी साहेब कियलाभी हैदराबादसे हलकहा शरीफ तशरीफ लाये थे. रुबर फुकरा व मशायख रस्मे खिलाफत अन्जाम पाई. अर्जुमंद बाबा हजरत कदीरसे

शर्फे बैअत रखते हैं. सदर खलिफा रफाइया मुनव्वरअली शाह रफाईने मजलिसे तरीकमें ज़रबाते रफाइयाका ऐसा मुजाहेरा किया, हजारों दिल तड़प कर रहे गये. वो मन्जर आजभी फैजान सिलसिलकी याद दिलाता है. अर्जुमंद बाबाके अखलाके हमीदासे सभी रुशनास हैं. आपकी मुछलेसाना खिदमतें निजामे सिलसिलाकी बका हैं.

वो नज़र क्या है जो पाबंदे मुकामात रहे

और वो जिससे मकामात बना करते हैं. (ह्वाजा शौक)

- सय्यद सूफी बुखारी शाह कादरी, नुसरती साकिन शोरापूर जिला गुलबर्गा शरीफ खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 14, मोहर्रम 1406 हि. मुताबिक 30 सितम्बर 1985 इ. बमोकये उर्से कदीर हलकहा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. आप शोरापूर सादात घरानेके मोतेबर बुजूर्ग हैं. हजरत नुसरतुल्ला शाह कादरी (रह.)की दस्ते मुबारक पर बैअत रखते हैं. तज्जकरयेकार हकीम व डॉक्टर हैं. अदबी व इफ्तानी मालुमातमें आपको दर्जे कमाल हासिल है. खादिमके फुषा खुसर हजरत ह्वाजा हुसैन कादरी साहेब (रह.) शोरापूरी, जिनके फज़्द अब्दुल कादर कादरी बाबूमियाँ मुक़ीमजिह हैं. सूफी साहेबसे बड़ी कुर्बत रखते है. मोहम्मद अमजद कादरी बाबूमियाँके छोटे भाई हैं.
- सय्यद मुमताज मोहियोद्दीन शाह कादरी, सईद, तक्कली, साकिन जिला करीमनगर, खलिफा जानशिने कदीर 14, मोहर्रम 1406 हि. मुताबिक 30, सितम्बर 1985 इ. बरोज दोशंवा बमोकये 7 वीं उर्से कदीर हलकहा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे सरफराज हुये. आप हजरत साबिर तक्कली शाहीन साहबके फज़्द हैं.
- शेख महेबूबशाह कादरी साकिन वाड़ी जंशान खलिफा जानशिन साहेब कदीरी 22, रब्बिउस्सानी 1406 हि. मुताबिक 4, जनवरी 1986 इ. बमोकये उर्से करीम (रह.) चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे सरफराज हुये. आप हजरते कदीरसे बैअत हैं. कदीम खिदमत गुज़ार हैं.
- मोहम्मद माशूक शाह कादरी साकिन बरंगल खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 22, रब्बिउस्सानी 1406 हि. मुताबिक 4, जनवरी 1986 इ. बमोकये उर्से करीम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. आप हजरत कदीरके कदीम दीरसे वाबस्ता है. आपके फज़्द

मोहम्मद इब्राहीम कादरीकी वालेहाना मोहब्बत सिलसिलये कदीरिया केलिये बाईसे तस्कीन हे.

- मोहम्मद नजमोद्दीन शाह कादरी (सादिकपाशा) साकिन वाड़ी जंक्शन निज्द हलकड़ा शरीफ खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी, 14 मोहर्मा 1408 हि. मुताबिक 9 सितम्बर 1988 इ. बरोज चारशांवा बमौकये 9 वाँ उर्से कदीर हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. आप नवासाये हजरते कदीर हैं. इस रस्मे खिलाफतके मोक्रेपर हमारी खुशाबखती है के बारगाहे हजरत निजामोद्दीन अवलिया (रह.) के सज्जादानशिन हजरत पीरजादा ख्वाजा अहेमद निजामी साहेब किब्ला देहलीसे हलकड़ा शरीफ शिरकते उर्से कदीर (रह.) केलिये तशरीफ लाये थे.
- मोहम्मद अब्दुल रहेमान कादरी साकिन कवडीपल्ली तालुका नरसापूर, जिला मेदक, खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी, 22, रब्बिउस्सानी 1409 हि. मुताबिक 3 दिसम्बर 1988 इ. बरोज दोशंवा बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे सरफराज हुये.
- अल्हाज सय्यद सलार शाह कादरी साहेब पेशइमाम साकिन कोरपोल संगे रेड्डी जिला मेदक खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 14, मोहर्मा 1411 हि. मुताबिक 1991 इ. बमुकाम हलकड़ा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. आप हजरत कदीरसे बैअत हैं. आपके बिरादर सय्यद हमीद कादरी व बिरादरान व साहेबजादगान सभी खिदमात गुजारे सिलसिला हैं.
- बिरादरे खुर्द हजरते कदीर हजरत सय्यद अब्दुल अजीज शाह कादरी यमनी साकिन जिला रायचूर खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी, 22 रब्बिउस्सानी 1404 हि. मुताबिक 26 जनवरी 1984 इ. 52 वाँ उर्से करीम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. वालिदे गिरामी हजरते कदीरके बाद आपकी सरपरस्ती रही. आप 6 सफर 1409 हि. मुताबिक 8 सितम्बर 1988 इ. को विसाल फरमा गये. अहाता आस्तानये कदीरी हलकड़ा शरीफमें आराम फर्मा हैं.
- नबीरये करीमी मोहतरम शेख अमानुल्ला शाह कादरी साकिन चिटगुप्पा शरीफ खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी 22 रब्बिउस्सानी 1411 हि. मुताबिक 11 नवम्बर 1990 इ. बमौका 59 वाँ उर्से करीम (रह.) चिटगुप्पा शरीफ

खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. सिलसिला जारी है. आप हजरत शेख करीमुल्लाह शाह कादरी चिश्ती चिटगुप्पा शरीफके पड़पोते हैं. बफजले ताला 22, जिकादा 1419 हि. मुताबिक 11 मार्च 1999 इ. बरोज जुमेरात आपको लड़का तवल्लुव हुवा. जिनका नाम शेख नसीरुल्लाह रखा गया.

नबीरये हजरते कदीर जानशिने साहेब कदीरी

सय्यद अबुतुराब शाह कादरी यमनी

खलिफा साहेब कदीरी साकिन हलकड़ा शरीफ 14 मोहर्मा 1413 हि. मुताबिक 16 जुलाई 1992 इ. बमौकये 14 वाँ उर्से कदीर बरोज जुमेरात बमुकाम हलकड़ा शरीफ रुबरू फुकरा व मशायख व हुज्जारे मजलीसके, खिलाफते कादरिया आलिया व खुलाफाइयासे सरफराज हुये. इस मुबारक मोक्रे पर हजरत सय्यद शाह वलीअुल्लाह हुसैनी साहेब किब्ला रोजये बुजर्ग हजरत सय्यद शाह असदुल्लाह हुसैनी साहब किब्ला बिरादर सज्जादानशिन रोजये बुजर्ग गुलबर्गा शरीफ, हजरत साहेबजादा सय्यद मोहम्मद फजलुलमतीन चिश्ती साहेब किब्ला गद्दीनशिन अजमेर शरीफ उल्मा व मशायख व खुलाफाये सिलसिलये कदीरिया हजारां अशाकाने कदीर मौजूद थे.

आबवादेका सुला फिर एक बाब
साहिबे खिदमत हुये हैं खुदशाह.

(साहेब कदीरी)

- खलिफा साहेब कदीरी मोहम्मद अशाफाक शाह कादरी साकिन नरसापूर बमुकाम हलकड़ा शरीफ 14, मोहर्मा 1413 हि. मुताबिक 16 जुलाई 1992 इ. को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे नवाजे गये. आप मोहम्मद इस्हाक शाह कादरी साहबके फज्द हैं.
- सय्यद अहेमद हुसैन शाह कादरी करनुली खलिफा जानशिने कदीर 14 मोहर्मा 1415 हि. खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे बमुकाम हलकड़ा शरीफ मुशर्रफ हुये. आप सय्यद मजहर हुसैन शाह कादरी करनुलीके साहेबजादा हैं.
- सय्यद सुल्तान मोहियोद्दीन शाह कादरी साकिन वरंगल खलिफा ख्वाजा सय्यद अली शाह कादरी, चिश्ती 22, रब्बिउस्सानी 1416 हि. को खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलाफाइयासे मुशर्रफ हुये. वालिदे बुजर्गवार हजरत

इबाजा सय्यद अली शाह कादरी चिश्ती बतारीख 27 रब्बिउलअव्वल 1419 हि. को विसाल फर्मा गये. आप बारागाह हजरत अब्दुल्लाह शहीद (रह.) रंगशाही पेट के मुतवल्ली व पेशइमाम थे. बारागाहे आलियाहीके अंहातेमें आराम फर्मा हैं.

- सय्यद मुनव्वर बादशाह कादरी मुनव्वर साकिन कइपा खलिफा साहेब कदीरी 14 मोहर्रम 1416 हि. मुताबिक 14 जून 1995 इ. बमुकाम आस्तानये कदीरी खिलाफते कादरियासे मुशर्रफ हुये.
- काजी सय्यद अमजदशाह कादरी साकिन अलन्द शरीफ खलिफा जानशिने साहेब कदीरी बमुकाम हलकट्टा शरीफ 14 मोहर्रम खिलाफते कादरिया, आलियासे मुशर्रफ हुये. आप हजरते कदीरसे बैअत हैं.
- हजरत मोहम्मद हयात शाह कादरी साकिन यलदूर्ती जिला मेदक खलिफा जानशिने कदीर, साहिब कदीरी.
- मोहम्मद अमीर अहेमद शाह कादरी बिजनापल्ली वल्द मोहम्मद अहेमद शाह कादरी चिश्ती (रह.) खलिफा जानशिने कदीर साहेब कदीरी.
- मोहम्मद गौस शाह कादरी साकिन हैदराबाद जानशिने कदीर साहेब कदीरी.
- मोहम्मद अमीरोद्दीन शाह कादरी नसरुल्लाबाद जानशिने कदीर साहेब कदीरी, 22 रब्बिउस्सानी 1418 हि. बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ खिलाफते, कादरिया, आलिया, खुलफाइयासे सरफराज हुये.
- मोहम्मद उस्मान शाह कादरी बम्बई, मोहम्मद इब्राहीम शाह कादरी शोलापूर, मोहम्मद उस्मान शाह कादरी शोलापूर, मोहम्मद मदारशाह कादरी, शोलापूर, मोहम्मद हाशमशाह कादरी कुप्पम, मोहम्मद अब्दुलसलाम शाह कादरी बेंगलोर, मोहम्मद जाफर शाह कादरी बेंगलोर, मोहम्मद उस्मानशाह कादरी बेंगलोर, सूफ़ी अहेमद शाह कादरी चिश्ती सूरत, सय्यद युसूफ़ शाह कादरी सूरत, मर्कजे आस्तानए कदीरी हलकट्टा शरीफसे वाबस्ता खुलफा हैं.
- सय्यद रहेमतुल्ला शाह कादरी साकिने गुलबर्गा शरीफ वल्द हजरत सय्यद मोहियोद्दीन शाह कादरी खलिफा जानशिने साहेब कदीरी 14, मोहर्रम 1419 हि. को हलकट्टा शरीफमें खिलाफते कादरिया, आलिया, खुलफाइयासे मुशर्रफ हुये.

बरुशी हैं सोजे उश्कवे वो खिंदगी मुझे
हर एक वारो दिल से मिली रोशनी मुझे

(कामिल)

A grand ceremony KHILAFATH of Syed Abu Turab Shah Quadri Yamani
Grand son of Hazrath Khawaja Syed Mohammed Badsha Quadri Chishry
Yamani Halkatta Shareef. on 16th July 1992
14th Moharam 1413 Hijri





In the presence of familiar personalities
KHILAFATH CEREMONY celebrated on 16 July 1992



Hazrath Syed
Abdul Aziz Shah
Quadri, Yamani,
Raichur



In the presence of familiar personalities
KHILAFATH CEREMONY celebrated on 16 July 1992

In the presence of familiar personalities
KHILAFATH CEREMONY celebrated on 16 July 1992





Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef

चलो अच्छा हुवा दिवानजीभी कामकी बिकली

वठारबा होशमंदोंमें कहीं अपना लुजर होवा (साहेब कदीरी)

इस तबील मालुमाती सफ़रके बाद खादिम उन मोहसनीनका जिक्र करना अपना फ़रीज़ा समझता है. जो इस 21 साला दौरमें खादिमके लिये हीसला बरूबा रहे. सबसे पहले तामीरात आस्ताने कदीरी, मस्जिदे कदीरी, समा खानये कदीरीका मुक़्तसर जायज़ा ले लें.

हज़रते कदीर (रह.)के विसालके बाद सिलसिलये कदीरिया अपने रहेबरे तरीक़को ख़िराजे अक़ीदत पेश करनेके लिये मुत्तहिद् हो गया. हर इलाक़ा अपने अपने दायरे वसअतमें काम करता रहा. बेशक ख़िदमतोंका ज़र्राभी आफ़ताबकी कीमत रखता है.

सरे राहे वफ़ा साहेब बहुत थीं वलशियाँ लेकिन

जमा कर दिनका दिनका आशियाबा करदिया आख़र

(साहेब कदीरी)

26, रमज़ान 1399 हि. मुताबिक 1979 को आस्तानये कदीरीका संगे बुनियाद रखा गया. माहे रमज़ानुल मुबारक 1400 हि. मुताबिक 1980 इ. को छत तक्मील पाया. 1404 हि. मुताबिक 1984 इ. को मस्जिदे कदीरीका काम तक्मील हुवा. माहे ज़िलहज़ा 1411 हि. मुताबिक 1991 इ. में समाखाना तय्यार किया गया. जहाँ जलसों और समाका अहेतेमाम होता है.

जानिसाराने कदीर हर क़दम पर दामे, दरमे, मुक़्ने खादिमके हर इग़देको तक्मील करनेके लिये साथ साथ रहे. ये अल्लाका फ़ज़लो करम हुज़ूरे अक़तम स्वल्लल्लाहो अलैहेवसल्लम का सदक़ा है.

ये सब छाने करीमी हैं ये सब उनका वसदुक़ है

करम जब तक न हो शामिल कोई कुछ कर नहीं सकता

(साहेब कदीरी)

महेक़िले कदीर पुनाके अहेले मोहब्बत मिर्ज़ा युसूफ़ बेग़ कादरी, मिर्ज़ा इस्हाक़ बेग़ कादरी, मिर्ज़ा हाशम बेग़ कादरी, मिर्ज़ा आरिफ़ बेग़ कादरी लालू, मोहम्मद इब्नाहीम मुनव्वर कादरी, मोहम्मद कासम साहेब कादरी व बिरादर, डॉक्टर शेख़ हुसैन कादरी, मसरूफ़ अहेमद कादरी, असरार अहेमद कादरी, मोहम्मद उस्मान कादरी, रंगीला, सय्यद सईद कादरी, सय्यद वहिद कादरी, अब्दुलभाई कादरी, सय्यद हाशम कादरी, सय्यद शुक्र कादरी, सय्यद महेबूब

कादरी, अब्दुलकादर कादरी (यासीन जुग), मोहम्मद सलीम कादरी, सय्यद अली कादरी, मोहियोद्दीन कादरी, अहेमद कादरी, अशरफ कादरी, अलताफ कादरी, गज़नफर कादरी, मोहम्मद इब्राहीम कादरी, ज़ाहिद कादरी, खान साहेब कादरी, अलताफ कादरी, शकील कादरी, सय्यद मुइनोद्दीन कादरी, कदीर कादरी (काला बाड़ा), गौसभाई कादरी, चौदभाई कादरी, अशरफ कादरी व बिरादर, बिरादराने सय्यद नगर, जनाब सलीमभाई कादरी, अकबर कादरी.

अहेले पुनाहीकी निस्वतसे मोहम्मद इश्तियाक कादरीने दुबईमें उश्शाकाने कदीरकी महेफिल बनाई. हिलमी कादरी अल्कदीरी, वालेदा आयेशा कादरी अल्कदीरी, बदरोद्दीन कादरी अल्कदीरी, मोहम्मद साहेब कादरी अल्कदीरी, अब्दुल कादर कादरी अल्कदीरी व जमी अहेले सिलसिला कदीरिया दुबई. दीवान साहबोद्दीन कादरी तलेगाव, नूरभाई कादरी लोनावला, पौरजावा सय्यद फरीद कादरी खपोली, अब्दुल रुक़्क कादरी (रह.) जिनकी वालेहाना कुर्बानियोंको सिलसिला कभी फ़रामोश नहीं कर सकता. ऐसाही साथ निभानेवाले शकील कादरी जो हमसे दूर हज़रते कदीरसे करीब हैं. मौला हाला गरीक रहेमत करे !

० मोहम्मद इब्राहीम कादरी, हाजी ज़रीफ़ खान कादरी, लाल खान कादरी, सय्यद असदअली साहेब कादरी सय्यद, जिन्होंने अपने शेरको सुपूर्वे दुबा कर दिया.

चारब मेरी आहोमें डूबना तो असर आये

सौंसोमें रहे कलेमा और रुह निकल जाये (सय्यद)

खपोली : एजाज कादरी वल्द इस्माईल साहेब (रह.) कादरी पान्सरी, मक़बूल मुल्लानी साहेब कादरी, सय्यद अफ़ज़लअली कादरी, मुक़र्रमी सलीमसाहेब, अजीज़साहब कादरी, शेरअली कादरी, सलीम कादरी, खलील अहेमद काज़ी कादरी, हाल. जमी उश्शाकाने कदीर.

पनवेल : अब्दुल कादर कादरी (रह.), हज़रत मुजाविर साहब कादरी, सलीम कादरी, हनीफ़ कादरी, मोहम्मदभाई कादरी, सय्यद हारून कादरी, नसीम कादरी, अफ़ज़ल कादरी वल्द मारुफ़ सर कादरी, जाविद कादरी वल्द मुजावर साहेब कादरी, ज़हूर कादरी, जमी उश्शाकाने कदीर.

पाली : मोहम्मद अब्दुल करीम कादरी साहब, मोहम्मद रफ़ीक़ कादरी, मोहम्मद बशीर कादरी, बाबुभाई कादरी, रज़ाक़ कादरी, अशफ़ाक़ कादरी, हाजी साहब कादरी वल्द मुस्तफ़ाखान साहब कादरी, जमी जमातूल मुस्लेमीन.

अलीबाग : इम्तियाज़ पालकर कादरी.



Hazrath Syed Shah Mohammed Mohammedul Husaini Sahab,
Sajjada Nasheen, Dargah Bandanawaz, Gulbarga
(Urs-E-Quadeer, Halkatta Shareef)



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef
Sahab Qudeeri and Appa Sahab



Hazrath Syed Shah Hasan
Madni Sahab, Sajjada
Nasheen Darga, Hazrath
Wala, Watan Hyd.,
Hazrath Syed Shah
Asrarullah Husaini Sajjada
Nasheen Dargah
Amarullah Rizvi Hyd.



Saheb Quadeeri, Hazrath
Fazalul Mateen Chishty
Sahab and Hazrath Ameen
Sahab Ajmeer Shareef

Hazrath Mateen Sahab Gaddi
Nasheen Ajmeer Shareef
Poojya Shri Dr. Sharana
Baswappa Appa



Hazrath Syed Shah
Khusro Hussaini Sahab
with Appa Sahab



Urs-E-Quadeer-Mahfil-E-Sama



Saheb Quadeeri with
Appa Sahab.

A grand ceremony of "Sandal Malli"
on 26th Urs-E-Quadeer



मुम्बई : अलहाब मोहम्मद इस्हाक कादरी, जिनकी हमनवाई मुस्तक़ल मिजाजीसे हलक़ये मुम्बईकी तन्जीमे सिलसिलामें वसअतें पैदा हुयीं. हमारे हजके साथी बारगाहे ग़रीबनवाज़के हाज़िरबाश, दौरे इराक़में जिनका साथ बाइसे तमानियत रहा. बाग़दाद शरीफ़की तमाम बारगाहोंपर हज़रीका शर्फ़ जिनके हमराह हासिल रहा.

मोहतरम सय्यद शाह एजाज़ कादरी अलशुबाई साहब, मोहम्मद उस्मान शाह कादरी साहब, बहादूर साहब कादरी, मोहम्मद अफ़जल कादरी, शाहजहाँ कादरी, इस्माईल कादरी, अबुबकर कादरी, मोहम्मद इब्राहीम कादरी, मोहम्मद मुश्ताक कादरी, मुस्ताफ़ा कादरी वल्द इस्माईल कादरी.

शिवाजीनगर : जुलेखा आपा साहेबा, मोहम्मद हुसैन कादरी, अब्दुलक़रीम कादरी, जम्बार कादरी कुर्ली, मोहम्मद युसूफ़ कादरी, मोहम्मद अहेमद कादरी, कुतूबोद्दीन कादरी, कासमअली कादरी, जनाब अशहर बहेरावची कादरी, शेख़ मिसरी, जमी अहेले सिलसिला.

मुम्बरा : मोहम्मद रफीक मीर कादरी, डॉक्टर मुन्व्वर शेख़ कादरी, इक्बाल कादरी, फ़ेरोज़ कादरी, सादिक कादरी, कलीम कादरी, एजाज़ कादरी, इरफ़ान कादरी, अब्बास कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

संगमनेर : मोहम्मद हारून कादरी, सय्यद समी कादरी, मोहम्मद सलीम कादरी, मोहम्मद सादिक कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

पुना सय्यदनगर : अक्बर कादरी, हनिफ़ कादरी, अल्लाबक़श कादरी.

शोलापूर : अब्दुल रज़्ज़ाक़ बाबुलाल कादरी, मोहम्मद उस्मानशाह कादरी, मोहम्मद सलीम कादरी, प्रोफ़ेसर अनवर कादरी, जनाब दुन्नूसआलम सिद्दीक़ी कादरी, आसफ़ कादरी, जनाब नसीम मन्नान कादरी साहब, एडिटर अन्वारे क़मर, हाफ़िज़ इबादुल्लह शाह कादरी, इब्राहीम कादरी, मोईन पेंटर कादरी, जनाब फ़रीद लालकोट कादरी, मोहम्मद इक्बाल कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

भूम : अब्दुल ग़फ़ार कादरी, गुरुचरण सरदारजी साहब, भाई चंद्रकांत साहब जमी अहेले मोहब्बत.

नागपूर : भाई रोहाडकर साहब, भाई आगरकर साहब, जमी अहेले मोहब्बत.

बीड : सय्यद मजीद हुसैनी साहब कादरी, मोहम्मद अहेमद साहब कादरी, मोहम्मद खलील साहब कादरी, हज़रत युसूफ़ साहब कादरी, मिर्ज़ा साहब कादरी, जमी वायस्ताग़ाने सिलसिला.

कामुदा : शेरअली कादरी, रशीद कादरी, कमालोद्दीन कादरी, हामिदअली कादरी, साबिरअली कादरी, युसुफ कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

बारामती : शरफोद्दीन कादरी, हाजी साहब कादरी, अब्दुल गफ्फार साहब कादरी, आदम साहब कादरी, मौलाना साबिर कादरी, बहेरायची, हाजी शेख दाऊदसाब फ़र्जंद बादशाह कादरी व बिरादर तन्वीर कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

यवत : मुबारक कादरी, हाजीसाहब कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

मौजे कासाल : मोहम्मद कासमअली साहब कादरी, महबूबशाह कादरी, अहेमद कादरी नुसरती.

फलटन : एमजान कादरी, रंगरेज जिनके ज़रिये राजस्थानमें सिलसिला हुवा. आपके अहेले खानदान, खासी तादादमें दाखिले सिलसिले कदीरिया हैं.

दौंड : मजीदखान कादरी (रह.) फ़र्जंदाने जमी अहेले सिलसिला.

कुर्दवाडी : इस्माईल कालेखान कादरी (रह.), जमी फ़र्जंदाने अहेले सिलसिला.

अलंद शरीफ़ : काज़ी सय्यद अमजदशाह कादरी, अल्हाज ज़हीरोद्दीन कादरी पेशेइमाम, अब्दुल क़य्युम कादरी, डॉक्टर अब्दुल रशीद कादरी, अब्दुल हमीद कादरी, मुईनोद्दीन कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

नरोना : अब्दुल रशीद कादरी, अन्सारी कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

गुलबर्गा शरीफ़ : बुजर्ग हजरत मुनशी अब्दुलरहेमान कादरी साहब, इस्हाक साहब कादरी (रह.), सय्यद उस्मानअली कादरी, सय्यद ताहेर कादरी, अब्दुल रज़ाक कादरी व फ़र्जंदाने, मोहम्मद हुसैन कादरी, हमीद कादरी, कासम साहब कादरी, मोहियोद्दीन साहब कादरी, मौलवी साहब कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

शाहबाद : अब्दुल हैय्य कादरी साहब, सय्यद शम्बीर अहेमद साहब गोदरी, इक़्बाल साहब कादरी, अब्दुल नबी कादरी नजर, परवेज़ धुमडी साहब कादरी, आप आस्ताने कदीरके इन्जिनियर हैं, जिनकी मेहनते शात्रकासे आस्तानये कदीरी मर्कजे निगाह है. आप महेफ़िले कदीरके मक़बूल शायर हैं. आपकी ख़िदमतें माज़ी, हाल, मुस्तक़बिलका सरमाया है. जनाब सईद अहेमद कुरेशी साहब कादरी, इन्तेवामें आस्तानये कदीरीके फ़न्नी ख़िदमत गुज़ार रहे. जनाब अमजद पटेल साहब कादरी, दोशबदोश ख़िदमत अन्जाम देते रहे.

यादगीर : सय्यद मीर गुलाम दस्तगीर कादरी, शरीफ़ साहब कादरी शरीफ़, मोहम्मद उस्मान कादरी, ज़िलानी साहब कादरी, अब्दुल समद कादरी सगरी.





"Sandal Maali" on 26th
Urs-E-Quadeer



सरगर्म अमल नवजवानाने यादगीर : मोहम्मद सादिक कादरी, मोहम्मद बुन्हानोदीन कादरी अजहर, मोहम्मद आबिद कादरी, चौदमियों कादरी, रऊफ कादरी, रियाज अहेमद कादरी, जमी उशशकाने कदीर, जिनकी दर्दमंदाना खिदमत निजामे कदीरकी रीनक है.

ताजा किया है आपले दोरे कदीमको

क्या खूब अहेले इश्कका ये यादगीर है (साहेब कदीरी)

मुकाम यरगुल : महेमूद साहब कादरी, कदीर कादरी, जमी वाबस्तगान.

गाजरकोट : डॉक्टर अब्दुल कदीर कादरी वल्द मास्टर अब्दुल नबी साहब कादरी अधोनी, जिनका जिक्र तज्जकरये कदीरके अब्बलीन हिस्सेमें पढ़ा गया. मौजिबे सताइश हैं.

निजामाबाद : हुवाजा शेख मोहम्मद जाबिर शाह कादरी, विश्ती, अल्मदनी राशिद कदीरी, मोहम्मद अजीमोद्दीन कादरी, मोहम्मद अब्दुल वहाँद कादरी, शब्बीर हुसैन कादरी, मोहम्मद युसूफ कादरी, मोहम्मद अब्दुल गफ्फार कादरी असीर, जमीलअहेमद कादरी, मोहम्मद सलीम कादरी, वाहेदअली शाह कादरी, मोहम्मद अब्दुलअली शाह कादरी अन्सारी, डॉक्टर मोहम्मद सुल्तान अन्वर कादरी, शेख जावीद कादरी, सय्यद मुश्ताकअहेमद कादरी, डॉ. सरदार हुसैन शाह कादरी, सय्यद उमरशाह कादरी, सय्यद युसूफशाह कादरी, अब्दुल लतीफ कादरी, इसा बिन अब्दुल्ला कादरी.

रायकोरकैम्प : सय्यद अब्दुल गफूर कादरी, शेख मस्तान कादरी, शेख चाँद कादरी, जमी अहेले सिलसिला.

दरपली : हाफिज मोहम्मद अब्दुलसलीम कादरी, आरमूर मोहम्मद अब्दुल करीम कादरी, शेख फरीद कादरी निरमल, जनाब याकुब साहब कादरी मदसरम. इसतरहा सिलसिलये कदीरियाका अहाता नज़रमें है. हज़रते कदीर बारगाह हुवाजा शमना मीरों, मिरज शरीफ अक्सर तशरीफ लेजाया करते. वाबस्तगान कदीरभी बसद अक़ीदत व अहेतेराम हाज़री देते हैं. मिरजशरीफमें शमसोद्दीन कादरी, मुजावर दर्गाह शरीफ वाबस्तये सिलसिला हैं. ज़ायेरी बारगाहकी क़दरदानी करते हैं. यहाँभी वाबस्तागान मौजूद हैं.

चले किस रुझाने से आये कहीं पर

दकवकी सरज़मी फिर याद आई. (साहेब कदीरी)

1947 ई. के बाद जब हज़रते कदीर शेख बुड़न साहबके घर किया मर्मा लिया तो एक अर्सा यहीं गुज़ार लिया. तक्विया जमालबी कदीम मकान नंबर 270

मशहूर रहा. तकिया जमालबी साहेबामें हजरते कदीर (रह.) के खुशदामन साहेबाभी आराम फर्मा हैं. आशिके कदीर हारिस हैदराबादी यहाँ आराम फर्मा हैं. हजरते कदीर (रह.) के बड़े दामाद हजरत सय्यद साबिरवली शाह कादरीकी मजार शरीफभी है. आपका विसाल 14 रज्जब 1393 हि. मुताबिक 1973 इ. में हुवा था. खादिमके खुसर हजरत सय्यद अब्दुल रहीम कादरी (रह.) का मजार मुबारकभी यहाँ है. आपका विसाल 24 जमादिल् अख्खल 1400 हि. मुताबिक 1980 इ. बरोज जुमाको हुवा था. आपके साहबजादगानमें सय्यद अब्दुल कादर कादरी (पाशा), सय्यद शरफोद्दीन कादरी (बाबा), सय्यद जाफर कादरी (नवाब) हैं.

तजकेरये कदीर गोया तारुके सिलसिला रहा.

हमारे बहेनवी साहबके तीनों बिरादरभी इसी एहातेमें आराम फर्मा हैं. सय्यद जाफर कादरी (रह.), सय्यद ताहेर कादरी (रह.), सय्यद जाबिर कादरी (रह.) और सय्यद महेबूबशाह कादरी (रह.), खलिफा हजरते कदीरभी यहाँ आराम फर्मा हैं. फतेह दरवाजाहीमें खानकाये कदीरिया है. जहाँ हर माह हिलाली 13 तारीखको महेफिले फैजाने कदीर हुवा करती है. और चौदवी 14 तारीख आस्तानये कदीर हलकड़ा शरीफ पर.

हलकये वाड़ी जंक्शन : हजरते कदीरके दीरे कदीमसे लेकर आजतक अहेले सिलसिला वाड़ीके खिदमत मुस्तहक दुवा हैं. बेशक खिदमत करना हकभी है. चूँके हजरते कदीरसे कुर्बत है.

बुजर्ग अब्दुल नबी कादरी (बादशाहभाई) अब्दुल कादर कादरी साहब किराणा मर्चेंट, जिनके खिदमत काबिले जिक्र हैं. बुजर्ग सिलसिला अली मोहम्मद खान कादरी, बिरादर सरदार खान कादरी वल्द अब्दुल करीम खान कादरी नालवारी, मोहम्मद उस्मान साहब कादरी, शेरअली कादरी, हाजी करीम कादरी, सय्यदभाई कादरी मसालेवाले, हाजी अब्दुल रज्जाक कादरी, मोहम्मद अय्युब कादरी, अब्दुल रशीद कादरी, मोहम्मद बशीर कादरी, मुनीम अब्दुल नबी कादरी, मोहम्मद इबाजा साहब कादरी, मोहम्मद अन्सारी साहब कादरी, अब्दुल हाफिज सना भंडारी कादरी, मोहम्मद बुन्हानोद्दीन कादरी (बाबुमियाँ हमनवी), मोहम्मद इब्राहीम कादरी महेबूबनगरी, सय्यद करीम कादरी, सिद्दीक कादरी, जमी अहेले सिलसिला कदीरिया वारफ्तगाने कदीर हैं.

नवासये कदीर सादिकपाशा कादरी शरीके सजावते खिदमत हैं. अल्हाज मौलाना अब्दुल खालिक हैरत निजामी साहब दाम्मत खैरहमने हजरते कदीरका

एक तबील दौर देखा है. बुजर्गोंमें अल्हाज मोहम्मदअली साहब (मुन्शी) सदर जामे मस्जिद वाड़ी, मोहतरम सय्यद बहाउद्दीन हुसैनी साहब (चौदपारा) मुकदम माली हलकड़ा शरीफ मोहसिन् व शाहिद हैं, के किस तरहा हजरते कदीरने गुजारा है! खादिमकी खुशाबख्शी है के जो हजरते कदीरके सोहबत याफता रहे उन्हीकी शफाकत आज हमें हासिल है. हजरते कदीरकी जिन्दगीका हासिलही तबयकल है.

जैसा के किसी शायरने कहा है के-

शाही ना हुकूमत ब जोहर मौँग रहा हूँ
सौदा हो तेरा जिसमें वो सर मौँग रहा हूँ
बालोंमें दुतावोंमें असर मौँग रहा हूँ
मन्जिलके लिये रह तुजर मौँग रहा हूँ

(सादिक कदीरी हिगन्घाटी)

लुत्फे करीमी है के हजरते कदीर मन्जिले मकसूद पा गये
हाथ उठनेसे पहले अता कर दिया. देनेवाला सखी है बुला कर दिया.

(हैरत निजामी)

सिला खिदमतका मिलता है बजा तारीख शहिद है

जिगाहे हकशनाशी हो तो मन्जर खुद लुमावों है

(साहेब कदीरी)

हजरते कदीरने दामने करीमीसे फैजेयाब होकर जो कारहाये नुमायी अन्वाम दिये हैं, उसे अहेले नजर खूब जानते हैं. हजरत शेख करीमुल्ला शाह कादरी, चिश्ती का वतन सोनत जिला बींदर था. बारागाहे करीमी चित्तुप्पा आरामगाह हजरते करीम (रह.) है.

दीरे साबिकमें सिलसिलये आलियाकी मक्बूलियत खलिफा हजरते करीम (रह.) हजरत इबाजा सय्यद मोहम्मद बादशाह कादरी, चिश्ती, यमनी, कदीर (रह.) की खिदमत हलकड़ा और कुर्बोनुवारके मकाम नालवार, कुल्लूर और तरकश पेटसे मुनसलक रही. हजरते कदीरके खिदमतकी एक तारीख है, जो कुर्बत कदीर और निस्वते करीमसे वाबस्ता है. बारागाह हजरत सय्यद शाह गैब पीरवली (रह.) बिनका लाल्लुकभी सिलसिलये यमनसे है. इस बुजर्ग बारागाहके मुतव्वली हजरत करीमुल्ला शाह (रह.) साहब रहे. जिसके तहेत आजभी

जमीनात मौजूद हैं, हजरतके फ़ज्रुद अमानुल्ला शाह कादरी उला के बाद करीमुल्ला शाह कादरी (रह.) सानी नबीरये करीमी निगरी रहे. उसके बाद अमानुल्ला शाह कादरी, चिश्ती, सानी पड़पोते हजरते करीमुल्ला शाह (रह.) इस मुकामके निगरी और खिदमातपर फ़ायज़ हैं.

**हर दौर की यादोंके तस्सुल के सहारे
कुछ बरख़े वज़ा दुँभी उभर आते हैं देखो**

(साहेब कदीरी)

सय्यद हनीफ़ोद्दीन शाह कादरी वल्द हकीम सय्यद मुईनोद्दीन शाह कादरी हैद्राबादीको साहेब कदीरीने 14 मोहरम 1420 हि. मुताबिक 1 मे 1999 इ. बमौकये उर्से कदीर हलकड़ा शरीफ बरोज़ पीर खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईयासे सरफ़राज किया. (इसी मौकयेपर नबीरये हजरते कदीर ख्वाजा सय्यद अबुतुराब शाह कादरी चिश्ती, यमनी, तुग़ब कदीरी और नबीरये करीमी शेख अमानुल्ला शाह कादरी, चिश्तीको खिलाफ़ते चिश्तीया, निज़ामिया, बंदानवाज़ियासे मुशरफ़ किया.)

मोहम्मद अब्दुल अजीज़ शाह कादरी कताकोटा तालुका बनपती जिला महेबुबनगर, 22 रब्बिउस्सानी 1420 हि. मु. 5 ऑगस्ट 1999 इ. बमुकाम चिटगुप्पा शरीफ साहेब कदीरीसे मुशरफ़ बखिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईया हुये.

मोहम्मद ज़हिरोद्दीन शाह कादरी साकिन झर्गा हैद्राबादको नबीरये करीमी अमानुल्ला शाह कादरी चिश्तीने 22 रब्बिउस्सानी 1420 हि. 5 ऑगस्ट 1999 इ. बमौकये उर्से करीमी चिटगुप्पा शरीफ खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईयासे सरफ़राज किया.

मोहम्मद ख्वाजा शाह कादरी पोरेदूर जिला कड़पा, जो हजरते कदीर (रह.)के कदीम खिदमत गुज़ारोंमें शुमार किये जाते हैं, अताये कदीरी है, के 14 मोहरम 1421 हि. मु. 20 एप्रिल 2000 इ. बमौकये 22 वीं उर्से कदीर हलकड़ा शरीफ जानशिने हजरते कदीर साहेब कदीरीसे मुशरफ़ ब खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईया हुये. जो मिलादख्वाँ के नामसे मशहूर हैं.

14 मोहरम, 1421 हि. उर्से कदीरही के मौकयेपर साहेब कदीरीने अपने तायेरे चाचा मोहतरम सय्यद मोहम्मद शाह कादरी यमनी, रायचूरी को नेअमते

खिलाफ़ते कादरिया खुलफ़ाईया सोपी.

नवासये हजरते कदीर, दुस्तर हजरत खतीजाबीबीके बड़े फ़ज्रुद सय्यद मोहम्मद शाह कादरी वल्द सय्यद साबिरवली शाह कादरी साकिन कदीर मस्कन, फ़तेह दरवाज़ा हैद्राबाद, 14 मोहरम 1422 हि. मु. 9 एप्रिल 2001 इ. बमौकये 23 वीं उर्से कदीर हलकड़ा शरीफ साहेब कदीरीसे मुशरफ़ बखिलाफ़त कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईया हुये.

शेख सिराजोद्दीन शाह कादरी वल्द अब्दुल कादर कादरी, नुसरती साकिन पोरेदूर मुक़ीम आनंतपूर, बमौकये उर्से कदीर हलकड़ा शरीफ 14 मोहरम 1422 हि. मु. 9 एप्रिल 2001 इ. को साहेब कदीरीसे खिलाफ़ते कादरिया, आलिया, खुलफ़ाईयासे सरफ़राज हुये.

मोहम्मद जाफ़र शाह कादरी साकिन बनपती, 14 मोहरम 1423 हि. बरोज़ जुमा 29 मार्च 2002 इ. बमुकाम हलकड़ा शरीफ, साहेब कदीरीने खिलाफ़ते कादरिया, खुलफ़ाईयासे सरफ़राज किया.

इज़हारे तशवकूर

ब हम्दअल्लाह बड़ी तेज़ीसे तज्जकेरये कदीरकी तबाअतके मरहले त हुये. मोहतरम अब्दुल अजीज़ कादरीका खादिम तहेदिल मशकुर है, जिस हुस्ने अक़ीदतसे आपने काम अन्जाम दिया! ये मोहब्बते कदीरही है! अल्लाहपाक ज़जाये खैरसे नवाज़े! आमीन!

तज्जकेरये कदीरका टायटल और तसाविर बेंगलोरमें तबाअ हुये, जिसको मुक़रमी अब्दुल रहेमान कादरी केरलावाले मुक़ीम बेंगलोरने बड़ी ख़ूबी व ख़ुश अस्तुबीसे सर अन्जाम दिया. मौलाताला बचसीला पीरान सलासिल बेहतर सिला अता फ़मयि! फ़ज्रुद मसीहा सत्तार कादरी बेंगलोर, शमसोद्दीन कादरी, मुस्तक़ीम कादरीभी मुस्तहक़ दुवा हैं!

मजामीन का कम्प्युटर करनेवाले सय्यद मोहम्मद हारुन इख़्वाल और प्रिटींगकी जिम्मेवारी निभानेवालोंकाभी खादिम मशकुर है. इस ख़ुसूसमें हाफ़िज़ अब्दुलबारी निज़ामी फ़ज्रुद हजरत मौलाना हेरत निज़ामी साहब, मुक़रमी कातिब मोहम्मद जाफ़र साहबनेभी मआविनत फ़रमाई. खादिम मशकुर है. सय्यद ग़ौस

कादरी हाजी मियाँ कादरीभी खादिमके साथ शब बेदार रहे. दरअसल फजलो अताये कदीरही इस कामकी तस्मील है करना साहेब कदीरीकी ज़िन्दगीका हासिल ही सफ़र है.

सफ़रहीमें कुल बरकतोंका है राज
सफ़रहीमें है लज़्ज़ते दिलबवाज़
सफ़रहीसे है आसमों सरफ़राज़
सफ़र ज़िंदगीके लिये बग़ों साज़
सफ़र है हकीकत हज़र है मजाज़ (इक़बाल)

तहेरीर व तरीबमें सहुवन् कोई भूल हो तो खादिमको दरगुज़र फ़र्मायें।

तालिबे दुवा- खाक पाये ख़ैरो कदीर
ख़्वाजा सय्यद इब्राहीमशाह कादरी, चिश्ती, यमनी, बंदानवाज़ी
साहेब कदीरी (हलक़हा शरीफ़)



Hazrath Syed Shah
Mohammed Mohammedul
Hussaini
Sajjadah Nasheen Bargah-E-
Banda Nawaz, Gulburga
Shareef (K.S.)



Hazrath Syed Shah Mohammed
Mohammedul Hussaini
Sajjadah Nasheen Bargah-E-
Banda Nawaz, Gulburga Shareef
(K.S.)



Hazrath Syed Shah Mohammed Mohammedul Hussaini
Sajjadah Nasheen Bargah-E-Banda Nawaz, Gulburga Shareef with Hazrath
Syed Shah Kubululla Mohammed Mohammedul Hussaini Sahab,
Sajjadah Nasheen-Roza-E-Ganj Bakash, Gulburga Shareef



Urs-E-Quadeer, Halkatta
Shareef, Hazrath Syed Shah
Saheb Kusroo Hussaini Saheb,
Hazrath Syed Shah Hasan
Shabber Hussaini Saheb,
Hazrath Syed Saheb Shah
Asadulla Hussaini Saheb,
Gulbarga Shareef



Saheeb Quadeeri, Hazrath
Shaik Mohamed Shah
Quadri Bhopolisaheb,
Syed Husain Quadri
Kallipha



25th Urs E. Quadeer Halkatta
Shareef
Hazrath Shah Muhammed
Tajuddin Junaidi Saheb,
Hazrath Syed Shah Kazim Pasha
Saheb, Hyd., Hazrath Syed
Shah Ismail Peer Quadri Saheb,
Kurnool, Hazrath Mufti Kalil
Ahmed Saheb Shaikul Jame
Nizamiya, Hazrath Mufti
Azimuddin Saheb Jame
Nizamia, Hazrath Abdulla
Kuraishi Saheb, Qateeb Makka
Masjid Hyd.

कलामे क़दीर

हर रोज़ शय मुझे है मोहब्बत नमाज़की
मस्जिद ले ज़ारही है ये उल्फ़त नमाज़की

मोमिनको चाहिये के सदा यादे हक़ करे
लाखो इबादतोंमें इबादत नमाज़की

वो कुल्लसे हक़ीकी है और याद उन की है
हासिल हो या खुदा मुझे लज़्जत नमाज़की

नारे जहान्नीसे बचे जो पढ़े नमाज़
कुरानमें है देखो फ़ज़िलत नमाज़की

जन्नतकी गर उम्मीद अगर है तो इसमें है
मैं जानता हूँ रोज़ हक़ीक़त नमाज़की

बंदा नहीं खुदाका जो पढ़ता नहीं नमाज़
जो रखते हैं दिलोंमें बगावत नमाज़की

महेबुबे खुदा करते थे है वो नमाज़ ये
मेअराजे मोमेनीन है राहत नमाज़की

कुबेँ खुदा यक़ीन है देखो नमाज़में
इस्लामका सुतून है दीलत नमाज़की

यादव खुशू खुजूसे अदा गर हुई नमाज़
समझो क़दीर खुदासे है कुर्बत नमाज़की

कलामे कदीर

अयों दर नैन पिन्हीं हैं मोहम्मद
 हर एक शी के खुद दरमियाँ हैं मोहम्मद

वहाँ हैं वहाँ हैं कहाँ हैं मोहम्मद
 व तहेकीके पीरे मुगों हैं मोहम्मद

हकीकतमें साहेब जमाँ हैं मोहम्मद
 व तसदीक आखिर जमाँ हैं मोहम्मद

सब मोहताज कुल अन्बिया हैं मोहम्मद
 वो सरताजे पैगम्बरों हैं मोहम्मद

तुम्ही रहे कुल कुदसियाँ हैं मोहम्मद
 हमीं कुल नफ़स आप जाँ हैं मोहम्मद

हकीकतमें हक़ राजदौ हैं मोहम्मद
 जवाने अरब बन अयों हैं मोहम्मद

हर इक दिलमें कलमा रवाँ है मोहम्मद
 नहीं दिल वो बागे जिनों हैं मोहम्मद

कदीर कदरदौ कदरदौ हैं मोहम्मद
 अजीब शान, शाने सुबहां हैं मोहम्मद

कलामे कदीर

करीमा जाली सब्ज रंगवाई
 देहफ़िट अटरिया तीन फिट जाली, दरवाजे बाजू लगाई
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

जानिबे मगरिब लोटन शाह लेटे, मशरिक करीमा सजाई
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

तेरी कमाई जल्था नुमाई मौला क्या शान है किदरियाई करीमा
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

लाज रखो मोरे कलमेकी साजन, लुट तन मन धन लुटाई
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

हिन्द नूराना तुर्थत सुहाना, हिन्दु मुसलमाँ फ़िदाई
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

दासी कदीर इल्म सीना व सीना मुर्शिद नबीजीकी जाई
 करीमा जाली सब्ज रंगवाई

या सय्यदी

मरहबा स्वल्लेअला या सय्यदी या सय्यदी
आपका है आसरा या सय्यदी या सय्यदी

एक शिकस्ता नाव है तूफ़ानकी आगोश में
हो करम बहेरे खुदा या सय्यदी या सय्यदी

आप हैं बदरुदुजा नूरुलहुदा कैफ़ुल्वरा
आदमीयत की बक्रा या सय्यदी या सय्यदी

कलम-ए-बिल् कल्व क्या है वस्फ़े हजरतही तो है
हर नफ़स है बोलता या सय्यदी या सय्यदी

अशों कुरसी साकिनाने बहेरोबर लौहो क़लम
ज़रा ज़रा आपका या सय्यदी या सय्यदी

रोज़े महेशर काली कमलीमें पनाह दे दीजिए
तमके मारोने कहा या सय्यदी या सय्यदी

अए शहे अरबोअजम साहेब पे हो नज़रे करम
आपका है आपका या सय्यदी या सय्यदी

(उम्मीदवारे करम)
साहिब क़दीरी,
इलकहा शरीफ़



25th Urs-E-Quadeer,
Mushaira, Turab
Quadeeri

25th Urs-E-Quadeer,
Halkatta Shareef, Hazrath
Moullana Syed Shah Kazim
Pasha Quadri Almusavi
Saheb, Hazrath Shah
Mohmed Tajuddin Junaidi
Saheb, Sajjadda Nasheen,
Roza-E-Shaik, Gulbarga,
Hazrath Syed Shah Qubul
Pasha Sutari, Hyd., Hazrath
Syed Shah Habib Pasha
Makdoomi, Hazrath Syed
Bhauddin Husaini, Halkatta
Shareef



26th Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



26th Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



25th Urs-E-Quadeer,
Halkatta Shareef



25th Urs-E-Quadeer,
Halkatta Shareef,
Hazrath Syed Shah
Jameluddin Shrfi Saheb,
Hyd., Hazrath Syed
Shah Hamiddudin Shrfi
Saheb, Hazrath Syed
Shah Kazim Pasha
Saheb, Hazrath
Moulana Abdulla
Quraishi Saheb, Hyd.

कारवाने ज़िंदगी

आपके दमसे है कायम कारवाने ज़िंदगी
आपकी नज़रे करमही तोहै जाने ज़िंदगी

मेरी हाज़त पूरी होती है मेरे सरकारसे
मेरे आका मेरे मोहसिन निगेहबानी ज़िंदगी

ज़िंदगी ज़ेरे लहेद अपनी हकीकतके है साथ
और ज़ेरे आस्माँ गोचा गुमाने ज़िंदगी

एक जुरआ मेरे साक़ी तेरी नज़रोंसे मिले
बादवो मीना कहाँ हैं मेहेरबाने ज़िंदगी

क्या गिना सकता है साहिब आपके एहेरानको
आपके सदक़ेमें है दरअसलू शाने ज़िंदगी

साहिब कदीरी हलकटा शरीफ़

कलामे साहिब

उशशाक तो ऊरुजे सफ़र देखते रहे
अहेले खिरद हुदूवे बशर देखते रहे

सारी खुदाई होगयी उस सिम्त बाख़ुदा
मेरे हुज़ूर आप जिधर देखते रहे

उनकी निगाह हासिले इमान हो गयी
रगरगमें हम उसीका असर देखते रहे

लुप्तफ़ो करम तो आपके मख़सूस थे मगर
महेफ़िलमें एहेतियाते नज़र देखते रहे

साहिब यकीने मन्ज़िले मक़सूद हो गया
रेहरो गुबारे राहे गुज़र देखते रहे

कलामे साहिब

कितने इम्तेहाँ गुज़रे एक दिल बनानेको
शम्मा खुदही जलती है रोशनीके लानेको

आपसे ताल्लुकही ज़िंदगीका हासिल है
दिलकी राह पाई है उनके आने जानेको

अपना खूने दिल देकर इस चमनको सीन्चा है
अब बहार आई है हमको आजमानेको

इन्कलाबे आखिरका हल है तेरे सीनेमें
अब ज़माना बुंदेगा तेरे आस्तानेको

दफ़न करके हाथोंसे खाक डालकर बोले
कौन याद रखेगा मुहल्लतसर फ़सानेको

मेरा दिल मेरा इमाँ उनकी देन है साहिब
क़दमों वो आयेगे मेरे बख़्शवाने को

पीर कदीरा

रीशन शम्मा जैसा मेरा पीर कदीरा
दिलमें बसे है ऐसा मेरा पीर कदीरा

शाने करीमीके जल्वे दिखाये
दीदके प्यासे दर्शन पाये
भटके हुयेको राह दिखाये
साँचा गुरु है ऐसा मेरा पीर कदीरा

चमनी पिचाके रूप निराले
साँसोंमें कलमेको पाले
हा हू हे की धुनी रमाले
मन मंदिरमें बैठा मेरा पीर कदीरा

गौसो कुतूब अबदालो कलंदर
जपते हैं माला साँसके अन्दर
मोती मिलेगा डुंड समन्दर
साहिब राज है ऐसा मेरा पीर कदीरा



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Hazrath Syed Shah Khursoo
Husaini, Gulbarga Shareef,
Hazrath Aqueel Baba Saheb,
Gulbarga Shareef,
Shri Appa Sab. Gulbarga



बाज़ारे रहेमत

गर्म है बाज़ारे रहेमत जोभी चाहो मांगलो
है मोहम्मदकी हुकूमत जोभी चाहो मांगलो

देनेवाला दे रहा है लेते हैं शाहो गदा
सबपे है यकसाँ इनायत जोभी चाहो मांगलो

उनके ऐहसानों करमकी बात है जो हो गई
गुम्बदे खिज़रोंसे कुर्बत जोभी चाहो मांगलो

क्या नहीं मिलता मेरे सरकारके दरबारसे
मिलती है इस दरसे इज़्जत जोभी चाहो मांगलो

हासिले तक्रदीर है आमद मदीनेकी तुराब
है यक़ीनवालोंकी जन्नत जोभी चाहो मांगलो

सय्यद अबुतुराब शाह कादी, तुराब कदीरी
हलकट्टा शरीफ़

तज़केरये कदीर केलिये
सिलसिलये कदीरियाके शोअरके कलाम तबर्ककन पेश किये गये हैं.
दिलकी धड़कनसे रब्त है किसका
तज़केरा आपहीका होता है

कलामे यक़ीन

मोहम्मद उस्मान शाह क़ादरी (मुसव्विर)

अल्मुतख़ल्लिस यक़ीन सिकंदराबादी

मेरा माल और जान तेरे हवाले मेरा दीन व ईमान तेरे हवाले
मेरी जान व ईमान तेरे हवाले मैं आशिक हूँ तेरा तू अपना बनाले
औ सैय्यद मोहम्मद मेरे भोले भाले

तू सादात है तेरे घरकी है दीलत लुटाता है जगमें बिला क़ैद व क़ीमत
न देखा सखीदाता ऐसा बाहिम्मत सियाह कारपर कर तू चम्पे इनायत
तू ही लाज रख मेरी वो कमलीवाले

मैं भूका हूँ तेरीही लुत्फ़ो करमका मैं जामे मोहब्बतका हूँ तेरी प्यासा
नहीं कोई बल्लाह तू ही दे सहारा मैं मोहताज चम्पे करमका हूँ तेरा
सहारा है तेरा अब तू ही संभाले

तेरे आगे है हेच सारा जमाना है जैसाके सूरज को शम्मा दिखाना
तू पाया है कलमेकी कलका खजाना सज़ावार है तुझको कलमा पढ़ाना
धनी है तू कलमे का शिवराज वाले





Hazrath Syed Shah Mohammed Mohmmedul Hussaini Saheb,
Sajjada Nashin Bargah-E-Bandanawaz, Gulbarga Shareef,
Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef



26th Urs-E-Qadeer
Halkatta Shareef

Hazrath Syed Shah Kusroo Husaini Saheb, Janashin E. Sajjada Nasheen,
Bargah-E-Bandanawaz, Gulbarga Shareef

तेरे आगे बनकर करे क्या खलीफ़ा कहां इश्क़ का लाये ये मशाला
जरा चाहिये इसकोभी हीसला ये ख़िदमत नहीं होती हमसे अदा
फिर उसपर भी देता है तू ही निभाले

सिवा तेरे सजती नहीं है ये इज़्जत भिकारी हूँ दरका बस इतनी है निस्वत
तेरे वादा श्वालोंकी तलछट गनीमत अदा हो नहीं सकती हमसे ये ख़िदमत
बलानोश हूँ सिर्फ़ बूही सुंघाले

ये हलता है कट्टा न गिरता कभी है न सड़ता न गलता न जलता कभी है
खेड़े गांवो दिहातके हैं मुअम्मे तू हल करता मसलों के कट्टे न कट्टे
फ़क़त कलमा तय्यबसे हलकट्टावाले

तमन्ना है तेरेही क़दमोंपि सर हो अजल भी खड़ी हो शफ़ाअत तेरी हो
मेरा ज़ादेराह कलमा तय्यब बंधा हो ज़बां सेभी हरदम अदा हो रहा हो
गुनाहगार जाता है इज़्जत बचाले

तलब रोज़े महेशर करे कारनामा न सूझेगा याँ कोई हीला बहाना
सीयाह है यकीं तेरा आमाल नामा अभिमे तू करले अपना ठिकाना
कदीर अपनी कम्बल में हमको छुपाले
ऐ सैय्यद मोहम्मद मेरे भोलेभाले

कलामे जाकिर

(हजरत मोहम्मद जकरिया कादरी जाकिर सिकंदराबादी)

नफ़सकी आमदोशुदकी जो करता है निगेहबानी
 उसीपर मुन्कशिफ़ होते हैं असरारे खुदा दानी
 चला तो है हकीकत खोलने तख़लीके आलमकी
 मगर अपनी हकीकत आज तक जानी न पहेचानी
 न ज़ीके मन अरफ़ है और न शौके खुद शनासी है
 मुसलमाँ गोरमें हैं और किताबोंमें मुसलमानी
 बहोत कम हैं उठा लेते हैं जो बारे अमानत को
 नहीं है शेख़ आसाँ कलमा तथ्यवकी निगेहबानी
 जो हैं साबित कदम राहे सुलूके फ़क्ररो फ़ाकामें
 हकीकत में वो करते हैं दो आलमकी जहाँ बानी
 वो आरिफ़ हूँ के हरदम झूलता हूँ दमके झूलेमें
 इसी झूलेसे हासिल है मुझे मेराजे इफ़्तानी
 जहे किस्मत के अपने पीरसे हमनेभी पाया है
 वो झूला जिस्मे झूलते हैं जनावे गौसे समदानी
 ये फ़ैजे मुशिदे कामिल कदीर बा खुदा का है
 मुझे जाकिर बनाकर सौंपदी दमकी निगेहबानी

रख तारे नफ़सपर ध्यान कामिल है यही इमान
 सांसे हैं जो हरदम जारी कलमेके हैं ये असरारे ख़फ़ी
 इमानके हैं ये दो मोती इस राजको पाये हक़के बली
 क्युँ जानके है अनजान कामिल है यही इमान
 कलमाहीतो सारी ज़ीनत है कलमेहीमे कुलकी हकीकत है
 कलमाही तो जाने इबादत है कलमाही कलीदे जन्नत है
 पुख़्ता है यही इफ़्तान कामिल है यही इमान
 गिर जाएगा जब नासूती महेल तू अक़लके दुश्मन अबतो संभल
 इस्लाम का फ़ज्र है ये अख़्बल तहेकीकसे ले कलमे की कल
 कुछ सोच समझ नादान कामिल है यही इमान
 कुरआने वजूदके सी पारे पढ़ उनको कभी अँ बेचारे
 मुशिदही पढ़ते हैं सारे फिरता है कहाँ मारे मारे
 कर अपनी ज़रा पहेचान कामिल है यही इमान
 नासूतसे चल मलकूतमे आ मलकूतसे चल जबरूतमे आ
 जबरूतसे चल लाहूतमें आ लाहूतसे चल हाहूतमें आ
 स्याहूत है आलीशान कामिल है यही इमान
 याँ नग़दही सीदे हैं बिकते इस हाथसे ले उस हाथसे दे
 या मोल ले जिसका जी चाहे और दामभी हैं सबसे सस्ते
 जारी है यहाँ फैज़ान कामिल है यही इमान

इस इल्मको जिसने है जाना इस कलको है जिसने पहचाना
 कायम जो रखे ताना बाना मोमिन है वही मर्द दाना
 इस भेदको पहले जान कामिल है यही ईमान
 जो साँचे गुरुके हैं चले काटे न कटे मारे न भरे
 दज्जालका बसभी चल न सके होते हैं बड़े धुनके पक्के
 इनको न समझ नादान कामिल है यही ईमान
 है साफ़ मेरे मुशिदका चलन और पाक अछूता है दामन
 क्या रूप है क्या प्यारी है फव्वान् इस रूपपे वारूँ तन मन धन
 ये जानभी है कुरबान कामिल है यही ईमान
 अब औजये मेरी किस्मत है मेराजकी हासिल दीलत है
 सद शुक्र कदीरसे निस्वत है जाकिरपे खुदा की रहेमत है
 ये पीर का है एहसान कामिल है यही ईमान

हजरते जाकिरके कलाम दीरे कदीरकी अनमोल यादगार हैं.
 बरसहाबरस हजरते कदीर (रह.) ने जाकिरसाहबके
 कलामको समाअत फरमाया - दुवाओंसे नवाजा !



Janasheen Hazrath-E-Quadeer, Khwaja Syed Ibrahim Shah Quadri Chisty
 Yamni Bandanawzi Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef



Sandal Laate Hua
Khwaja Syed Abu
Turab
Shah Quadri Chishty
Yamani



Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



Sajjada Nasheen Astana-E- Quadeeri Halkatta Shareef, Khaja Syed Ibrahim
Shah Quadri Chisti Yamani Bandanawazi Sahab Quadeeri, Nabiraye Sahab
Quadeeri Syed Ahmed Mohiuddin Yamani, Syed Hamid Mohiuddin Yamani,
Shaikh Abdulla Shah Quadri (Kerala wale), Mashaigeen, Khulpha, Murcedeen

बाश्शुरावे क़ल्बी

मुरीद सादिक अब्दुल हादी अलमुतख़ल्लिस
हारिस हैद्राबादी

ऐ मेरी नुरे नज़र रुहे मुअत्तर हाफ़ेज़ा (क़.)

भूल जाऊँ मैं तुम्हारी याद क्यूँकर हाफ़ेज़ा (क़.)

बापकी लख्ते ज़िगर हो जाने मादर हाफ़ेज़ा (क़.)

फ़ातेमा (क़.) बिन्ते नबी (क़.) की आले अतहर हाफ़ेज़ा (क़.)

ग़ुम हुवा जाता हूँ तेरी यादमें दो दो पहेर

हाफ़ेज़ा (क़.) कमज़ोर करदी याद आकर हाफ़ेज़ा (क़.)

वाइसे सद रंजोगम आखिर बनी माँबापकी

अशक़आवर आजतक हैं याद कर कर हाफ़ेज़ा (क़.)

इल्मे सीनासे धा रोशन दिल तुम्हारा इसलिये

नूरसे पूरनूर है क़द्वे मुन्नवर हाफ़ेज़ा (क़.)

मिलही जायेंगे दरे जन्नतपे किजे इंतज़ार

आ रहें हैं कलको कलमेकी पकड़ कर हाफ़ेज़ा (क़.)

हो चुके ग्यारा मगर है बारबेका इंतज़ार

नाहो अकरब कहे रहा है दिन मुकर्र हाफ़ेज़ा (क़.)

है उसी दिनके तजस्सुसमें रवाँ उमरे रवाँ

फिर रहा हूँ रखके तफिया मैं खुदापर हाफ़ेज़ा (क़.)

जहे अमज़दसे कहो पर कीजिये इतना असर

हो दरख्ते फ़ातेमा (क़.) अब बारआवर हाफ़ेज़ा (क़.)

नाम है सय्यद मोहम्मद (क़.) यादशाहे कादरी

मैं क़दीरे बेनवाँ हूँ वो है क़ादिर हाफ़ेज़ा (क़.)

इल दो ख़्याने करमसे इसको भी तुकड़ा जरा

येभी हारिस आपका है एक सगेदर हाफ़ेज़ा (क़.)

कलामे हारिस

दम आता है दम जाता है आदमको भरोसा क्या दमका
 दमभर नहीं मारा गैरका दम रुत्वा जो कोई समझा दमका
 घर कर लिया कल्वे आदममें फिरने लगा दू के आलममें
 उस पारके आनेजानेका क्या खूब मिला रस्ता दमका
 जब बन गई मिट्टीकी मूरत बेसूरतीको देकर सूरत
 कुदरतने सजाकर खूब कहा क्या खूब बना खाका दमका
 दमहीसे तबाही जिस्मकी है दमहीसे बना आदम आला
 सच पूछोतो रोजे महेशरमें रहेता है फ़क़त झगड़ा दमका
 दम हाकिमे शहरे हस्ती है दम तनके नगरमें बस्ती है
 समझो न कभी दमको अदना रुत्वा है बहुत आला दमका
 ये दम दमे ग़फ़लत है तेरा शैतानका इसमें है केरा
 दम देके कदीरको ऐ नादाँ करले तू अभी सौदा दमका
 कलमेके दो जूज दो हक़े दम समझा न में हारिस हक़की कसम
 जबतकके यमनके वाशीसे खिंचवा न लिया नक़्शा दमका



Syed Shah Kamaal Pasha
 Quadri Nabiraye
 Mashug-e-Rabbani
 (R.A.) Warangal,
 Shehzaada-E-Ghousul
 Azam Maulana Syed
 Shah Kazim Pasha,
 Hyderabad, Hazrath
 Anwaar Ullah Hussaini
 Hyderabad, Saheb
 Quadeeri,
 Halkatta Shareef

Hazrat Syed
 Mohammed Shah
 Quadri Raichur, Kamaal
 Pasha Saheb Warangal,
 Maulana Syed Shah
 Qubul Pasha Shuttari
 Jaanasheen-E-Hazrath-E-
 Kaamil Saheb Shuttari
 Hyd., Hazrath Maulana
 Shuttari Saheb Qibla
 Sajjada Nasheen Gujrati
 Shah Saheb Aurangabad



Moulana Hazrath Shah
 Tajuddin Baba Quadri
 Sajjada Nasheen Roza-E-
 Shaikh, Gulbarga,
 Hazrath Syed Anwarulla
 Hussaini, Hyderabad,
 Moulana Syed Habeeb
 Pasha, Hyderabad,
 Moulana Khaaja Shareef
 Saheb Jamia Nizamia
 Hyderabad.

Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Hazrath Syed Shah Ameenulla Hussaini Saheb, Sajjadanashen Bargah Hazrath Abul Faiz Bidar Shareef, Hazrath Syed Shah Matheen Hussaini Saheb, Bidar and Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef



कलामे हारिश है द्वाबादी

आके दुनियामें दमसे क्या न करे
शर्म ये है खुदा खुदा न करे

राहबर कौन रहेनुमा क्या है
कोई अबतक ये फ़ैसला न करे

घरमें खुद अपने कीमियागर है
खोज इसकी तो हम ज़रा न करे

की जो घरसों कदीरकी खिदमत
फिरभी जानूँके हक़ अदा न करे

कलेमा खुद जान है कयामतकी
ये समझनेका हौसला न करे

उसको जीनेका हक़ कहाँ हासिल
किमते साँस जो अदा न करे

गर सदा दे ग़दा न ऐ हारिस
भीक मालिक उमे अता न करे

नज़रानये अक़ीदत बारगाहे हज़रत माशूके रब्बानी (रह.) वरंगल

बहारे लुफ़्ते क़य्दानी शहे माशूके रब्बानी
शहे फ़क़रे फ़कीरानी शये माशूके रब्बानी

दक़नमें दीनके बानी दिखादो जल्वा नूरानी
उरस् जागीर मुल्तानी शये माशूके रब्बानी

हे दिलमें आजकल ख़दशा बिगड़नेको है कुल नक़शा
ख़ुदा बाकी ख़ुदी फ़ानी शये माशूके रब्बानी

जमाले पाकका सद्का ज़मीने पाकके कुर्बानी
वो पाक आस्तानके बानी शये माशूके रब्बानी

हुज़ूर दिलसे है मेरी अर्ज़ है करना आपपर ही फ़र्ज़
करो दिल घरकी निगरानी शये माशूके रब्बानी

तुम्हीं हो अवलिया सानी तुम्हीं हो अम्बिया सानी
तुम्हीं हो इल्मे हक़क़ानी शये माशूके रब्बानी

कदीर कुदरत ख़ुदाकी देख दो आलम एकही है एक
वो यक़ता शाने रब्बानी शये माशूके रब्बानी

कलाम काज़ी सय्यद मीर साहब कादरी अलमुतख़ल्लिस मीर (प्रदातुर ज़िला कड़पा) काज़ी तालुका बदवेल

नफ़स् नफ़स्से जो आवाज़ आरही है मुझे
पुकार उनकी ये शायद बुला रही है मुझे

वफ़ुरे इश्क़में ऐ दोस्त जा रहा हूँ मैं
किसीकी याद हरएक दम सता रही है मुझे

हुयी है जबसे मेरे दिलको उलफ़ते जाना
मेरेही दिलकी हक़ीक़त गुमा रही है मुझे

हे नूर आपका ये नूर कल्मये तय्यब
तुम्हारी आमद पैहम सत्ता रही है मुझे

ये और बात है क़िस्मतकी या क़दीरअल्लाह
तुम्हारी यादही दर दर फिरा रही है मुझे

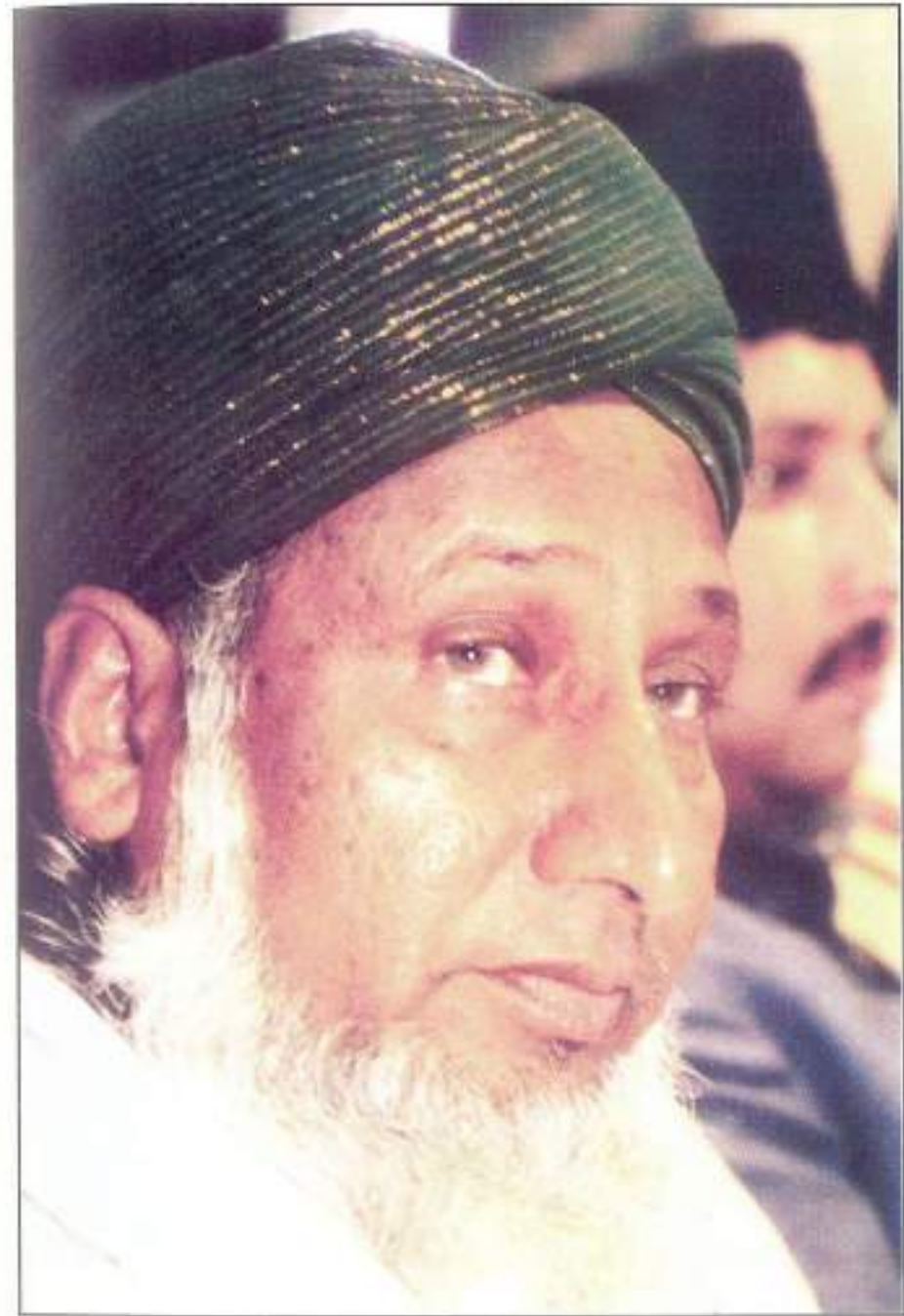
ऐ मीर इश्को मोहब्बतकी ज़िंदगी अपनी
ग़म उनका लहेजा ब लहेजा ख़िला रही है मुझे

ब-कलम साबिर तवक्कली शाहीन करीम नगरी

सरे अश्वरी लिखा हुवा है कलमये तय्यब
 जहरे इस्तेदारे किब्रिया है कलमये तय्यब
 हरिमे रंगोबू की इब्तेदा है कलमये तय्यब
 जहाँने आरजूकी इन्तेहा है कलमये तय्यब
 वजूदे आदमियतकी बक्रा है कलमये तय्यब
 शअुरे कुफ्रोदीकी इस्तेक्रा है कलमये तय्यब
 अमीरे कारवाँने अवलिषा है कलमये तय्यब
 मक़ामे इस्तेक्राये अम्बिया है कलमये तय्यब
 शबे असरा शफ़िउल मुज़्जबी (स्व.) जो तोहफ़तन् लाये
 वो ला क़ीमत मताये बेबहा है कलमये तय्यब
 ये फ़र्जे दायमी बिल् क़ल्ब पूरा होतो क्या कहने
 के सरताषा जमाले किब्रिया है कलमये तय्यब
 जहाँमें दीलते इमाँ उसीके हाथ आई है
 दक़ने दिल जिसे हासिल हुवा है कलमये तय्यब
 कदीरअल्लाहके सदक़ेमें ऐ शाहीन लाखौनि
 नफ़स् की आमदो शुदमें सुना है कलमये तय्यब

ने उमरे ख़िज़र चश्मये हैवान अता कर
 ने गंजेगिराँ मुल्के सुलेमान अता कर
 ऐ बहेरे करम तिज़नये फ़ैज़ाने करम हूँ
 अन्वारे नफ़स् कलमये इरफ़ान अता कर

सं० 1961



Hazrat Sahib Quadeeri



Hazrath Syed Abuturab Shah Quadri Chishty Yamani



Syed Ahmed Mohiuddin Yamani
S/o Syed Abuturab Shah Quadri
Grand Sons of Hazrath Khwaja Syed
Ibrahim Shah Quadri Chishty Yamini
Saheb Quadeeri Halkatta Shareef

Syed Hamid Mohiuddin Yamani
S/o Syed Abuturab Shah Quadri
Grand Sons of Hazrath Khwaja
Syed Ibrahim Shah Quadri Chishty
Yamini Saheb Quadeeri Halkatta
Shareef



Syed Shahid Mohiuddin Yamani
S/o Syed Abuturab Shah Quadri
Grand Sons of Hazrath Khwaja Syed
Ibrahim Shah Quadri Chishty Yamini
Saheb Quadeeri Halkatta Shareef



Syed Ahmed Mohiuddin Yamani S/o
Syed Abuturab Shah Quadri.
Grand Sons of Hazrath Khwaja Syed
Ibrahim Shah Quadri Chishty Yamini
Saheb Quadeeri Halkatta Shareef



Syed Hamid Mohiuddin Yamani
S/o Syed Abuturab Shah Quadri
Grand Sons of Hazrath Khwaja
Syed Ibrahim Shah Quadri
Chishty Yamini Saheb Quadeeri
Halkatta Shareef



Syed Shahid Mohiuddin Yamani
S/o Syed Abuturab Shah Quadri
Grand Sons of Hazrath Khwaja Syed
Ibrahim Shah Quadri Chishty Yamini
Saheb Quadeeri Halkatta Shareef

तमन्ना-ए-आख़र

दीदये बीना अता कर रुहकी पहचान दे
दनेवाले मुझको अपने आपका इफ़्तान दे

कौन हूँ कैसे बनाहूँ किसलिये आया हूँ मैं
कमसे कम इतना तो मुझको इल्म दे इफ़्तान दे

मुक्तेलाये नूरो जुल्मत तिरनये तहेकीक हूँ
अब्दो रखको जान लूँ वो जौहरे इमान दे

अपनीही हस्तीमें हर शैका तमाशा देखलूँ
देखनेवालेको ऐसी देखनेकी शान दे

एकही पलमें तिलस्में कुफ़्रोईमाँ तोह दूँ
नुक्तये वहेदतका वो उमड़ा हुवा तूफ़ान दे

अपने मोहताजे करमपरभी खुदारा यक नज़र
बेसरो सामाँ खड़ा हूँ साज दे सामान दे

वक़्ते आख़र नूरकी ख़िलअत् अता फ़रमा मुझे
अपनी खुशनुदीका मेरे हाथमें फ़र्मान दे

जैरे जैरेमें जमाले यारका परतव मिले
वो निगाहे शौक़को आईनये इफ़्तान दे

बस यही शाहीनकी यक इल्तेजा है या क़दीर
मेरी इक इक साँसमें मुँ बोलता कुरआन दे

ख़लिफ़ा हज़रते क़दीर (रह.)

सय्यद मोहियोदीन शाह क़ादरी, साबिर, तवक्कली, शाहीन
करीम नगरी, (3-3-1970)

सरे अर्शेबरीं हक़ने लिखा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 सिक़ातो जातका परदा बना कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 अज़लमें हक़तालाने पढ़ा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 मोहम्मद (स्व.)ने मोहम्मदसे सुना कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 सफ़े अरवाहमें तस्दीक़की सिद्दीक़े (स्व.) अकबरने
 अली (स्व.) ने बतने मादरमें पढ़ा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 जहाँ क़ल्बों नज़रने मोज़िज़ाते मुस्तफ़ा (स्व.) देखे
 तहे दिलसे सहाबाने कहा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 सरे मिसाक़ नबियोनि दिलोज़ासे गवाही दी
 ज़वाने मन अरफ़से ज़ब सुना कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 बुलाकर अर्शपर जब हक़ने खुद तस्दीक़ फ़र्माईं
 शबे मेराज पूरा हो गया कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 मेरा इमान है वाईज़ ये दुनिया हो या वो दुनिया
 यक़ीनन् हर जग़ा बख़्शायेगा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 क़सम अल्लाहकी उसने दो आलमके मज़े लूटे
 खुलूसे दिलसे जिसने पढ़ लिया कलेमा मोहम्मद (स्व.) का

जिसे अल्लाहने अपनेलिये मख़सूस फ़र्माया
 उसे बिल्क़ल्ब हासिल होगया कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 कहाँकी आतिशे दोज़ख़ ये दोज़ख़को बुझा देगा
 ज़वाने दिलपे जबभी आयेगा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 ज़मींसे आस्माँतक ज़रा ज़रा विर्द करता है
 खुदाई पढ़ती है सुबहोमसा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 बरोज़े हज़्र सय्यके रूबरू नूरे खुदा बनकर
 सरे अर्शेबरीं ले जायेगा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 दमे आख़िर या कब्रों हज़्रमें कब भूल सकता है
 किताबे दिलपे जिसने लिख लिया कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 मक़ामे आबो खाक बादो आतीश जानना होता
 किसी ज़िंदा नफ़स् यमनीसे पा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का
 कहाँकी लाश ऐ साबिर कफ़न तक गल नहीं सकता
 यक़ीने क़ल्बसे जिसने पढ़ा कलेमा मोहम्मद (स्व.) का

बक़लम शाहीन क़रीमख़तारी

साँस आती है साँस जाती है	कलमये मारेफ़त सुनाती है
जिसके पहलूमे दिल मचलता है	ज़िंदगी उसको रास आती है
वो जो आजाते हैं कभी दिलमें	रुहे बेताब सर झुकाती है
जब ग़मे चार सर उठाता है	ज़िंदगी रंग व नूर पाती है
इक नज़र वो जो देखलेते हैं	हर नज़र इन्क़लाब पाती है
जब नकाबे खुदी उलटता है	मन अरफ़की बहार आती है
कौन महेबे ख़िराम है दिलमें	ज़िंदगी फिरसे गुनगुनाती है
जब उन्हे हम ख़ियाल पाता है	बेकरारी करार पाती है
जब बर्बते दिल जो गुंज उठता है	हसरते दीव मुस्कुराती है
कौन आया लिबासे अनसरमें	बज़मे हस्ती सँवारी जाती है
कोई हक़ बात जब निकलती है	यमनी ख़्वाजाकी याद आती है
बारगाहे क़दीरमें ऐ दिल	सबकी बिगड़ी बनाई जाती है
उनका शाहीन मैं ख़लिफ़ा हूँ	जिनसे दुनिया मुराद पाती है





Jalsa at Bellary held on 6-7-2004, 50th Year Thakmil-E-Quailaafath
Janasheen-e-Hazrath-E-Quadeer, Hazrath Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef,
Sadaarath Hazrath Khwaja Hassan Sani Nizami Sahebquibla
Sajjadanashen, Darga Mahboob-E-Ilahi, Delhi

नाअते शरीफ़

किस ज्ञानका आलममें ये गुलज़ारे नबी (स.) है
हर फूलमें आईनये रुख़सारे नबी (स.) है
हर मस्ते अज़ल आज तलबगारे नबी (स.) है
बल्लाह अजब दौलते दिदारे नबी (स.) है

जिस सिम्त नज़र इलिये आसारे नबी (स.) है
अफ़सोस हकीकतको मुसलमान न समझे
कुछ शरहे सदर मक़सदे इमान न समझे
इकरार व अमल क़ल्बका इरफ़ान न समझे
इतनाभी ज़मानेमें ये नादान न समझे

तौहीदकी बुनियादही इकरारे नबी (स.) है
जिस नामकी तस्बीह पढ़ी ज़िन्नो बशरने
जिस नामकी तकबीर कही शामो सहेरने
जिस नामसे हरबात सुनी क़ल्बो नज़रने
जिस नामको अपना लिया अल्लाहके घरने

वो नाम यही परदये असारे नबी (स.) है
विलक़ल्ब ताल्लुक हो अगर शाहे ज़मनसे
तौहीदे वजुदी हो रवाँ गंगो ज़मनसे
मिट जाये अगर नज़्शे खुदी फ़िक़्रो ज़हनसे
तस्दीक़ इनायत हो जिसे पीरे यमनसे

दुनियामें वही साहिबे आसारे नबी (स.) है
जो तोहफ़ये मेराज दिया क़ल्बे नबी (स.) ने
हर सौंसमें दोहरया जिसे पिरोखलीने
इमान समझ रखा है जिस शै को सर्भाने
शाहीन हकीकतमें ये समझा न किसीने

फ़िरदोसे बर्री सायाये दिवारे नबी (स.) है

आईनये जहूर है सूरत रसूल (स्व.) की

इस्लाम का मुतालेबा निस्बत रसूल (स्व.) की

इमान का तकाजा इताअत रसूल (स्व.) की

तौहीदका सबात रिसालत रसूल (स्व.) की

अल्लाहकी दलील शहादत रसूल (स्व.) की

सरमाये हयात इताअत रसूल (स्व.) की

तामीरे कायनात है खिदमत रसूल (स्व.) की

इमाँकी पहेली शर्त मोहब्बत रसूल (स्व.) की

अल्लाहसे मिलाती है निस्बत रसूल (स्व.) की

तक्मीले बंदगी है इताअत रसूल (स्व.) की

मेराजे अबदिथत है मोहब्बत रसूल (स्व.) की

मियारे आबो गिल है शरियत रसूल (स्व.) की

तस्कीने कल्बो जाँ है तरीकत रसूल (स्व.) की

ताफ्सीरे मन अरफ़ है हकीकत रसूल (स्व.) की

आईनये जहूर है सूरत रसूल (स्व.) की

वेशक़ जमी सिफ़ाते इलाहीसे मुनस्सिफ़

सूरत ग़रे हयात है सीरत रसूल (स्व.) की

वल्लाह वो लईन मुसलमाँ नहीं नहीं

जिसमें न हो ज़राभी मोहब्बत रसूल (स्व.) की

ऐ दोस्त एक मरहलये कद्रो हब्र क्या

हर फ़ैसले पे होगी ज़रूरत रसूल (स्व.) की

हम क्या हैं अंबियाने सरे आम कहे दिया

रहेमतभी चाहती है शफ़ाअत रसूल (स्व.) की

जबके सरे मलायका सज़देमें गिर पड़े

खुद उनके दिलसे पूछिये अज़मत रसूल (स्व.) की

ऐ मुनकरे कमाले नबुव्वत में क्या कहूँ

नबियोपे शर्फ़ रखती है उम्मत रसूल (स्व.) की

जबसे दिलो निगाहमें कलमा समा गया

हर साँस दे रही शहादत रसूल (स्व.) की

उनके वग़ैर कलमये तौहीद ना तमाम

तक्मीले मनअरफ़ है शहादत रसूल (स्व.) की

शाहीन उनके नामपे सौबार मर मिटूँ

एकबार हो जो नज़रे इनायत रसूल (स्व.) की

कलामे शाहीन

तक्मीले कायनात का उन्था नमाज है
 इन्सानियतकी सुबहे दरख्शाँ नमाज है
 मेअराजे रंगो नूरका सामों नमाज है
 मोमिनके हकमें तोहफये बज्दों नमाज है
 तक्मीले आरजूये दिलो जाँ नमाज है
 गामो सहेर तिलावते कुरआँ नमाज है
 इमाँ सरापा कलमेंकी तस्दीक है मगर
 ऐ कलमेंवालो ज़ीनते इमाँ नमाज है
 हर साँस कहे रही है बज्दो शहूदमें
 खुद अपनी कायनातका इराफ़ाँ नमाज है
 इस्लाम का सुतून शरीयत की आवरु
 देशक मुकुने जिस्मो दिलो जाँ नमाज है
 ज़ीके निगाह शौके तजस्सूस मिले अगर
 शाहीन खुद बज्दमें पिन्हा नमाज है



Syed Ali Hussaini Sahab presence on the occasion of Holy Dasthar Bandhi Programme, Gulbarga Shareef



Sahab Quadeeri Grand Son
Ahmed Ba Ba Yamni



Hazrath Sahab Quadeeri &
his son Abuturab Quadeeri



Sahab Quadeeri with his son Syed Abuturab Shah Quadri and his grand sons - Syed Ahmed Mohiuddin Yamani, Syed Hamid Mohiuddin Yamani, Syed Shahid Mohiuddin Yamani

Urs - E- Kareem



मनकबत

(बघौकए उमें शरीफ हज्रते कदीर (रह.) हलकट्टा शरीफ)

क्या राम जब अपने साथ खुदाए कदीर (रह.) है
राजी हैं उसपे जो भी रजाए कदीर (रह.) है

हर साँस ज़िंदगी की बराए कदीर (रह.) है
जो कुछ है अपने पास अताए कदीर (रह.) है

मफहूम ला इला का है खुद सुपूदगी
इकरार कलमा, अहेदे बफाए कदीर (रह.) है

मिलती है हर कदमपे निगाहोंको रोशनी
धड़कन नहीं है दिल की सदाए कदीर (रह.) है

दौलत भी रखके लोग सुकूँ आशना नहीं
कंबलमें अपनी मस्त गदाए कदीर (रह.) है

दुनिया किसीके दरसे भी वाबस्तगी रखे
अपना सरे नियाज बपाए कदीर (रह.) है

सफलत का क्या सवाल है यादे कदीर (रह.) से
खुद ज़िंदगीका नाम दिलाए कदीर (रह.) है

असरार मन अरफके जो इन्सानपर खुले
फ्रेजे निगाह सीना कुशाए कदीर (रह.) है

खाली नहीं है साँस कोई इसके जिक्रसे
यादे कदीर दिलमें ब जाए कदीर (रह.) है

हाथल हों शौक राहमें कितनेही फासले
मंजिल नज़रकी जल्था सराए कदीर (रह.) है

(हज्रत ख्वाजा शौक हैदावादी)
(14 मोहरम 1404 हि.)

नज़रे अक़ीदत

जहाँभी जलवानुमा उनको पा लिया मैंने
सरे नियाज़ वहीं बस झुका लिया मैंने

नहीं उठेगा तेरे दरसे देख सर मेरा
झुका लिया जो इसे बस झुका लिया मैंने

वो राज़े हक़ जो नहीं था किसीके सीनेमें
हज़ार शुक्र उसे आज पा लिया मैंने

किसीकी नज़रे करम आज मुझपे होजाये
तलबका हाथमें कासा उठा लिया मैंने

मैं बनके दहेरमें निकलूँगा तेरा दीवाना
इसी ख़ियालको दिलमें जमा लिया मैंने

ज़ियाए नूरसे दिल जगमगा उठा है आज
के राज़ क़लमये तख़य्य़व का पा लिया मैंने



Shri Jagannath Maharaj
Inchirigniri Mutt



Shri Siddaveera Degai, Poojya
Shri Totendra Swamy Nalwar,
Shri Gangadhar Dewarao Malkhed



Poojya Shri Dr. Sharana
Bassappa Appa and Saheb
Quadeeri



Appa Saheb, Munindra Swamy
& others



Hazrath Khaja Rashid Khanoomi
Saheb Sajjada Nasheen, Gwalior



The Holy "Urs-E-Quadeer Sandal"
carrying by Spl. Train from
Hyderabad to Wadi Jn.



Hazrath Syed Shah Mohammed
Mohammedul Husaini, Hazrath
Syed Shah Khubululla Mohammed
Mohammedul Hussaini and Syed
Shah Hameduddeen Shareef Sahib.



Hazrath Syed Shah Mohammed
Mohammedul Husaini Saheb
Khibla and Saheb Quadeeri

जहाँभी राह नई मुझको मिल गई कोई
वहीं चिराग नया इक जला लिया मैंने

नज़र नज़रमें तेरी शकलही हुषैदा है
नफ़स नफ़समें तेरा जिक्र पा लिया मैंने

के जिस तरहसे बसे गुलके जिस्ममें खुशबू
उसी तरह तुझे दिलमें बसालिया मैंने

वो हुस्न जो के फ़रिश्तो कोभी नसीब नहीं
तेरे खुलूसमें वो हुस्न पा लिया मैंने

पियो पियोके तुम्हे इज़्मे आम देता हूँ
के अपने हाथमें सागर उठा लिया मैंने

के आज बादशाहे कादरीको ऐ रिफ़अत
यक़ीने क़ल्बसे मुर्शिद बना लिया मैंने

खलिफये हज़रते कदीर (रह.)

सय्यद शाह रिफ़अतल् हुसैनी कादरी भोपाली

रैनक्रे महेक्रिल

कैसी रैनक्र है किसकी महेक्रिल है

जरा जरा जो माहे कामिल है

जो गुलामीमें आपकी आया

आदमी बिल् यकीन कामिल है

क्रिक्रे दुनिया न क्रिक्रे उक्का है

साथ साहिब सा पीरे कामिल है

चलती फिरती है ख्यानखा उनकी

डुबती कश्तीचोंको साहिल है

एक नजरे करमका तालिब हूँ

जो नजरे ज़िंदगी का हासिल है

लाख कोशिशसे कुछ नहीं होता

गर करम आपका न शामिल है

अपनी धुमड़ी की लाज रखलेना

येभी दरका तुम्हारे साइल है



Hazrath Quadeer (R.A)



Urs-E-Quadeer

Hazrath Maulana
Rasheed Pasha Sahib,
Hyderabad, Hazrath
Syed Shah Khader
Mohiuddin Sab Qibla
Urs Jageer, Warangal



Hazrath Khaja
Shauque Sahab., Hyd.



Hazrath Rasheed Pasha Sahab, Hazrath Soofi Sabir Ali Sahab,
Hazrath Kaleemullah Husaini, Hyd., Sajjada Nasheen
Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Hazrath Syed Shah Quboolullah Husaini Sajjada Nasheen
Gunj Bagsh, Gulbarga Shareef
Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef

वजहे राहत आपहीकी याद है

मुश्किलोंमें ग़ैबसे इमदाद है

तेरे दमसे घर मेरा आबाद है

बादशाहे कादरी के फ़ैजसे

यक नई दुनिया यहाँ आबाद है

पासबानी अक़लकी लाज़िम सही

इश्क़पर आमा़लकी बुनियाद है

याद अपना फ़ज़्र हमको हो न हो

इन्ना वअदल्लाहे हक्कुन् याद है

साहिब अल्लाह आपके हर काममें

इक नया अस्लूब है इजाद है

मुज़तरिब बेचैन दिलके वास्ते

वजहे राहत आपहीकी याद है

हाँ सना उनकी गुलामीके तुफ़ैल

फ़िक़्रे उक़्बासे बड़ा आजाद है

अब्दुल हाफ़िज़ कादरी अलक़वीरी सना मंडारी, वाज़ी

शाह जीलानीका सागर अबभी हलकटेमें है

इष्क व इफ्ता का समंदर अब भी हलकटेमें है

क्या हयात अफरोज मंजर अब भी हलकटेमें है

कादरी यमनी सनोबर अब भी हलकटेमें है

बागो चिश्ती का गुलेतर अब भी हलकटेमें है

होश बरदमका मुफ्फसिर अब भी हलकटेमें है

कलमये तप्यबका नाशिर अब भी हलकटेमें है

ख्वाजये अजमेर (र.) के फ़ैजान का जामो सुबू

शाहे जीलानी (र.) का सागर अब भी हलकटेमें है

हजरते सय्यद मोहम्मद बादशाहे कादरी (र.)

जल्बये नूरे पयम्बर (र.) अब भी हलकटेमें है

अहेले दिलका हुक्मराँ रुहानियत का ताजदार

इक मुकद्दर का सिकंदर अब भी हलकटेमें है

मर्दे हक आगाह व हक बी मेहरमे असरारे हु

चम्मे रोषन दिल मुनव्वर अब भी हलकटेमें है

जिसकी अजमत की गवाह है देख गुलजारे कदीर

वो सुखनदाँ वो सुखनवर अब भी हलकटेमें है

हजरते ख्वाजा करीमुल्लाह का ख्वाने करम

बाँटनेवाला सखी घर अब भी हलकटेमें है

चिटगुप्पामें डूब कर निकला है कौसर के करीब

वहरे वहेदत का शनावर अब भी हलकटेमें है

कर दिया आफ़ाक में मशहूर हलकटे का नाम

वो भी खुद और उसका घरदार अब भी हलकटेमें है

अहेले दिलका कारवाँ चलता रहे बढ़ता रहे

कारवाँ का आला अफ़सर अब भी हलकटेमें है

अब बड़े साहेब नहीं तो छोटे साहेब ही से मिल

वो तो ब अल्फ़ाजे दिगर अब भी हलकटेमें है

बारहा हैरत का खुल्वा सुनके जिसने दी दुवा

क़द्दाने अहेले मियर अब भी हलकटेमें है

अज़ीदत कैश- अब्दुल ख़ालिक हैरत निजामी

इमाम व ख़तीब जामा मस्जिद बाड़ी जंक्शन



Syed Riyazur Raoof Quadri Raichur,
Syed Mehtaab Ahmed Chishti,
Ajmer, Mufti Khaleel Ahmed Saheb
Jaame Nizamia, Syed. Sadiq
Mohiuddin Saheb Jaame Nizamia



Hazrath Mufti Khaleel Ahmed Sab
Jaam-E- Nizamia



Hazrath Aziz Pasha Husaini,
Halkatta Shareef



Hazrath Khaja Hasan Nizami
Sani Saheb, Sajjada Nasheen,
Mehboob Ilahi Delhi,
Syed Ameen Miyan Chishti,
Ajmeer Shareef



Hazrath Syed Shah,
Hamedudeen Sharfi Saheb
Sajjada Nasheen Tajul Urfa
Sharfi Chaman Hyd.



Shri Baswaraj Saab Balwadgi

Urs-E-Hazrath Syeda Hafeeza
Bi Bi Yamani "Sandal Programme".



Urs-E-Hazrath Syeda Hafeeza Bi Bi
Yamani "Sandal Programme".

Moulana Hyrath Nizami Saheb,
Wadi



कलामे शाहीन

इधरभी एक निगहे नाज़ या कदीरअल्लाह
तइप रहा है दिले मुक्तेला कदीरअल्लाह

मेरे खुलूसो मोहब्बतकी लाज़ रख लेना
नहीं है और कोई आसरा कदीरअल्लाह

वफ़ा परस्त हूँ दीवानये मोहब्बत हूँ
न पूछ क्यों है मेरे लबपे या कदीरअल्लाह

कदम कदमपे हकीकतका राज पाता हूँ
दिलो निगाहमें जबसे हो या कदीरअल्लाह

हज़ार पर्दा करो मुझसे दूर दूर रहो
मगर मैं जान गया तुमको या कदीरअल्लाह

चलेभी जावोगे जो मुझको छोड़कर आका
हर एक साँस पुकारेगी या कदीरअल्लाह

कसम खुदाकी बहुत खुश नसीब हूँ साबिर
हरिमें दिलमें है जल्वानुमा कदीरअल्लाह

रुबाई

दीदये दिलसे दहेकता हुवा शोला देखूँ
सज्दये इश्कमें उभरा हुवा काबा देखूँ

मेरे मौला यही मेराजे मोहब्बत होगी
अपनी हर साँसमें मैं आपका (स्व.) जलवा देखूँ

जाने काबा

बंदगीका देखिये हमको सलीका मिल गया
हाँ मदीनेमें हमें तो जाने काबा मिल गया

गौसे आजम ख्वाजये अजमेर हमनैनो अली
खुवाये किस्मत है अपनी हमको क्या क्या मिल गया

हम तो बस उम्मीद परही जी रहे हैं आपकी
अपने हाथोंमें अताका जबसे कासा मिल गया

मुझसे कमतरपर करम जबसे हुवा सरकारका
मुतमईन दिल हो गया नजरोँको रोज़ा मिल गया

बंदा परवर हम फ़कीरीमेंभी शाही कर गये
मेरे आका आपका जबसेके सदूका मिल गया

महेफ़िले कैसरमें साहिब जल्वा फ़र्मा हैं कदीर
नाज़ करता है मुक़दर पीर ऐसा मिल गया

हाफ़िज़ व कारी ख्वाजा इलिमोदीन शाह कादरी अल्विशती बंदानवाजी,
कैसर कदीरी करीमनगरी, महेबुब नगर



25th Urs-E-Quadeer,
Halkatta Shareef, (Wadi In),
Hazrath Syed Shah Kazim
Pasha Sahab, Hazrath
Mohammed Faisal Ali Shah
Chishty Nizami Sahab, Shri
Somshaikar Swami Sahab,
Chitapur, Hazrath Abdulla
Shah Quadri Sahab



26th Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef



26th
Urs-E-Quadeer Opening
Cermony of Taskeer-E-
Quadeer in Kannada Version



Sahab Quadeeri, Appa Sahab
& Syed Bahauddin Hussain



हर साँस मेरी जाकिरे खैरुलअनाम है
रोशन इसीसे देखिये सुबहे दवाम है

पाया है जिसने कलमये हकको कदीर (क.) से
ये सच है उसपे आतिशे दोजख हराम है

मकबूले वारगाह हुई हर साँस देखिये
जिस साँसमेंभी कलमये हकका कयाम है

हटती नहीं निगाह कभी रुये वारसे
हुस्नो जमाल वाकई माहे तमाम है

नजरोसे पी रहे हैं सभी बादकश यहाँ
फैजे कदीर (क.) अबभी जमाने में आम है

शाहाने वक्तभी यहाँ सरको शुकाये हैं
आना यहाँ संभलके अदब का मुकाम है

कदमोंमें इसको अपने पड़ा रहेने दीजिये
राशिद कदीरी आपका अदना गुलाम है

इब्दाजा शेख मोहम्मद जाबिर शाह कादरी, चिश्ती,
अल्मदबी, राशिद कदीरी, कंजर, बिलाबाबाद

कलाम सैय्यद शाह फ़ज़लुर्रहमान साहब कादरी

(सईद जलाली हैदराबाद)

जब्वये शौक अगर खूबरे तदबीर भी हो
तुम मेरा ख्याब हो और ख्याबकी ताबीर भी हो
दिये नम ये तेरी ख़ाम खयाली होगी
हुस्न रुसबा न हो और इश्क की तशहीर भी हो
क्या सितम है तेरा और हलक़ये जुल्फ़े पेचाँ
दिल गिरफ़्तार न हो और तेरा नख़चीर भी हो
क़ल्बो कुरआँके सिवा है कोई दुनियामें किताब
जिसमें इज्माल हो इज्मालकी तफ़सीर भी हो
कैफ़ आशिफ़ता सरी लाये तो ऐसा लाये
के खताभी न हो आईनये तकसीर भी हो
साकिया लुत्फ़ हो मुझको थो मये आगाही
नशा जिसमें न हो और नशेकी ताबीर भी हो
चोट खाया हुवा होता है वही दिल जिसमें
जुल्मते गमभी हो और हुस्नकी तन्वीर भी हो
मेरे मायूद हो जब निजाके आलम में सईद
नाम भी लखपे हो दिलमें तेरी तस्वीर भी हो

रुबाई

गुलामे कदीर- शेख मोहम्मद शाह कादरी कुरेशी ख़लिका ३९ सी नहूम
मुतवतिन भोपाल

कामिलारा राहनुमा थो गुमरहारा खिज़रे राह
जात पाके क़िबला मन सय्यद मोहम्मद (र.) बादशाह
थक निगाहे लुत्फ़ बहरे करीमुल्लाह बरहाले मन
सदक़ये हसनैन (र.) मेहरे ख़्वाजये आलम पनाह

- गुलाम



Hazrath Shaik Abdulla Shah Quadri
Kallai Kerala and Mehamood Bhai
Quadri Pali Mumbai



Hazrath Khusroo Husiani
Saheb Gulbarga Shareef and
Hazrath Fazalul Matheen
Chishty Saheb Ajmer Shareef



Hazrath Peer Pasha Saheb Yamani,
Raichuri



Urs-E-Quadeer



Moulana Hazrath Syed Shah Taher
Razvi Saheb Jame Nizamiya,
Moulana Syed Shah Rasheed
Pasha Saheb



Poojya Shri Dr. Sharana Baswappa Appa, Peethadipathi, Sharana
Basweshwara Samsthanam Gulbarga
Hazrath Syed Bahauddin Husaini Chandpasha Patel, Halkatta Shareef



Poojya Shri Dr. Sharana Baswappa Appa

कलामे सय्यद अहेमद अली कादरी भीपाली

जिन्न कलमेका मिला इल्म रगो जाँ मुझको
अब तसव्वुरमें यो रखते हैं नुमायाँ मुझको

एक कलमेसे मिला दामने अल्लाह व रसूल
इब्बाजा व गौसअली साहिबे जिशान मुझको

हासिले ज़िस्त है एक उनकी नज़र उनका करम
अब नहीं चाहिये कुछ ऐ गमे दौराँ मुझको

चष्मये क़ैजे कदीरीके ये कतरोंका असर
कतरा खुद दिखता है दूर शहेशाहाँ मुझको

इस कदर लुत्फ बका है रूखे जानासे मुझे
सब समझते हैं फ़कत् उनका गज़लखाँ मुझको

अहेमदे कादरी क्या तुझपे कदीरी है करम
गौसूल आज्रमने किया हाफ़िजे इमाँ मुझको

- बक़लम हज़रत शेख़ मोहम्मदशाह कादरी भीपाल

कलामे साहिब

दिल जिसका मुसफ़फ़ा होता है उस दिलमें हकीकत होती है
वाबस्तये दामनकी तेरे अफ़लाक़पे शोहरत होती है

मरकज़ वजुदे आलमका इस्लामका पहला रुक्न है ये
हर साँसमें एहेले इमोंकी तक्मिले शरियत होती है

नायाकिफ़े हस्ती क्या जाने मेराजे नफ़सकी बात है क्या
दर परदा लिसाने कलबीसे किस तरह इयादत होती है

मक़सूदे तमन्ना तेरी नज़र तफ़सीरे खुदी हो जाती है
हाँ तालिवे जल्वाकी खातिर यूँ वजहे बसीरत होती है

बख़शीशको लुटाता है कोई कलमेका ख़जाना साथ लिये
है वक़्तके अब्धी पाजावो रहेबरकी इनायत होती है

देखा जो सरे महेफ़िल उनको ख़ामोश जवाँ आसूँ थे रवाँ
इस तरहसे आखों आखोंमें तायीदे मोहब्बत होती है

वो जाने बहाराँ साहिबके जिस वक़्त मुक़ाबिल होते हैं
इज़हारे तमन्नाकी खातिर अशआरकी सूरत होती है



Jalsa-E- 50th Year
Takmil-E-Kilafath, Saheb
Quadeeri. At Astana-E-Kareemi,
Chittaguppa Shareef 11-6-2004
Mubarakbath, Hazarath Moulana
Mufti Alil Ahmed Saheb, Shaikul
Jama-E-Nizamiya, Hyderabad





Syed Abuturab Quadeeri and Sri Appa Sahab



26th Urs-E-Quadeer Halkatta Shareef

कलामे कदीर

दुनियाके चमनमें पीर मेरा दीवाना बनाकर छोड़ दिया
 हर गुलमें शजरमें कुदरतका मुझे रंग दिखाकर छोड़ दिया
 बक जाम पिलाकर मस्त किया मेरे होश नहीं हैं मुझमें बजा
 इस बंदे हकीर नाचीजको इक चीज़ बना कर छोड़ दिया
 अल्ताफ व करम मेरे मुशिंदका मैं भुला नहीं मुझे याद है सब
 इरफ़ानके दरियामें मुझको इक गोता लगा कर छोड़ दिया
 मेरे चाहनेवालों कहेदो ज़रा देखो कैसा फ़जल मुशिंदका हुवा
 रूपा में दिखा कर सुरतको मस्ताना बनाकर छोड़ दिया
 आया तू नज़र मुझे मिस्ले कमर परवाना हूँ तेरा अँदिलवर
 हकहक की बातें मुझको सुना दुरदाना बनाकर छोड़ दिया
 नेरंगी तमाशा मुझको दिखा, देखा मैं हर एक शैमें है खुदा
 नाहनो अक़रबकी आयत मुझको पढ़ा मेरे दिलको लुभाकर छोड़ दिया
 सादातकी चादर रंगदिया नहीं रंगमें कोई फ़कं ज़रा
 रंगरेज करीमुल्लाह पीर मेरा रंग देना मिखाकर छोड़ दिया
 अँ सय्यद मोहम्मद जाने कदीर तेरी सुरतमें है भेद छुपा
 दीवाना करीमुल्लाह कादरीने दीवाना बनाकर छोड़ दिया

उर्से कदीर (रह.) हलकट्टा शरीफमें उल्मा व मशायखे उज्जामकी तशरीफआवरी बाइसे इस्तेक्रामत तरीक रही. मुस्तलिफ अवकातमें बुजगानि मिल्लतने अपनी शिराकतसे महेफिलोंको रौनक बरूशा, जिनके आस्माये गिरामी बतौरै यादगार बइजहारे तशकुर तहेरीर हैं.

- तकहुस मआब हजरत सय्यद शाह मोहम्मद मोहम्मदुल हुसैनी साहब किब्ला सज्जादानशीन रोजये बुजर्ग गुलबर्गा शरीफ.
- जानशीन सज्जादानशीन हजरत सय्यदशाह खुसरो हुसैनी साहब किब्ला बारगाहे बंदानवाज (रह.) गुलबर्गा शरीफ.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह असदुल्लाह हुसैनी साहब किब्ला बिरादर सज्जादानशीन रोजये बुजर्ग गुलबर्गा शरीफ.
- मोहतरमुल् मुकाम सय्यद शाह सफीउल्लाह हुसैनी, मुस्तफाबाबा रोजये, बुजर्ग, गुलबर्गा शरीफ. हजरत सय्यद शाह तक्कीउल्ला हुसैनी साहब रोजये बुजर्ग गुलबर्गा शरीफ.
- बुजर्गे नेमत हजरत सय्यद शाह कबूलुल्लाह मोहम्मद मोहम्मदुल हुसैनी साहब किब्ला सज्जादानशीन रोजये गंजबच्छा (रह.) गुलबर्गा शरीफ.
- जानशीन सज्जादानशीन हजरत सय्यद शाह हसन शब्बीर हुसैनी साहब किब्ला रोजये खुर्द गुलबर्गा शरीफ.
- फ़जिलत मआब हजरत सय्यद शाह ख्वाजा हसन सानी निजामी साहब सज्जादानशीन हजरत निजामोद्दीन अवलिया (रह.) देहली.
- बुजर्ग आली क़दर हजरत सय्यद मोहम्मद फ़जलुल मतीन साहब चिरती गरी नशीन बारगाहे गरीबनवाज (रह.) अजमेर शरीफ.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद आफ़ताब अहेमद साहब चिश्ती नियाज़ी गद्दीनशीन अजमेर शरीफ.
- सुफ़ीये दौरै हजरत शाह मोहम्मद ताजोद्दीन जुनैदी साहब किब्ला सज्जादानशीन रोजये शेख़े दक़न (रह.) गुलबर्गा शरीफ.
- बिरादर सज्जादानशीन हजरत शाह मोहम्मद अलीमोद्दीन जुनैदी साहब किब्ला रोजये शेख़ गुलबर्गा शरीफ.



Hazrat Syed Shah Husan Madni Sahab,
Efteqari Sajjada Nasteen Chisti Chaman
Hyderabad, Poojya Shri Appa Sahab
Gulbarga.

On Urs -E- Quadeer Halkatta Shareef



Hzrat Syed Shah Rasheed Khanoomi
sahab, Sajjada Nasheen Khwaja -E-
Khanoom Gawalin, Sahab Qudeeri
Halkatta Shareef





Hazrat Syed Shah Taher Razvi Quadri Saheb, Moulana Mufti Kalil Ahmed Saheb, Moulana Khwaja Shareef Saheb, Hazrath Shah Mohamed Alimuddin junidi Saheb, Rafiba, Jalsai Asmate Auliya, Urs Kareemi Chittaguppa



Hazrat Mufti Kallip Ahmed Saref Saheb Quadeeri
Tameer Khankha .E. Quadeeriya Hyderabad

- मुखलिसे मिल्लत हजरत ख्वाजा राशिद कानोनी साहब किब्ला सन्जादानशीन ख्वाजये कानून (रह.) ग्वालीयर एम.पी.
- महेबुबे मिल्लत हजरत ख्वाजा अहेमद निजामी साहब किब्ला सन्जादानशीन बारगाहे महेबुबे इलाही (रह.) देहली.
- तकहुस मआब हजरत मौलाना सय्यद शाह फरीद पाशा साहब किब्ला (रह.) सन्जादानशीन बारगाहे नदीमुल्ला हुसैनी किशनबाग हैद्राबाद.
- गिरामी कदर हजरत मौलाना सय्यद शाह मोईनोद्दीन हसन मदनी साहब किब्ला सन्जादानशीन बारगाहे हजरते वतन (रह.).
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना सय्यद शाह अकबर निजामोद्दीन हुसैनी साहब सन्जादानशीन हजरत शाह खामोश (रह.) हैद्राबाद.
- मौलाना अल्मोहतरम हजरत सुफ़ी शाह मोहम्मद सुफ़ी साबिरअली साहब किब्ला बारगाहे हजरत शेख जीहाली (रह.) हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मोहम्मद फैसलअली शाह चिरती निजामी साहब सन्जादानशीन बारगाहे युसूफ़ैन (रह.) हैद्राबाद.
- बुजूर्गेमन हजरत मोहम्मद मुजाहिद अलीशाह चिरती निजामी साहब किब्ला बारगाहे युसूफ़ैन (रह.).
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत ख्वाजा हुसैन साहब ट्रस्टी हजरत कादरवली गंज सवाई नागोर शरीफ़.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह अहेमद कलिमुल्लाह हुसैनी साहब सन्जादानशीन हजरत नदीमुल्लाह हुसैनी किशनबाग.
- बहेरुलउलूम हजरत अल्लामा मौलाना सय्यद शाह हबीबुल्ला कादरी अल्मारुफ़ ब रशीद पाशा साहब अमीर जामिया निजामिया.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह अलीमोद्दीन शरफ़ी साहब सन्जादानशीन शरफ़ी चमन हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह हमीदोद्दीन शरफ़ी साहब सन्जादानशीन बारगाहे सय्यद शाह हुसैन (रह.) कन्नूल व ताज़ूल उरफ़ा शरफ़ी चमन हैद्राबाद.

- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह इस्माईल पीर कादरी साहब सज्जादानशीन ताहेर गुलशन करनूल.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह शम्स आलम हुसैनी साहब सज्जादानशीन बारगाहे चंदा हुसैनी गौगी शरीफ.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह जलाल हुसैनी साहब सज्जादानशीन बारगाहे कोल्लमपल्ली.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह कबुल पाशा साहब शुत्तारी जानशीन, हजरत कामिल शुत्तारी.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत अल्लामा मौलाना सय्यद शाह ताहेर रजवी अल्कादरी साहब सदरुशुख जामिया निजामिया.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह हबीबपाशा साहब मखदुमी चिश्ती अल्कादरी बारगाहे मखदुमी हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह काजी आजमअली सुफीसाहब सदर कुलहिंद जमियतुल मशायख हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह शाहबोदीन शुत्तारी साहब सज्जादानशीन हजरत गुजराती शाह औरंगाबाद.
- वाईजे दकन हजरत अल्लामा मुफ्ती अब्दुल जलील साहब मुशिरे उमूर मजहबी निजाम सामन हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत अल्लामा मौलाना मुफ्ती खलील अहेमद साहब शेखुल जामिया, जामिया निजामिया हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह अन्वारुल्लाह हुसैनी साहब इफ्तेखारी नबीरये हजरते वतन (रह.) हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना कारी अब्दुल्लाह कुरेशी साहब अजहरी खतीब मस्जिद हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम मुफ्ती मोहम्मद अजीमोदीन साहब किब्ला जामिया निजामिया.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना ख्वाजा शरीफ साहब शेखुल हदीस जामिया

निजामिया हैद्राबाद.

- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना मुफ्ती सय्यद शाह सादिक मोहियोदीन साहब किब्ला फहीम जामिया निजामिया.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना सय्यद शाह बदरोद्दीन कादरी साहब सदर जमियतुल मशायख अलहिंद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना सय्यद अब्दुल रशीद साहब कामिल निजामिया उस्ताज दारुलउलूम दीनिया बंदानवाज (रह.).
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना हाफिज अब्दुल रऊफ साहब कामिल निजामिया, उस्ताज दारुल उलूम दीनिया बंदानवाज (रह.).
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मौलाना हाफिज मोहम्मद कासम निजामी साहब कामिल निजामिया खतीब मस्जिद मार्केट गुलबर्गा शरीफ.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत अल्लामा मौलाना मोहम्मद हनीफ आजमी साहब शेखुल हदीस दारुल उलूम मोहम्मदिया बम्बई.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यदशाह आजमअली सुफी साहब किब्ला सज्जादानशीन हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत मोहम्मद आजमोदीन सिद्दीकी कदीरी. मोतेमद कुलहिंद जमियतुल मशायख.
- मोहतरमुल् मुकाम शाह रियाजुलरऊफ साहब किबला, नबीरा हजरत सय्यद शाह, नबी मोहियोदीन साहब किब्ला (मद्रास).
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह अमीनोद्दीन कादरी यमनी (पीरपाशा) अंदरूने किला रायचूर.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यदशाह कादर मोहियोदीन कादरी साहब उर्स जागीर वरंगल और आपके साहेबजादाह सय्यद शाह मुस्तफा कमाल पाशा साहब.
- शहेजादये गौसुल आजम हजरत सय्यद शाह काजिमपाशा कादरी, अल्मूसवी, सज्जादानशीन, खानकाये, मूसविया, हैद्राबाद.
- मौलाना हजरत सय्यद शाह आजमपाशा कादरी, अलमुसवी, हैद्राबाद.

- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद शाह जमिलोद्दीन शरफ़ी अल्कादरी, साहेब किल्ला, सज्जादानशीन, शरफ़ी चमन, हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम सय्यद शाह फ़जलुल्लाह कादरी साहेब सज्जादानशीन बारगाहे हजरत मुसा कादरी हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम काजी हजरत सय्यद शाह नुरुलहैदर वली इलाही साहेब किल्ला कादरी, चिश्ती, सज्जादानशीन सिकंदराबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम सय्यद शाह अहेमद पारा वली इलाही साहेब सज्जादानशीन हैद्राबाद.
- मोहतरमुल् मुकाम हजरत सय्यद बहाउद्दीन हुसैनी साहेब निगारौ तकारीबे उर्स कदीर (रह.) हलकड़ा शरीफ़.
- मोहतरमुल् मुकाम अब्दुल ख़ालिक हैरतनिजामी साहेब, नाजिमे मजालिसे उर्स कदीर (रह.) हलकड़ा शरीफ़.

आले नबी का बेशक दरिया यहाँ रवाँ है
चल साथ साथ इसके बाँकेन कारवाँ है
उठबो यकीकी मन्ज़िल वो देख सामने है
हैरतकी बात क्या है साहिब नज़र यहाँ है

26th Urs Quadeer, Halkatta Shareef, Hazrath Moullana Khwaja Shareef Saheb, Shaikul Haddes Jamay Nizamiya, Hazrath Moullana Khazi Syed Shah, Azam Ali Sufi Saheb



Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



Hazrath Mahboob Shah
Sarguro, Chitguppa,
Hazrath Mahmood Bhai
Quadri Paali



26th Urs Quadeer, Halkatta
Shareef, Hazrath Mulla Mufti
Syed Shah Sadiq, Mohiuddin
Saheb Jame Nizamiya Hyd.

25th Urs-E-Quadeer, Halkatta Shareef, Hazrath Moullana Abdula Quraishi Saheb, Hazrath Moullana Syed Shah Jamiluddin Shareef Saheb, Hazrath Moullana Syed Shah Hameddudin Sharfi Saheb, Hyd.





26th Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



26th
Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



26th Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef



Shri Appa Sab, Gulbarga, Shri Vijay
Tipnies Sab, Khapoli



Shri Gururath Swamy Yadgir,
Shri Jagannath Maharaj Inchi Gori,
Shri Munindra Swamy Halkatta





Janab Patak Sahab Vice
President, A.C.C. Ltd., Wadi
& Sahab Quadeeri



याद दाश्त

उबकी यादोंकी आमद आमद है

मेरी टन्हाई एक गहेफिल है

(सना भंडारी)

तजकेरये कदीरको तक्मील करना खादिमके लिये एक इम्तिहानी मोड़ है. चुँके आशिकाने कदीरकी एक तवील फेहरीस्त सामने है. भुला तो किसी कोभी नहीं गया. बकौल ख्वाजा शौक-

खुद फरामोश हूँ मैं दुश्क फरामोश बड़ी

भुलता तुझको तो कहेता तेरी याद आई है

परदोदूर : रहेमानभाई कादरी, ख्वाजाभाई कादरी, मौलअली कादरी, अहेले सिलसिलाके ताबूनसे आस्तानये कदीरी हलकड़ा शरीफके लिये जनरेटरका मुस्तक़ील अहेतोमाम फर्माया, ताके हर वक़्त रोशनीका इतेज़ाम हो. प्रभूदास साहेब दाक्नगिरा, तजकेरये कदीरके मतबुये तसावीर और आस्तानये कदीरीकी दीदाजेब और हसीन व जमील फोटोज़ मौसूफ़की ख़िदमात और फ़नका मुजाहेरा हैं. ख्वाजा मैनोदीन साहब शाहपूर, मोहम्मद महेबूब कादरी शाहपूर, फ़ज़लुल्लाह कादरी मद्रास, नुरुल्लाह कादरी मद्रास, सय्यद मोहम्मद अन्वर कादरी बेंगलोर, मोहम्मद सुल्तान कादरी मद्रास, अमीरजान कादरी बेंगलोर, शरीफ़ कादरी बेंगलोर, इब्राहीम कादरी बेंगलोर, पाशाह कादरी, मोहम्मद युनूस कादरी करनूल, उवैदुल्ला कादरी साहब व बिरादरान अघोनी, अनिस कादरी जइचरला, इस्हाक कादरी महेबुबनगर, अब्दुल मन्नान साहब कादरी घड़ीसाज (हैद्राबाद).

हाजी इस्माईलभाई हैद्राबादीके साथी डी. जे. मनीसेठ साहेब और खपोलीके विजय टिपनीस साहबभी कानिले ज़िक्र हैं, जिन्होंने आस्तानये कदीरीकी मुक़लेसाना ख़िदमात अन्बाम दीं. सय्यद मोहम्मद हुसैनी साहब आस्तानये शामेरी (रह.) कड़पा, शायरे इस्लाम. मद्राह रिसालत अशहर बहेराइचीकी शिरकत महेफ़िले फ़ैज़ाने कदीर बाईसे मुसरत है.

हज़रते कदीरकी सवानेह पर अहेले अक़ीदतने अपना अपना हक़ अया कर दिया है. जिनमें सना भंडारीने मन्ज़ूमे सनाये कदीर और ज़नाब नसीम मन्नान कादरी एडिटर अन्वारे क़मर शोलापूरने अन्वारे कदीर लिखा है. मोहतरम अशफ़ाक़ मशहदी भोपालीने ज़न्ब व सुलूकमें आस्तानये कदीरीकी मरकज़ी खुसूसियात का बहोत बेहतर अन्दाज़में जायज़ा लिया है.

उसँ कदीर का मुशायरा

हजरते कदीर (रह.) की इल्मी व अदबी खिदमातको खिराजे अक़ीदत पेश करनेके लिये उसँ कदीरके पहेलेही साल 1980 इ. से तरही व मनकबती मुशायराका अहेतेमाम होता आ रहा है, जिसके लिये अहेकरके दिये हुये मिसरये तरहा पर मशहूर व मारुफ़ शोअराने तबा आजमाई की. बहमदअल्लाह 21 वा उसँ व मुशायरा रवौ है. उन मुशायरोंको क़बुले आम हासिल हो रहा है. हैद्राबाद रकनके अलावा कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात और उत्तर प्रदेशके मनुअ शोअराये कराम शिरकत करते हैं. मुशायरा उसँ कदीरकी पहेली तरेह ता 21 वीं तरेहका ज़िफ़ बतौरे याददाश्त दर्ज ज़ेल है.

- 1) अल्लाहसे मिलाती है निस्बत कदीरकी.
- 2) शोहरा है बहरोबरमें पयामें कदीर का.
- 3) कितने दिलोके आजभी हैं राहबर कदीर (रह.).
- 4) निगाहे इफ़का सागर कदीरी आस्ताना है.
- 5) ऐ दिल कदम कदम पे अताये कदीर (रह.) है.
- 6) नज़रोमें बस गया है सरापा कदीर (रह.) का.
- 7) हम दामने कदीर (रह.) के साये में आ गये.
- 8) बकसौ रही है सब्बे इनायत कदीर (रह.) की.
- 9) फ़ैजे कदीर (रह.) अबभी ज़मानेमें आम है.
- 10) कदीरी फ़ैज़ (रह.) का दरिया रवौ है.
- 11) बज्मे कदीर (रह.) अहेले वफ़ाने सजाई है.
- 12) मजहरे अहेले वफ़ा है बारवौ उसँ कदीर (रह.).
- 13) आईनादारो वफ़ा है आज फ़ैजाने कदीर (रह.).
- 14) कितना वफ़ा शमार है गुलशन कदीर (रह.) का.
- 15) वजहे राहत आपहीकी याद है.
- 16) फ़ैजे निस्बतहीसे है शादाब गुलज़ारे कदीर (रह.).
- 17) हो गई तस्कीने जौ यादे कदीर (रह.).
- 18) इस तरहसेभी आप (रह.) के जल्वे अर्यौ हुये.
- 19) हमें हर दम सहारा आप (रह.) का है.
- 20) इक नज़र ज़िंदगीका हासिल है.
- 21) तजकैरा आप (रह.)हीका होता है.
- 22)
- 23)
- 24)
- 25) दिल झुका जाता है अपना कुये जानौकी तरफ़.



26th Urs-E-Quadeer
Halkatta Shareef Guru
Samellana
"Pyam-E-Mohabbat"



26th Urs-E-Quadeer, Halkatta
Shareef, Guru Sammelana,
"Pyam-E-Mohabbat"



26th Urs-E-Quadeer, Shri Channa
Maleshwara Tyagi Swami, Itka-
Chittguppa



1983 Tameer, Masjeed Asthana-
E-Quadeeri, Halkatta Shareef

Masjeed-E-Haffiza
Balwadgi, 2004



Opening Ceremony, Masjeed-E-Haffiza, Balwadgi, Hazrath Alha Mohmed Ali Saheb, Wadi, Hazrath Hyarat Nizami Saheb, Imam Masjid, Wadi, Poojya Shri Munindra Swami Halkatta, Poojya Shri Gangadhar Sivachari Swami Abetankur Yadgir, Poojya Shri Somashekar Swami, Chitapur, Poojya Shri Gurunath Swami, Ekdandi Math, Yadgir, Poojya Shri Sachidanand Ramdas Bharti, Chetana Math, Haridwar, Shri Patel Saheb, Balwadgi, Syed Ibrahim Shah Quadri, Halkatta Shareef

तज़केरये क़दीर

बंदा दस्ते तलबसे लेता है

मेरा मौला सभीको देता है

फ़ैसले साफ़ साफ़ होते हैं

काटता है वही जो बोता है

सुबहा उसके नसीब में है कहां

देखो जिसका ज़मीर सोता है

है ये उसें क़दीरका मन्ज़र

तज़केरा आपहीका होता है

हमको इनकी गुलामी हासिल है

दरिया क़तरेमें जो समोता है

अपने करनेसे कुछ नहीं होता

काम उनके करमसे होता है

जिसको दुनिया क़दीर कहेती है

बुतूराब आपही का पोता है

तालीबे दुवा

तूराब क़दीरी

कलामे कदीर

नज़रमें रहेनुमाँ है, मैं नहीं हूँ
मेरे दिलमें खुदा है, मैं नहीं हूँ

अक़ामतमें रुकू सज्दे वो जलसे
लिबासे जाहेरा है, मैं नहीं हूँ

मिटकर आपको देखा, तो पाया
वही वो चूँचरा है, मैं नहीं हूँ

है नूरे अहेमदी ही दोनों जगमें
अरब पे जग फ़िदा है, मैं नहीं हूँ

अनलू हक़की सदा दिलने सुनाया
अजब कुछ इन्तेहा है, मैं नहीं हूँ

बरहेमन दौरमें जा देखते हैं
मैं देखा जावजा है, मैं नहीं हूँ

कदीर हैं दस्तगीर सरपे हमेशा
वही तो पेशवा है, मैं नहीं हूँ

Under the auspicious of His Holiness

Hazrath Syed Shah Mohammed Mohammadul Hussaini

Sajadah Nashreen Bargah-E-Bandanawaz, Gulbarga Sharief (K.S.)

Hazrath Syed Shah Kabukilla Mohmed Mohmmadul Husaini Sahab, Sajadah Nashreen, Roza-E-Ganj Balash

You are cordially invited to attend



27th URS-E-QUADEER



Hazrath Khwaja Syed Mohammed Badshah Quadri,
Chishty, Yamani, Qadiri: (R.A.), Halkatta Sharief.

SANDAL: 23.2.2005

WEDNESDAY

CHIRAGHAN: 24.2.2005

THURSDAY

On Thursday, 24th February, 2005, at 3.00 p.m.

CHIEF GUESTS

His Holiness Poojya Shri Dr. Sharana Baswappa Appa

6th Mahadasha Panchadhipati, Sharana Baswappa Sanasthana, Gulbarga

and **Shri Hanindra Swamy**, Hermit Halkatta and other Panchadipatis

The following chief guests will also grace this holy occasion

Their Holiness Poojya

Shri Telesha Bhaskar Swami, Sri Siddhanta Mutt, Halkatta
Shri Nagappa Swami, Sri Jagappa Swami,
Mangappa Mutt, Halkatta
Shri Ganappa Swami, Vihara Eka Dandag Mutt, Yagor
Shri Jona Shikara Swami, Kankalwara Sanasthan Mutt, Chitapur
Shri Siddhanta Dewana, Hary Mutt - Dargi Mutt
Shri Chandra Gurda Siva Charay - Kargali

Their Holiness Poojya

Shri Gangadhar Swamiji Swami, Atmaram Mutt, Near Tappa
Shri Mani Prasad Sonape, Babha Lingeshwar Mutt, Raktul
Shri Jagannath Monang, Indri Ch. Mutt, Indri Tq., Bapur Dol
Shri Gangadhar Dewana, Karkia, Malach Mutt
Shri Chama Malleshwar Tyagi Swami, Sri, Near Chitappa
Shri Sachchidanand Ramdas Swami
Chitappa Mutt, Halkatta

AT 9.00 P.M. MEHFIL-E-SAMA

UNDER THE GUIDANCE OF

Hazrath Syed Bahauddin Hussaini Chaudhary Panch. Halkatta Sharief

Invited: Janasheen-E-Hazrath Quadri

Khwaja Syed Ibrahim Shah Quadri, Chishty, Yamani
Banda Nawaz, Sahas Quadri - Samel, Zada Syed Abuturab Shah
Quadri Chishty, Yamani, Turab Quadri, Ashraf-E-Quadri, Halkatta Sharief
Near Wadi Junction, Dist. Gulbarga (K.S.) Tel: 68476-202031

1995 Ziyarat Tour of Baghdad Shareef, Iraq by Hazrath Sahib
Quadeeri and group



Dargha Hazrath
Musa Kazim R.A.



Karbala



Barghahe Hazrath Ghouse Azam
Dasthagir (RA)
Baghdad Shareef



Masjid-E-Baghdad Shareef



Barghahe Hadrat Juned Bogdadi R.A. Hadrat Siresaqi



Roza-E-Hazarath Ali Karamallah
(R.A.) Najaf-E-Ashruf



Baghdad Shareef Hazrath Ghouse
Azam Dasthagir (RA) Jally
Mubarak



Bargah-E-Hazrath Abusayeed
Mubarak Ul-Maqzhooni (RA)



Baghdad Shareef Hazrath Ghouse
Azam Dasthagir (RA)
Jally Mubarak
Ziyarat, Turab Quadeeri



Bargah-E-Hazrath
Moosa Kazim (RA)





Bargah-E-Hazrath Ebraheem
Adham (R.A.)



Naqeeb-UL-Ashraaf Peer Syed
Yousuf Geelani
Sajjada-Nasheen Baghdad Shareef
Naqeeb-UL-Ashraaf Peer Syed
Zafar Geelani
Sajjada-Nasheen Baghdad Shareef



Naqeeb-UL-Ashraaf Peer Syed
Yousuf Geelani
Sajjada-Nasheen Baghdad Shareef
Naqeeb-UL-Ashraaf Peer Syed
Zafar Geelani
Sajjada-Nasheen Baghdad Shareef
& Saheb Quadeeri, Halkatta Shareef



Mazar Hazrat Hasanbasri R.A.
Bagdadsheef



Bargaha Hazrat Ahmed Kabir Raffai
(R.A.) Raibaiya (IRAQ)



Hazri Mazar-E-Shareef Hazrat Abusaid Muh



Karbala



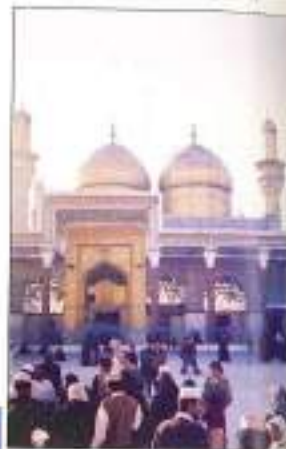
Baghdad Shareef Hazrath
Ghouse Azam Dasthagir
(RA) Jally Mubarak



Babe Baghdad-E-Shareef



Hazrath Syed Ahmed
Kabeer Rafai (RA)



विसाले कदीर

कहा तेरा मोहरमने के है कोई फकीर अल्लाह
सदाए अव्वली आईके है हाजिर कदीर अल्लाह

बहमद अल्लाह इनका यौमे पैदायश भी जुमा है
और इसपर फजल देखो हज्जे अकबरका भी मौका है
गरज अल्लाहही जाने अदा अल्लाहवालोंकी
इसी दिन तरके दुनियाभी किया क्या शाने उकबा है

मकामे इफ्कका जोभी अलमबरदार होता है
वही मर्दे मुजाहिद काफ़ेला सालार होता है

सभोने कलमये तथ्यवको फज्जे अव्वली समझा
इसे मेयारे बहेदत जीनते अशे बरी समझा
बजा समझा इसे जिसने रगे जाँ के करी समझा
बिनाए दीं कहा बाजोने बुनियादे यकी समझा

कदीर अल्लाह (फ.) में लेकिन ये बरफ़े खास पाया है
के कलेमा गो को इस दुरवेशने मोमिन बनाया है

जहाँ वो जायेगा ईमान अपने साथ पायेगा
जहाँ तक जायेगा इफ़्ताही इफ़्ताही पायेगा
हो खाली हाथ तो कुरआन इसके हाथ आयेगा
कसम अल्लाहकी कलेमा जहन्नुम में न जायेगा

कदीर अल्लाहने कलमेका जो इफ़्ताही पाया है
रसूलुल्लाह (स.) का सदका करीम अल्लाहका साया है

कहाँ तक कलबको मसरूफ़े इफ़्ताही कर दिया आख़र
के हर हर साँसपे कलमेको चस्पाँ कर दिया आख़र
मार्ज आरामे जाँको नज़रे ईमाँ कर दिया आख़र
के साबिर अपना क़ौलो फ़ैल यकसाँ कर दिया आख़र

फ़क़त तल्कीने ला करते थे लो तामीलभी कर दी
कदीर अल्लाह (स.) ने आख़र कार अपनी भी नफ़ी कर दी

मन्ज़ूम शिजरये मुबारिका, क्रादरिया, आलिया, खुलफ़ाइया

हो अता सैय्यद मोहम्मद बादशाहका वास्ता
सालिके शाहे करीमुल्लाह शाहका वास्ता

क्रादरी बज़्मे कदीरी शाद हो आबाद हो
अब्दे क्रादिर सैय्यदे कुल अवलियाका वास्ता

हज़रते चन्दा हुसैनीका करम शामिल रहे
सदरे दीने वाकिफ़े राजेवफ़ा का वास्ता

शाहे अब्दे क्रादरे ज़ीशानकी हिम्मत रहे
हो उमर मौजूद शाहे हक़ रसाका वास्ता

लुफ़्फ़ हो इफ़्ताही अलीशाह क्रादरीका दमबदम
हज़रते जाफ़रअली शाह साकियाका वास्ता

ख़्वाजाये सैय्यद हमन मौदूदी शाहका हो करम
हज़रते अकबरअली मौदूदी शाहका वास्ता

जो के हैं सैय्यद मोहम्मद मीर बहेली शाहे दीं
और अमरुल्लाह शाहे बा वफ़ाका वास्ता

शाहाबादी शाह बहाउद्दीन शाहे क्रादरी
शाहे दीने शेख़ नज़्मुल हक़नुमाका वास्ता

निस्वते अब्दुल अज़ीज़ शाहे शकरपाराका फ़ैज़
और बहाउद्दीन शाह शुत्तारियाका वास्ता

जो हैं तानुल् आरेफ़ीन रज्जाके दीं शाहे जमाल
ग़ीसुल् आजम शाहे अब्दे कादराका वास्ता

बू सईदे आरेफ़ी जो साकिने मखज़ूम हैं
बू हसन ख्वाजा अली करपी पियाका वास्ता

युसूफ़े तरतूसीकी मिदहतमें दिन गुज़रें मेरे
अब्दे वाहेद बिन तमीमी साकियाका वास्ता

या इलाही बू बकर शिब्लीसा ज़ौके बन्दगी
दे अबुल कासिम जुन्नैदे हक़ रसाका वास्ता

आशिकोंमें बू हसन ख्वाजा सिरि सक्तीके रख
हज़रते मारुफ़े करखी (क.) की अदाका वास्ता

सैय्यदे सादात इमामे दीनेहक़ रज्जआ अली (क.)
मूसा काज़िम (क.) से इमामे बेरियाका वास्ता

जाफ़रे सादिक के सद्केमें इलाही बख़्श दे
हों इमामे बाक़रे (क.) सिद्को सफ़ाका वास्ता

ज़ीनते दीं शाह ज़ैनुल आबेदी इब्ने हुसैन (क.)
सैय्यदुशोहदा शहीदे करखला (क.) का वास्ता

नूरे चम्मे फ़ातिमा (क.) बानी हसन इब्ने अली (क.)
हों अलीयुल् मुरतुज़ा (क.) शेरे ख़ुदाका वास्ता

या इलाही बाख़्श दे इसियाँ हमारे बख़्श दे
हादिये बरहक़ मोहम्मद मुस्ताफ़ा (क.) का वास्ता

हाज़िरे दरबार हैं साहेब कदीरी बू तुराब
हो करम हरदम शहे, अहेले सफ़ा का वास्ता

सलामे अमीन

अमीने वारिसे फ़ज़लो अता, सलामुन् अलैक
दिले ग़रीबके हाज़त रवा सलामुन् अलैक

मक़ामे कुर्बके हक़आशना सलामुन् अलैक
हबीब जिसको कहा ख़ुद ख़ुदा सलामुन् अलैक

है जिनके नामसे अशें बरीं भी ताबिन्दा
उन्हींके नूरसे सब कुछ बना सलामुन् अलैक

क़लमभी शक़ हुवा लिखकर मोहम्मदे अरबी
वो मर्तबा है बराउल्बरा सलामुन् अलैक

के जिसपे रोज़ मलायक़ दरुद पड़ते हैं
मोहम्मद आपपे दो जग़ फ़िदा सलामुन् अलैक

अलीका वास्ता हसनैनके लड़कपनका
अता हो सदक़-ए-ग़ीसुलबरा सलामुन् अलैक

दयारे पाकमें साहेबकी इल्तेजा हो क़बूल
हमें अता हो करम आपका सलामुन् अलैक

उर्स कदीर हलकहा शरीफमें कौमी यकजहेती और पयामें मोहब्बत

बिला तफरीके रंगो वू जहाँ सब एक हैं साबिर
वो पैखाना है मेरे साक़ीये अमनो मोहब्बत का

निगाहे इफ़क का सागर कदीरी आस्ताना है
ये हलकहा नहीं घर घर कदीरी आस्ताना है

हर रंगमें इज़हार है गुलज़ारे कदीरी
हर सिम्त ज़ियावार है गुलज़ारे कदीरी

विसाले हज़रते कदीर (रह.) हुवे 28 साल गुज़रे, 26 वॉ उर्स शरीफ़ मनाया
गा, 27 वॉ उर्स कदीर 2005 में हिंदी तजकेरये कदीर आपके हाथोंमें है.

कलसे जो चला आज रहा कलभी रहेगा
पैगामे मोहब्बत है हर इक दीरमें कायम

उसके मौक़येपर बड़े एहतेमामके साथ जलसये कौमी यकजहेती पयामें
मोहब्बत मनाया जाता है. गुलबर्गा ज़िलाके शरण बसवेश्वर संस्थानम के
पिठाधिपती पूज्य श्री डॉक्टर शरण बसणा अप्पासाहब पंधरा सालसे ज़ायद अर्सा
हुवा हलकहा शरीफ़ तशरीफ़ लाते हैं. अपने अनमोल ख़ियालात दर्से मोहब्बतके
ज़रिये लाखों दिलों तक पहुँचाते हैं. इसतरहा मुस्तलिफ़ मनाविर के पेशवा
पूज्य श्री. मुनेंद्रस्वामी हिरेमठ, हलकहा
पूज्य श्री. दुर्गेद्रस्वामी शिवचारी स्वामी, कोरी सिधेश्वरामठ, नालवार
पूज्य श्री. हंपैया स्वामी, नागपय्या स्वामी, मौनपय्या मठ अल्लोळी
पूज्य श्री. गंगाधर शिवाचारी स्वामी, अबेतुमकूर मठ, नियर यादगीर
पूज्य श्री. मुनीप्रसाद स्वरूप स्वामी, सिद्धलिंगेश्वर मठ, राऊर
पूज्य श्री. सिद्धेश्वर देवरू, हरिमठ, दिगाई
पूज्य श्री. गंगाधर देवरू, मलखेड़ मठ

पूज्य श्री. जगन्नाथ महाराज, ईचगिरी मठ, इंडी बिजापूर
पूज्य श्री. गुरुनाथ स्वामी, विश्वकर्मा एक दंडगीमठ, यादगीर
पूज्य श्री. सोमशेखर स्वामी, कमलेश्वर मठ, पितापूर
पूज्य श्री. चण्णमलेश्वर त्यागी स्वामी, इटका मठ, नियर चिटगुप्पा.

और दिग़र स्वामी साहेबान हलकहा तशरीफ़ लाकर अपनी मोहब्बतसे
गुलज़ारे कदीरको ताज़गी बरसते हैं. आस्तानये कदीरीके आनेवाले ज़ायरीन को
सहुलत देने ए.सी.सी. सिमेंट कंपनी वाड़ी के आफ़सरानने पुख़्तुलूस ख़िदमत
अन्जाम दीं. जनाब शेटी साहब, जनाब पाईसाहब, जनाब देवेश्वर साहब,
जनाब अरविंद पाठक साहब, जनाब सायन साहब और दिग़र इसीतरहा
मुस्तलिफ़ समाजी हलकोंसे ताल्लुक़ रखनेवाले हर एहेले कदरने ख़िदमत का
अपना अपना हक़ अदा किया है. जिसके लिये हम तमाम सिलसिलये कदीरीया
ममनून व मशकूर हैं.

उनकी निगाहे फ़जसे रोज़न ज़मीर है
हर इक जुवाँपे देखिये ज़िक़रे कदीर है

(साहिब कदीरी)

27th
URS

وفا و غافل
توبہ و توبہ
شہداء و شہداء
سید و سید
مادر و مادر

عرسِ قدیر

۲۷^{وا}

چشم و بین
توبہ و توبہ
شہداء و شہداء
سید و سید
مادر و مادر

۱۲^م جلسہ قراءت و نعت

چراغ

۱۳^م

24th
Feb. 2005
Thursday



۱۳^م

23rd
Feb. 2005
Wednesday

قدیر

حضرت خواجہ سید بابا شافعی حنفی

کریم

14th
MOHARAM
CHIRAGAN
جلسہ قراءت و نعت
۱۴^م محرم الحرام
محفل سماع

ملک شریف
نزد و ازی و کشش طبع کبر و شریف کرنگ
شوک و شوق و غایت و غایت

13th
MOHARAM
Juloos
SANDAL
MUBARAK
جلسہ قراءت و نعت
۱۳^م محرم الحرام

URS-E-QADEER
HALKATTA SHAREEF, NEAR WADI (JN.), GULBARGA

صاحب و صاحب
شراب و شراب

